॥ विश्वं ज्ञाने प्रतिष्ठितम् ॥

MANGALAYATAN
UNIVERSITY

Learn Today to Lead Tomorrow

Knowledge Organisation Catalouging (Practice)

BLO-1105

Edited By

Dr. Deepmala

DIRECTORATE OF DISTANCE AND ONLINE EDUCATION

MANGALAYATAN UNIVERSITY

(B.LIB.—202)

Knowledge Organization : Cataloguing (Practice)

Syllabus

Unit 1: Cataloguing of Works of Single Authorship, Shared Authorship, Pseudonyms, Mixed Responsibilities

Unit 2 : Cataloguing of Editorial Works, Composite Works, Multi-volume Works

Unit 3 : Cataloguing of Serial Publications, Uniform Titles

Unit 4 : Cataloguing of Works of Corporate Authorship

CONTENT

1. कैटलॉगिंग में वर्तमान रुझान
(Current Trends in Cataloguing) ...05

2. विभिन्न क्षेत्रों में सूचीकरण के कार्य
(Work of Cataloguing in Different Areas) ...83

3. सूचीकरण के नियम
(Rules of Cataloguing) ...104

4. कॉरपोरेट लेखत्व के निर्माण की कैटलॉगिंग
(Cataloguing of Works of Corporate Authorship) ...112

UNIT 01

नोट-

कैटलॉगिंग में वर्तमान रुझान
Current Trends in Cataloguing

प्रस्तावना
(Introduction)

इस अध्याय में हम कार्यात्मक सूचीकरण का अध्ययन करेंगे और जानेंगे कि यह क्या होती हैं और किस प्रकार सूचीकरण में सहायक होती हैं। इसके साथ ही हम एकल व्यक्तिगत लेखक का भी अध्ययन करेंगे। इसके अलावा हम सह व्यक्तिगत लेखकत्व का भी अध्ययन करेंगे। इसके साथ ही हम छद्मनाम का भी अध्ययन करेंगे।

क्रियात्मक सूचीकरण से तात्पर्य
(Meaning of Practical Cataloguing)

क्रियात्मक सूचीकरण से मुख्य तात्पर्य है सूची की विभिन्न प्रविष्टियों का निर्माण। वैसे इसके अन्तर्गत निम्नलिखित प्रक्रियाएँ आती हैं–

1. सूची अनुरक्षण (Maintenance) करना।
2. संदर्शिकाओं (Guides) का निर्माण करना।
3. प्रविष्टियों का विन्यसन करना।
4. प्रविष्टियों की जाँच करना।
5. सूचीकरण स्रोतों से जानकारी प्राप्त करना।
6. जिस ग्रन्थ का सूचीकरण किया जा रहा है उसका गहराई से अध्ययन करना।

सूचीकरण के सूचना स्रोत Sources of Cataloguing

सूचीकरण के लिए सूचना का मुख्य स्रोत वह समस्त ग्रन्थ या प्रलेख होता है जिसका सूचीकरण किया जाता है। रंगनाथन ने इस प्रसंग में एक उपसूत्र का प्रतिपादन भी किया है जिसका नाम हमने निर्धार्यता का उपसूत्र (Canon of Asceriainability) रखा है। इस उपसूत्र के अनुसार हमने किसी भी प्रविष्टि में जो सूचना अंकित की जाती है वह आवश्यक रूप से अभिनिश्चित होती है। सूचीकरण में निर्धार्यता विशेष रूप से मुख्य पृष्ठ तथा उसके आस–पास के पृष्ठों (Overflow Pages) तक ही सीमित बनी रहती है।

नोट-

दूसरे शब्दों में सूचीकरण के सूचना के स्रोत इस प्रकार हैं—

1. ग्रन्थसूची (Bibiography)।
2. अनुक्रमणिका (Index)।
3. परिशिष्ट (Appendix)।
4. सतत आख्या (Running title)।
5. मूल पाठ (Text)।
6. विषय प्रवेश (Introduction)।
7. विषय सूची (Contents)।
8. प्रस्तावना (Preface)।
9. प्राक्कथन (Foreword)।
10. समर्पण पृष्ठ (Dedication Page)।
11. संक्षिप्त मुखपृष्ठ (Half title page) ग्रंथ माला (Series) सम्बन्धी सूचना प्राप्त करने का प्रामाणिक स्रोत माना जाता है।
12. ग्रन्थ की जिल्द और पीठिका (Spine)।
13. ग्रंथ का आवरण (Cover)।
14. ग्रन्थ का मुख्य पृष्ठ (title page) सूचीकरण सूचना का प्रमुख स्रोत है जिसके दो भाग होते हैं—मुख्यपृष्ठ का अग्र भाग (Recto) और उसका पश्च भाग (Verso)। सूचीकरण के लिए अधिकांश सूचना इसी स्रोत से ली जाती है। इसके अतिरिक्त ग्रंथ के निम्नलिखित भागों से भी आवश्यकता के अनुसार सूचना प्राप्त करते हैं।

सूची पत्रक की संरचना Structure of Catalouge Card

आजकल अधिकतर ग्रंथालयों में सूची का निर्माण पत्रक स्वरूप में किया जाता है। पत्रक का आकार प्रकार और माप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निश्चित है। इसकी लम्बाई 5" (12.5 से.मी.) और चौड़ाई 3 " (7.5 से.मी.) होती है।

1. **छिद्र** (Hole)—पत्रक में नीचे की ओर मध्य में 1 से.मी. ऊपर एक छेद बना होता है। दराज में पत्रकों को स्थिर रखने के लिए एक छड़ का उपयोग करते हैं जो इन छिद्रों में से होकर गुजरती है।
2. **द्वितीय शीर्ष** (Second Vertical)—प्रथम शीर्ष से 1.2.5 से.मी. अथवा चार अक्षरों की दूरी पर स्थिति द्वितीय खड़ी रेखा से द्वितीय शीर्ष कहा जाता है। अग्रानुच्छेद और परिग्रहण संख्या अनुच्छेद के अतिरिक्त अन्य समस्त अनुच्छेद इसी रेखा से शुरू होते हैं।
3. **प्रथम शीर्ष** (First Vertical)—पत्रक पर प्रथम खड़ी रेखा को प्रथम शीर्ष कहा जाता है। यह भी लगभग पत्रक के बायें किनारे से 2.5 सेमी अथवा आठ अक्षरों की दूरी पर होती है। प्रत्येक प्रविष्टि का अग्रानुच्छेद इसी रेखा से शुरू होता है। इसीलिए समस्त प्रविष्टियों के सभी अनुच्छेद की निरन्तरता इसी रेखा से होती है।
4. **अग्र रेखा** (Leading Line)—पत्रक पर सबसे पहले आड़ी रेखा होती है। सामान्यत: यह रेखा पत्रक के ऊपरी सिरे से 2.5 से.मी की दूरी पर होती है। इस रेखा पर प्रत्येक प्रविष्टि का अग्रानुच्छेद अंकित किया जाता है और इससे ऊपर कुछ भी अंकित नहीं किया जाता है।

नोट-

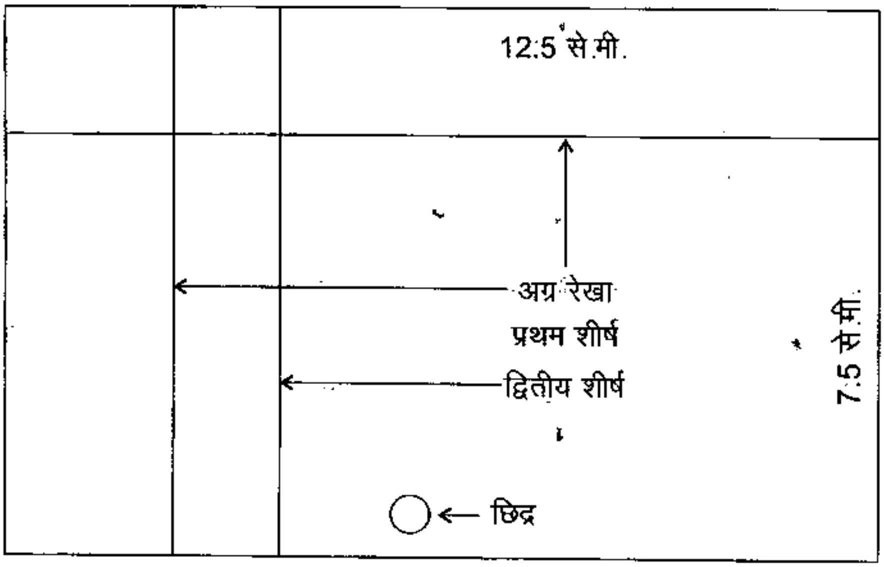

ग्रन्थालय हस्तलिपि Library Hand

सूची पत्रक जितने स्वच्छ आकर्षक और सुस्पष्ट हो उतने ही अच्छे लगते हैं। ग्रन्थालय हस्तलिपि से अभिप्राय है सभी अक्षर, अंक और चिन्ह सुस्पष्ट, सीधे, साफ और एक दूसरे से अलग–अलग होने चाहिए। जितना संभव हो रोमन लिपि में मुद्रण में उपयोग किये जाने वाले बड़े और छोटे वर्णों (Alphabets) का उपयुग किया जाता है। ग्रन्थालय हस्तलिपि का नमूना नीचे दिया गया है।

A B C D E F G H I J

K L M N O P Q R S

T U V W X Y Z

a b c d e f g h i j k l m n o p

q r s t u v w x y z

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

नोट-

विराम चिन्हों आदि का उपयोग–

1. शब्द के संक्षिप्तिकरण (Abbreviation) की स्थिति में डॉट (.) लगाने की परिपाटी को सीसीसी के अनुसार त्याग दिया जाता है।
2. विराम चिन्हों आदि का उपयोग व्याकरण के सामान्य नियमों के अनुसार होता है जब तक की संहिता (Code) कोई विशिष्ट विशेष न दिया गया हो।

वर्गीकृत सूची से तात्पर्य Meaning of Classified Catalogue

रंगानाथन के अनुसार वर्गीकृत सूची से अभिप्राय ऐसी सूची से है जिसमें कुछ प्रविष्टियाँ संख्या (Number) प्रविष्टियाँ होती हैं और कुछ प्रविष्टियाँ शब्द (Word) प्रविष्टियाँ होती हैं।

इस प्रकार वर्गीकृत सूची एक द्विभागीय सूची होती है। इसके दो भाग इस प्रकार हैं–

1. अनुवर्ण भाग (Alphabetical part)
2. वर्गीकृत भाग (Classified part)

प्रथम भाग अर्थात् वर्गीकृत भाग मुख्य भाग होता है और इसमें प्रविष्टियाँ वर्गीकृत क्रम (Classified order) से विन्यासित की जाती है। द्वितीय भाग इसके पूरक के रूप में कार्य करता है जिसको अनुक्रमणिक (Index) भी कहते हैं। इसमें प्रविष्टियाँ अनुवर्ण क्रम (Alphabetical order) में विन्यसित रहती हैं। इसका उपयोग हम मुख्य भाग से वांछित सूचना प्राप्त करने के लिए करते हैं।

ए.ए.सी.आर.–2 का परिचय Introduction to AACR-2

1988 में प्रकाशित ए.ए.सी.आर.–2 संशोधित का निर्माण छह संस्थाओं–अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन, ऑस्ट्रेलियन कमेटी ऑन केटालॉगिंग, ब्रिटिश लाइब्रेरी, केनेडियन कमेटी ऑफ केटालॉगिंग, लाइब्रेरी एसोसिऐशन एवं लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस की ज्वॉइंट स्टीयरिंग कमेटी फॉर रिविजन ऑफ ए.ए.सी.आर. द्वारा किया गया एवं इसका सम्पादन माइकेल गोरमेन एवं पॉल डब्ल्यू. विन्क्लर द्वारा किया गया है।

ए.ए.सी.आर.–2 संशोधित की संरचना Structure of AACR-2R

यह सूची संहिता दो भागों में विभक्त है। भाग 1 विवरण (Description) निम्नलिखित 13 अध्यायों में विभक्त है जिनमें विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री के विवरणात्मक सूचीकरण हेतु नियमों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इस भाग के सभी नियम अन्तर्राष्ट्रीय मानक ग्रन्थपरक विवरण–सामान्य (ISBD-General) पर आधारित हैं–

अध्याय 1 विवरण के सामान्य नियम (General Rules of Description)
अध्याय 2 ग्रन्थ, पुस्तिकायें एवं मुद्रित पन्ने (Books, Pamphlets and Printed sheets)
अध्याय 3 मानचित्र सम्बन्धी सामग्री (Cartographic Materials)
अध्याय 4 पाण्डुलिपियाँ (पाण्डुलिपि संग्रह सहित)
Manuscripts (Including Manuscript Collections)
अध्याय 5 संगीत (Music)
अध्याय 6 ध्वनि अभिलेख (Sound Recordings)
अध्याय 7 मोशन चलचित्र एवं वीडियो रिकॉर्डिंग (Motion and Video Recordings)
अध्याय 8 चित्रीय सामग्री (Graphic Materials)

नोट-

अध्याय 9 कम्प्यूटर फाइल्स (Computer Files)
अध्याय 10 त्रिदशीय शिल्प तथ्य (Three Dimensions Artefacts Relia)
अध्याय 11 सूक्ष्मरूप सामग्री (Microforms)
अध्याय 12 क्रमिक (Serials)
अध्याय 13 विश्लेषण (Analysis)

भाग 2 : शीर्षक, एकरूप आख्यायें एवं निर्देश (Headings, Uniform Titles and References) पुनः छह अध्यायों में विभक्त है जिनमें सूची के उपयोगकर्ताओं हेतु शीर्षक वरण एवं विभिन्न खोज बिन्दुओं (Access points) के निर्धारण के निर्माण के नियम दिये गये हैं–

अध्याय 21 खोज बिन्दुओं का चयन (Choice of Access Points)
अध्याय 22 व्यक्तियों हेतु शीर्षक (Headings for Persons)
अध्याय 23 भौगोलिक नाम (Geographic Names)
अध्याय 24 समष्टि निकायों के शीर्षक (Headings for Corporate Bodies)
अध्याय 25 स्वरूप आख्यायें (Uniform Titles)
अध्याय 26 निर्देश (References)

भाग–2 के प्रत्येक अध्याय में प्रारंभ में सामान्य नियम तथा बाद में विशेष नियम दिये गये हैं। विशेष नियम के अभाव में सामान्य नियम ही लागू होते हैं। सूची संहिता के अन्त में निम्नलिखित चार परिशिष्ट (Appendices) दिये गये हैं–

परिशिष्ट A : बड़े अक्षरों का प्रयोग (Capitalization)
परिशिष्ट B : संकेताक्षर (Abbreviation)
परिशिष्ट C : संख्यापद (Numerals)
परिशिष्ट D : पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)

संहिता के अन्त में दी गई अनुक्रमणिका द्वारा सम्बन्धित नियम तक सुगमता से पहुँचा जा सकता है।

विवरण के स्तर Levels of Description

ए.ए.सी.आर.–2 शोधित ए.ए.सी.आर.–2 (1978) एवं संशोधित ए.ए.सी.आर.–2 (1988) में तीन स्तरीय ग्रंथालयों–छोटे, मध्यम एवं विशाल हेतु विवरणात्मक सूचीकरण के अलग–अलग स्तरीय विवरण प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय का प्रावधान किया गया है।

1. **प्रथम स्तरीय विवरण** (First Level of Description) : ए.ए.सी.आर.–2 के नियमांक 1-0D1 के अनुसार छोटे ग्रंथालयों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए संक्षिप्त प्रकार तथा सूचीकरण हेतु प्रथम स्तरीय विवरण का प्रावधान किया गया है, जिसमें ग्रन्थ की पहचान हेतु नयूनतम सूचनाएँ दी जाती हैं।

   इसमें मात्र मुख्य आख्या को ही सम्मिलित किया जाता है तथा अन्य आख्याओं को छोड़ दिया जाता है। इसी प्रकार उत्तरदायित्व क्षेत्र में भी शीर्षक के समान होने पर उत्तरदायित्व विवरण लिखने की आवश्यकता नहीं होती। संस्करण विवरण को तो अंकित किया जाता है परन्तु संस्करण विशेष के उत्तरदायित्व विवरण को नहीं लिखा जाता। इसी प्रकार इसमें ग्रन्थ के भौतिक स्वरूप सम्बन्धित न्यूनतम सूचनाएँ ही अंकित की जाती हैं।

नोट:

2. **द्वितीय स्तरीय विवरण** (Second Level of Description) : ए.ए.सी.आर.–2 के नियमांक 1.0D 2 के अनुसार द्वितीय स्तर में प्रथम स्तर की सभी सूचनाओं के अतिरिक्त मुख्य आख्या के बाद सामान्य सामग्री पद (General material designation), समानान्तर आख्या तथा अन्य सभी आख्याएँ भी दी जाती हैं। इस स्तर में सभी प्रकार के उत्तरदायित्व विवरण को भी सम्मिलित किया जाता है। संस्करण विवरण के साथ–साथ उससे सम्बन्धित उत्तरदायित्व क्षेत्र में नियमानुसार सभी सूचनाएँ अंकित की जाती हैं। यह स्तर मध्यम श्रेणी के ग्रन्थालयों के सूचीकरण हेतु प्रस्तावित है।
3. **तृतीय स्तरीय विवरण** (Third Level of Description) : ए.ए.सी.आर.–2 के नियमांक 1.0D 3 के अनुसार विशाल एवं शोध ग्रन्थालयों के उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सूची संहिता के सभी नियमों में प्रस्तावित सूचनाएँ इस स्तर में अंकित की जाती हैं।

   ग्रन्थालयों में सूची के विवरण के स्तर का निर्धारण ग्रन्थालयों के स्वरूप, प्रकार एवं पाठकीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। सामान्यतया ग्रन्थालयों में द्वितीय स्तर का प्रयोग किया जाता है। इस पुस्तिका में सभी प्रविष्टियाँ इसी स्तर के अनुसार बनाई गई हैं।

प्रविष्टियों के प्रकार एवं संरचना Varieties of Entries and their Structure

ए.ए.सी.आर.–2 के अनुसार निर्मित शब्दकोशीय सूची में निम्नलिखित प्रकार की प्रविष्टियाँ होती हैं–1. मुख्य प्रविष्टि, 2. इतर या सहायक प्रविष्टियाँ, 3. निर्देश।

इन प्रविष्टियों को निम्नलिखित चार्ट द्वारा अधिक सुगमता से समझा जा सकता है–

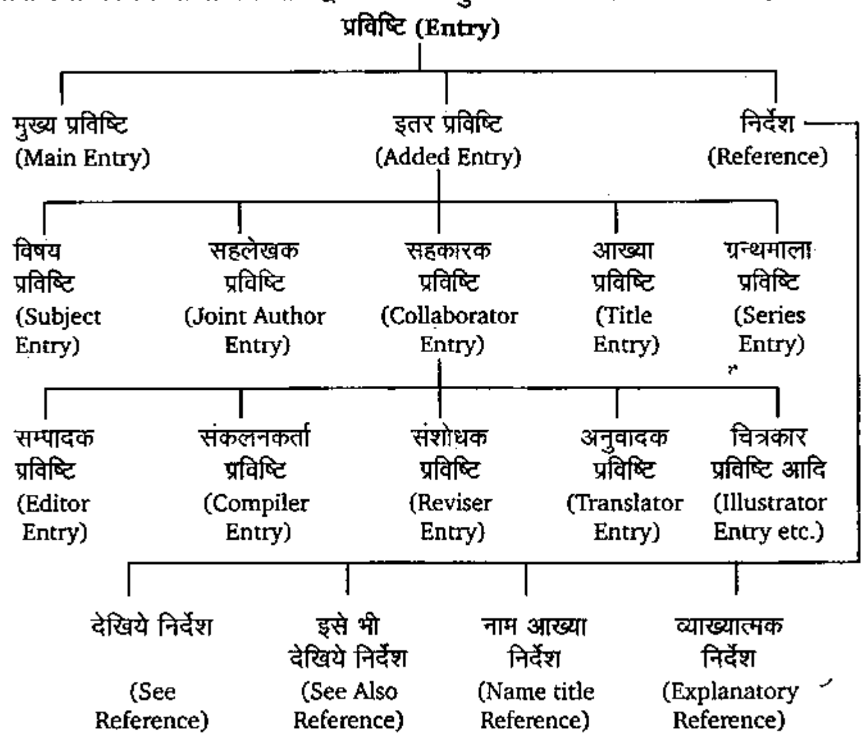

नोट-

मुख्य प्रविष्टि की संरचना Structure of Main Entry

पत्रकों पर निर्मित की जाने वाली मुख्य प्रविष्टि को निम्नलिखित भागों में किया जाता है–

1. क्रमांक अंक अनुच्छेद (Call Number Section)
2. शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section)
3. आख्या एवं प्रकाशनादि विवरण अनुच्छेद (Title and Imprint Section)
4. भौतिक विवरण एवं ग्रन्थमाला अनुच्छेद (Physical Description and Series Section)
5. टिप्पणी अनुच्छेद (Note Section)
6. अन्तर्राष्ट्रीय मानक ग्रन्थ संख्या (International Standard Book Number)
7. परिग्रहण संख्या (Assession Number)
8. संकेत (Tracing)

उपर्युक्त सभी आठों भागों को मुख्य प्रविष्टि पत्रक के मुख भाग (Front portion) पर क्रमानुसार अंकित किया जाता है यदि मात्र संकेत अनुच्छेद हेतु मुख भाग पर स्थान शेष न रहे तो मुख्य प्रविष्टि पत्रक पर नीचे की ओर दाहिने <u>Over</u> लिखकर संकेत अनुच्छेद मुख्य प्रविष्टि पत्रक के पश्च भाग पर अंकित किया जाता है; पर यदि अन्य कोई भाग भी मुख भाग पर न समा सके तो मुख भाग के दाहिने ओर <u>Continued on Next Card</u> पद अंकित कर नवीन पत्रक पर प्रथम काल्पनिक पंक्ति पर 2, यथास्थान क्रमांक अंक तथा शीर्षक लिखकर शेष बचे अनुच्छेद अंकित किये जाते हैं।

इन भागों को निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है–

मुख्य प्रविष्टि पत्रक

(Main Entry Card)

Call Number Section		Heading Section
Acc. No.		Title and imprint section .... Physical description and serious section ....
		Note Section ISBN Tracing

1. **क्रमांक अंक अनुच्छेद** (Call Number Section)–यह अनुवर्ण सूची की मुख्य प्रविष्टि का प्रथम भाग होता है। इसमें ग्रन्थ का क्रमांक अंक (वर्गांक + ग्रन्थांक + संग्राहक यदि हो तो) लिखा जाता है। क्रमांक अंक मुख पृष्ठ के पश्च भाग (Verso of title page) से लिया जाता है। हाशिये (Margin) में एक अक्षर की जगह छोड़कर तृतीय काल्पनिक पंक्ति पर वर्गांक तथा अग्ररेखा (Leading Line) पर ग्रन्थांक अंकित किया जाता है। यदि संग्राहक भी हो तो उसे द्वितीय काल्पनिक पंक्ति पर अंकित किया जाता है। यद्यपि ए.ए.सी.आर.–2 में इसे पेन्सिल से अंकित करने का निर्देश नहीं दिया गया है परन्तु इसमें परिवर्तन की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए इसे पेन्सिल से ही लिखा जाना उपयुक्त होगा। इस अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्ण विराम (Full Stop) नहीं लगाया जाता।

नोट-

2. **शीर्षक अनुच्छेद** (Heading Section)—इसे अग्ररेखा पर प्रथम शीर्ष से प्रारंभ करते हुए लिखा जाता है तथा आवश्यकता पड़ने पर अनुवर्ती पंक्तियाँ (काल्पनिक) शीर्ष से प्रारंभ होती हैं। इसमें लेखक के नाम का प्रविष्टि पद (Entry element), गौण पद (Secondary element) एवं व्यष्टिकृत पद (Individualizing element) सामान्य अक्षरों में लिखे जाते हैं। तीनों पदों के मध्य अल्प विराम (Comma) चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। यदि व्यष्टिकृत पद न दिये गये हों तो गौण पद के बाद पूर्ण विराम नहीं लगाया जाता (प्रविष्टि को खुला (Open) माना जाता है)। परन्तु यदि व्यष्टिकृत पद (जन्म व मृत्यु दोनों ही वर्ष) दिये गये हों तो इस अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्ण विराम (Full Stop) लगाया जाता है।

3. **आख्या एवं प्रकाशनादि विवरण अनुच्छेद** (Title and Imprint Section)—इस अनुच्छेद में आख्या, उपआख्या, समानान्तर आख्या, उत्तरदायित्व विवरण, संस्करण, सहकारक, प्रकाशनादि विवरण आदि को पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार अंकित किया जाता है। इस अनुच्छेद को अगली पंक्ति पर द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ करते हुए तथा अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ करते हुए अंकित किया जाता है।

4. **भौतिक विवरण एवं ग्रन्थमाला अनुच्छेद** (Physical Description and Serious Section)—इस अनुच्छेद में पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार ग्रन्थ का भौतिक विवरण; जैसे—पृष्ठ, खण्ड, चित्र, साइज आदि अंकित किये जाते हैं। यदि ग्रन्थ में कोई ग्रन्थमाला भी दी गई हो तो उसे भी पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार इसी अनुच्छेद में अंकित किया जाता है। यह अनुच्छेद द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम शीर्ष से प्रारंभ होती हैं।

5. **टिप्पणी अनुच्छेद** (Title Section)—नियमांक 178 व 278 के अनुसार विभिन्न प्रकार की टिप्पणियों को इस अनुच्छेद में क्रमवार अंकित किया जाता है। इस अनुच्छेद में एक से अधिक प्रकार की टिप्पणियों को अंकित करना हो तो प्रत्येक टिप्पणी को द्वितीय शीर्ष से प्रारंभ करते हुए लिखा जाता है तथा अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम शीर्ष से प्रारंभ होती हैं। बहुखण्डीय ग्रन्थ की स्थिति में अन्तर्वस्तु (Contents) और सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ (Ordinary Composite Books) की स्थिति में आंशिक अन्तर्वस्तु (Partial contents) टिप्पणी पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार अंकित की जाती है।

6. **अन्तर्राष्ट्रीय मानक ग्रन्थ संख्या** (International Standard Book Number)—यदि ग्रन्थ के मुखपृष्ठ के पश्च भाग अथवा अन्य किसी भाग में अन्तर्राष्ट्रीय मानक ग्रन्थ संख्या दी हो तो उसे इस अनुच्छेद में द्वितीय शीर्ष से प्रारंभ करते हुए अंकित किया जाता है। इस अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्ण विराम (Full Stop) का प्रयोग नहीं किया जाता।

7. **परिग्रहण संख्या** (Accession Number)—इस अनुच्छेद में हाशिये में अग्ररेखा के नीचे तीसरी या चौथी पंक्ति पर परिग्रहण संख्या अंकित की जाती है। इस अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्ण विराम (Full Stop) का प्रयोग नहीं किया जाता।

8. **संकेत** (Tracing)—इस अनुच्छेद में मुख्य प्रविष्टि के अतिरिक्त निर्मित की जाने वाले इतर प्रविष्टियों के बारे में सूचना अंकित की जाती है। यह अनुच्छेद द्वितीय शीर्ष से प्रारंभ होता है तथा अनवुर्ती पंक्तियाँ प्रथम शीर्ष से प्रारंभ होती हैं। पहले अरबी–भारतीय अंकों में क्रमित करते हुए विषय प्रविष्टियाँ अंकित की जाती हैं फिर रोम अंकों में क्रमित करते

हुए अन्य इतर प्रविष्टियाँ; जैसे–सहलेखक, सम्पादक, आख्या, ग्रन्थमाला आदि अंकित की जाती हैं। निर्देशों को संकेत में अंकित नहीं किया जाता है।

इतर प्रविष्टि के प्रकार एवं संरचना

Types of Added Entries and Their Structure

ए.ए.सी.आर.–2 के अनुसार निर्मित अनुवर्ण सूची में निम्नलिखित की इतर प्रविष्टियाँ बनाई जाती हैं–

1. विषय प्रविष्टि (Subject Entry)
2. सहलेखक प्रविष्टि (Joint Author Entry)
3. सहकारक प्रविष्टि (Collaborator)
4. आख्या प्रविष्टि (Title Entry)
5. ग्रन्थमाला प्रविष्टि (Series Entry)

1. **विषय प्रविष्टि** (Subject Entry)–अनुवर्ण सूची में ग्रन्थ में वर्णित वर्ग के नाम अथवा विषय से सम्बन्धित शब्द को विशिष्ट विषय प्रविष्टि कहते हैं। ग्रन्थ के विषय को सीयर्स लिस्ट ऑफ सब्जेक्ट हैडिंग्स अथवा लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस लिस्ट ऑफ सब्जेक्ट हैडिंग्स से प्राप्त कर इसे विषय प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में बड़े अक्षरों में अंकित किया जाता है। किसी ग्रन्थ के लिए अधिकतम तीन तक विषय प्रविष्टियाँ निर्मित की जा सकती हैं।
2. **सहलेखक प्रविष्टि** (Joint Author Entry)–नियमांक 21.30 A के अनुसार प्रथम लेखक के अतिरिक्त दो सहलेखकों तक के लिए सहलेखक प्रविष्टियाँ बनाई जाती हैं। चार या अधिक सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थ के लिए मात्र प्रथम लेखक के नाम से सहलेखक प्रविष्टि बनाई जाती है। इसमें सहलेखक के नाम को शीर्षक अनुच्छेद में नियमानुसार अंकित किया जाता है अर्थात् प्रविष्टि पद, गौण पद, तथा व्यष्टिकृत पद क्रमानुसार लिखे जाते हैं। प्रत्येक सहलेखक के लिए इतर प्रविष्टि बनाने का प्रावधान है। नियमांक 21.0 D के अनुसार वैकल्पिक रूप से सहलेखक के नाम से आगे jt.auth पद लिखने का प्रावधान है।
3. **सहकारक प्रविष्टि** (Collaborator)–नियमांक 21.30 D के अनुसार यदि ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर सम्पादक या संकलनकर्ता का नाम प्रधानता से अंकित हो तो उनके नाम से इतर प्रविष्टि बनाई जाती है। नियमांक 21.0 D के अनुसार वैकल्पिक रूप से सहकारक के नाम के साथ ed. या comp. कोमा लगाकर प्रयुक्त किया जाता है।

   अनुवादक प्रविष्टि (Translator Entry)–नियमांक 21.30K 1 के अनुसार यदि शीर्षक समष्टि निकाय या आख्या के अंतर्गत निर्मित किया गया हो तो अनुवादक के नाम से इतर प्रविष्टि बनाई जाती है।

   यदि मुख्य प्रविष्टि का शीर्षक व्यक्तिगत लेखक के अन्तर्गत बनाया गया है जो अनुवादक था तब इतर प्रविष्टि निम्नलिखित स्थितियों में ही बनाई जायेगी–

   (i) यदि अनुवाद पद्य रूप में हो।
   (ii) यदि अनुवाद महत्त्वपूर्ण हो।

नोट-

नोट-

(iii) यदि एक ग्रन्थ एक ही भाषा में एक से अधिक बार अनुदित किया गया हो।

(iv) यदि सूचना का मुख्य स्रोत मुद्रण शैली द्वारा यह दर्शाये कि अनुवादक ही लेखक है।

(v) यदि मुख्य प्रविष्टि से सूची के उपयोगकर्ता को ग्रन्थ प्राप्ति में कठिनाई हो, उदाहरणार्थ (प्राच्य एवं मध्यकाल के ग्रन्थों हेतु)।

चित्रकार प्रविष्टि (Illustrator Entry)–नियमांक 21.30K2 के अनुसार ग्रन्थ के चित्रकार हेतु निम्नलिखित स्थितियों में ही चित्रकार इतर प्रविष्टि बनाई जाती है–

सूचना के मुख्य स्रोत में चित्रकार को ग्रन्थ के लेखक अथवा समष्टि निकाय के समकक्ष महत्ता दी गई है, अथवा ग्रन्थ का आधा अथवा आधे से अधिक भाग चित्रों से परिपूर्ण हो, अथवा चित्र, उस ग्रन्थ में महत्त्वपूर्ण भाग समझे जाते हों।

4. **आख्या प्रविष्टि** (Title Entry)–नियमांक 20.301 के अनुसार प्रत्येक ग्रन्थ जिसे व्यक्तिगत शीर्षक, समष्टि शीर्षक या आख्या के अन्तर्गत सूचीकृत किया गया है कि मुख्य आख्या के लिए इतर प्रविष्टि बनाई जाती है। आवश्यकतानुसार मुख्य आख्या से भिन्न–भिन्न आख्याओं–आवरण आख्या (Cover Title), संतत आख्या (Running Title) आदि के लिए भी इतर प्रविष्टि बनाई जाती है।

5. **ग्रन्थमाला प्रविष्टि** (Series Entry)–नियमांक 21.30D के अनुसार उपयोगी संस्थित (Collocation) ग्रन्थमाला के प्रत्येक ग्रन्थ हेतु इतर प्रविष्टि बनाई जायेगी। वैकल्पिक रूप से ग्रन्थमाला की संख्या अथवा अन्य पद भी दिया जाता है। यहाँ यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि ग्रन्थमाला के सम्पादक का नाम ग्रन्थमाला के साथ देने का नियम नहीं है।

निर्देश References

ए.ए.सी.आर.–2 में निर्देश को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया गया है–'एक शीर्षक या प्रविष्टि से दूसरे शीर्षक या प्रविष्टि की ओर निर्दिष्ट कराना'। इन्हें मुख्यतया दो भागों में विभक्त किया जा सकता है–

1. विषय निर्देश
2. नाम निर्देश

संशोधित ए.ए.सी.आर.–2 के अध्याय 26 के अनुसार यह निर्देश निम्नलिखित प्रकार के होते हैं–

1. देखिए निर्देश
2. इसे भी देखिए निर्देश
3. नाम-आख्या निर्देश
4. व्याख्यात्मक निर्देश

1. **देखिए निर्देश** (See References)–'देखिए निर्देश' पाठक को व्यक्ति या समष्टि निकाय के उस नाम, कृति की उपआख्या, विषय या ग्रन्थमाला के उस नाम से जिसके अन्तर्गत सूची में पाठक के देखे जाने की संभावना रहती है उस स्वरूप की ओर निर्दिष्ट करता हैं, जहाँ सूचीकार द्वारा सूची में वांछित सूचना प्रदान की गई हैं।

नोट-

2. **इसे भी देखिए निर्देश** (See Also References)—'इसे भी देखिए निर्देश' पाठक को एक शीर्षक से अन्य संबंधित शीर्षक या एकरूप आख्या की ओर निर्देशित करना।
3. **नाम–आख्या निर्देश** (Name-Title References)—जब ऐसी आख्या जो व्यक्तिगत अथवा समष्टि शीर्षक के अन्तर्गत बनाई गई है देखिये या इसे भी देखिए निर्देश बनाये जाये तो इन्हें नाम–आख्या निर्देश के रूप में अंकित करना चाहिए अर्थात् इन्हें व्यक्तिगत या समष्टि शीर्षक के बाद आख्या कर बनाना चाहिए।
4. **व्याख्यात्मक निर्देश** (Explanatory References)—जब सामान्य निर्देश 'देखिये' अथवा 'इस भी देखिये' की अपेक्षा अधिक विस्तृत निर्देश की आवश्यकता हो तो नियमांक 21.2D1 के अनुसार व्याख्यात्मक निर्देश बनाये जाते हैं।

रंगनाथन कृत क्लासीफाइड कैटलॉग कोड के अनुसार प्रविष्टियों का वर्गीकरण प्रविष्टियों और उनकी संरचना

Classification of Entries of CCC and the Structure

रंगनाथन द्वारा बनाई गई क्लासीफाइड कैटलॉग (= सीसीसी) का उपयोग वर्गीकृत सूची और शब्दाकोशीय सूची दोनों के निर्माण में किया जाता है। परन्तु इस इकाई में इस संहिता के अनुसार केवल आनुवर्गिक सूची का ही निर्माण निर्धारित किया गया है। प्रविष्टि को सूची में अन्तिम एकांश लेखा के रूप में परिभाषित किया गया है। सीसीसी के अनुसार प्रविष्टियाँ हस्तलिखित होती हैं।

- 0 प्रविष्टियाँ (Entries)
  - 1 मुख्य प्रविष्टियाँ (Main Entries)
  - 2 इतर प्रविष्टियाँ (Added Entries)
    - 21 अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ (Cross Reference Entires)
    - 22 निर्देशी प्रविष्टियाँ (Index Entries)
      - 221 वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)
      - 222 ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)
    - 23 नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ (Cross Reference Index Entries)

उपर्युक्त प्रविष्टियाँ में मुख्य प्रविष्टियाँ और अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ संख्या (Number) प्रविष्टियाँ हैं। अतः इनको वर्गीकृत भाग में वर्गक्रम से विन्यसित किया जाता है। शेष प्रविष्टियाँ अर्थात् वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ; ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ और नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ शब्द (Word) प्रविष्टियाँ हैं। अतः इनको अनुवर्ण भाग में वर्णक्रम् में विन्यासित किया जाता है।

द्वितीय प्रकार का विभाजन

1. **अविषय प्रविष्टियाँ** (Non Subject Entires)—उन प्रविष्टियों को कहा जाता है जो उपयोगकर्ता की विषय के अतिरिक्त अन्य अभिगमों अर्थात लेखक (Author), आख्या (Title), सहकारक (Collaborator) और ग्रंथमाला (Series) आदि को सन्तुष्ट करती हैं।

नोट-

2. **विषय प्रविष्टियाँ** (Subject Entries)–उन प्रविष्टियों को कहा जाता है जो उपयोगकर्ता की विषय अभिगम को सन्तुष्ट करती है। उदाहरण में मुख्य प्रविष्टियाँ, अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ और वर्ग निर्देशी कहा जाता है।

तृतीय प्रकार का विभाजन

1. **विशिष्ट प्रविष्टियाँ** (Specific Entries)–उन प्रविष्टियों को कहा जाता है जो किसी विशेष से सम्बन्ध रखती हैं। उदाहरण–मुख्य प्रविष्टियाँ, अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ और ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ।
2. **सामान्य प्रविष्टियाँ** (General Entries)–उन प्रविष्टियों को कहते हैं जो अनेक ग्रंथों से सम्बन्धित होती हैं। उदाहरण में शेष प्रविष्टियाँ वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ, नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ हैं।

मुख्य प्रविष्टि Main Entry

मुख्य प्रविष्टि किसी ग्रन्थ की सबसे महत्वपूर्ण प्रविष्टि होती है अर्थात् अधिकांश उपयोगकर्ताओं की अभिगम की सम्पूर्ति करती है। रंगनाथन के अनुसार आजकल सर्वाधिक उपयोगकर्ताओं की रुचि अपने विशिष्ट विषय में होती है। अतः मुख्य प्रविष्टि हमेशा विषय के अन्तर्गत बनायी जाती है। परन्तु इसमें ग्रन्थ का विशिष्ट विषय वर्गीकरण की कृत्रिम भाषा में वर्गांक के रूप में बना रहता है। अतः इनको सूची क वर्गीकृत भाग में वर्ग क्रम में विन्यासित किया जाता है। संबंधित ग्रंथ का मुख पृष्ठ तथा आस–पास के पृष्ठ, मुख्य प्रविष्टि की सूचना के प्रमुख स्रोत होते हैं।

मुख्य प्रविष्टि एक विशिष्ट प्रविष्टि है जो ग्रन्थ के संबंध में अधिकृतम सूचना प्रदान करती है। प्रत्येक ग्रन्थ के लिए एक मुख्य प्रविष्टि का निर्माण करते हैं। इस प्रविष्टि में संकेत (Tracing) के रूप में ग्रंथ से संबन्धित समस्त इतर प्रविष्टियों के बारे में सूचना बनी रहती है। सीसीसी के नियमांक MBO के अनुसार, मुख्य प्रविष्टि में निम्नलिखित अनुच्छेद होते हैं–

1. संकेत अनुच्छेद (Traching Section)
2. परिग्रहण क्रमांक अनुच्छेद (Accession Number Section)
3. टिप्पणी अनुच्छेद (Notes Section)
4. आख्या अनुच्छेद (Title Section)
5. शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section)
6. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)

1. **संकेत अनुच्छेद** (Traching Section) : इसको मुख्य प्रविष्टि पत्रक के पीछे भाग (Back) पर अंकित करते हैं। इसको ग्रंथ की इतर प्रविष्टियाँ निर्मित करने के बाद ही अंकित करते हैं, क्योंकि इसमें उक्त ग्रंथ की इतर प्रविष्टियाँ संबंधी सूचना अंकित रहती है। संकेत अंकित के लिए मुख्य प्रविष्टि पत्रक के पीछे भाग (Back) को एक काल्पनिक शीर्ष रेखा के द्वारा दो अर्थ भागों में विभाजित करते हैं। जिनको बाँया अर्द्ध और दाँया अर्द्ध के नाम से जाना जाता है।

   बाँयें अर्द्ध भाग में ग्रंथ से संबंधित अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ के वर्गांक अंकित करते हैं। और उनके समक्ष 'p' (पृष्ठ), part (भाग), chap (अध्याय), sec (अनुच्छेद) आदि शब्द

नोट-

लिखकर संबंधित संख्यायें अंकित करते हैं। प्रत्येक अन्तर्विषयी प्रविष्टि के लिए एक रेखा का उपयोग करते हैं। इनको वर्गीकृत क्रम में अंकित करते हैं।

- दाँये भाग में क्रमशः वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों, ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों और नामान्तर निर्देशों प्रविष्टियों के शीर्षक अंकित करते हैं। वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों का अनुक्रम अंतिम खोज कड़ी से प्रथम खोज कड़ी होता है। ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों का अनुक्रम लेखक प्रविष्टियाँ, सहकारक प्रविष्टियाँ, आख्या प्रविष्टियाँ और ग्रन्थमाला प्रविष्टियाँ होता है। नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियों का अनुक्रम वैकल्पिक नाम प्रविष्टि, एक शब्द के विभिन्न स्वरूप प्रविष्टि छद्मनाम–वास्तविक–नाम प्रविष्टि, संपादक–ग्रन्थमाला प्रविष्टि और सजातीय–नाम प्रविष्टि होता है।

2. **परिग्रहण क्रमांक अनुच्छेद** (Accession Number Section) : परिग्रहण क्रमांक मुखपृष्ठ के पीछे भाग पर अंकित होता है। वहां से लेकर लिखा जाता है। इसको सबसे निचली रेखा पर प्रथम शीर्ष से शुरू करके लिखा जाता है।
3. **टिप्पणी अनुच्छेद** (Notes Section) : सीसीसी के अनुसार टिप्पणियाँ निम्न छः प्रकार की होती हैं–
    1. सम्बद्ध ग्रंथ टिप्पणी (Associated book note)
    2. उद्ग्रहण टिप्पणी (Extraction note), और
    3. आख्या परिवर्तन टिप्पणी (Change of title note)
    4. उद्गृहीत टिप्पणी (Extract note)
    5. बहु–ग्रंथमाला टिप्पणी (Multiple Series note)
    6. ग्रंथमाला टिप्पणी (Series note)
4. **आख्या अनुच्छेद** (Title Section) : इस अनुच्छेद में क्रमशः (1) ग्रंथ की सम्पूर्ण आख्या, (ii) ग्रंथ का संस्करण, और (iii) सहकारक संबंधी सूचना अंकित रहती है। यह सूचना एक पैराग्राफ में तीन वाक्यों के रूप में दी जाती है।
5. **शीर्षक अनुच्छेद** (Heading Section) : सबसे महत्वपूर्ण अनुच्छेद होता है। इसमें सामान्यतः ग्रन्थ के लेखक का नाम अंकित रहता है। लेखक न होने पर नियमानुसार ग्रंथ के सहकारक (Collaborator) का नाम अथवा उसकी आख्या अंकित की जाती है।
6. **अग्र अनुच्छेद** (Leading Section) : इस अनुच्छेद में ग्रंथ का क्रमांक अंक (Call Number) अंकित करते हैं। इसी कारण इसको क्रमांक अंक अनुच्छेद भी कहा जाता है। इसको अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से शुरू करते हुए लिखना चाहिये। ग्रंथ का क्रमांक अंक, मुखपृष्ठ के पीछे भाग पर अंकित होता है। वर्गांक (Class Number) और ग्रन्थांक (Book Number) के मध्य दो अक्षरों का स्थान छोड़ते हैं।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि का प्रत्येक पद बड़े अक्षर से शुरु होता है। ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि और नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि के प्रत्येक शीर्षक का प्रथम शब्द बड़े अक्षर से शुरू होता है। इसके अतिरिक्त व्याकरण के सामान्य नियमों का पालन करते हैं। विवरणात्मक पद को रेखांकित करते हैं, बड़े अक्षर से शुरु करते हैं और इससे पूर्व अर्द्ध विराम (Comma) लगाते हैं। यदि कोई शीर्षक एक रेखा में नहीं आता है तो नैरन्तर्य अगली रेखाओं में दो

नोट-

अक्षरों का स्थान छोड़ दिया जाता है। प्रत्येक शीर्षक के अन्त में पूर्ण विराम (Full stop) लगाते हैं।

प्रत्येक प्रकार की निर्देशी प्रविष्टियों के मध्य एक रेखा का खाली स्थान छोड़कर उनको समूहों के रूप में निर्दिष्ट किया जाता है।

मुखपृष्ठ

Memories, Dreams Reflections

by

C.G. Jung

Edited by

Aneille Jaffe

London

Oxford University Press

1963

Call No.	S,N63
Acc. No.	17291
H.T.P.	Classics in Psycology. Edited by Richard M. Phillips. No. 51. The book is divided in to following 3 Parts which are to be highlighted
Note:	Memories S: 43 P 1-62 Reflections S: 49 P 63-126 Dreams S: 811 P 127-197

नोट-

मुख्य प्रविष्टि का नमूना

मुख्य प्रविष्टि–पत्रक का अग्र भाग

1. अग्रानुच्छेद → S: N43
2. शीर्षक अनुच्छेद → JUNG (CG).
3. आख्या अनुच्छेद → Memories, dreams reflections. Ed by Aneille Jaffe.
4. टिप्पणी अनुच्छेद → (Classics in psychology. Ed by Richard M Phillips. 51).
5. परिग्रहण संख्या-अनुच्छेद → 17291

मुख्य प्रविष्टि पत्रक का पश्च भाग

6. शीर्षक अनुच्छेद → संकेत (Tracing)

अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ →

S:43 P 1-62.
S:45 P 63-125.
S:811 P 127-197

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ

Psychology.
Memory, Psychology.
Cognition, Psychology.
Conception, Psychology.
Relection, Psychology.
Self conciousness, Psychology.
Dream, Psychology.
Sleep, Psychology.
Metapsychology.

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ →

Jung (C G).
Jaffe (Aneille), Ed
Classics in psychology.

निर्देशी प्रविष्टियाँ → Phillips (Richard M), Ed.

टिप्पणी— संकेत में अन्तर्विषयी प्रविष्टियों को वर्गीकृत क्रम में अंकित करते हैं। वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों में सर्व–प्रथम मुख्य प्रविष्टि से व्युत्पन्न प्रविष्टियों के शीर्षक अंकित करते हैं। उसके बाद अन्तर्विषयी प्रविष्टियों से व्युत्पन्न प्रविष्टियों के शीर्षक अंकित किये जाते हैं। मुख्य प्रविष्टि और संकेत में सब स्थानों पर क्रमांक अंक (Call Number) और वर्गांक पेन्सिल से लिखे जाते हैं।

नोट-

इतर प्रविष्टियाँ Added Entries

मुख्य प्रविष्टि उपयोगकर्ताओं की मुख्य अभिगम की पूर्ति करती है। अन्य अभिगमों की संपूर्ति हेतु इतर प्रविष्टियों का निर्माण करते हैं। रंगनाथन के अनुसार, "मुख्य प्रविष्टि के अतिरिक्त अन्य प्रविष्टियाँ, इतर प्रविष्टियाँ कहलाती हैं। "सीसीसी" के अनुसार इतर प्रविष्टियों के निम्नलिखित प्रकार होते हैं–

1. नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ
2. निर्देशी प्रविष्टियाँ
3. अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ

अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ Cross Reference Entres

सीसीसी के नियमांक MJ के अनुसार, अन्तर्विषयी प्रविष्टि में निम्नलिखित अनुच्छेद हैं–

1. द्वितीय अनुच्छेद (Second Section)
2. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
3. मूल प्रलेख विवरण अनुच्छेद (Locus Section)
   (i) ग्रन्थ का क्रमांक अंक
   (ii) ग्रन्थ की मुख्य प्रविष्टि का शीर्षक
   (iii) ग्रन्थ की आख्या, संस्करण सहित और प्राप्ति स्थल जैसे पृष्ठ, अध्याय भाग आदि।

अन्तर्विषयी प्रविष्टियों के नमूने

(1)

	S: 43	
		See also S N63 Jung. Memories, dreams, reflections. Ed 3. P 1-62.

(2)

	S: 45	
		See also S N63 Jung. Memories, dreams, reflections. Ed3. P 63-125.

नोट-

(3)

	S: 811	
		See also S N63 Jung. Memories, dreams, reflections. Ed3. P 127-197.

निर्देशी प्रविष्टियाँ Index Entries

निर्देशी प्रविष्टियाँ निम्न दो प्रकार की होती है–

1. वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)
2. ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entris)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ Class Index Entries

मुख्य प्रविष्टि में ग्रन्थ का विशिष्ट विषय वर्गीकरण की कृत्रिम भाषा में अंकित रहता है। उपयोगकर्ता इसको समझने में असमर्थ रहते हैं। अत: उनके मार्गदर्शन के लिए प्राकृतिक भाषा में विषय प्रविष्टियां का निर्माण करते हैं। जिनको सीसीसी में वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां का नाम दिया गया है। इनकी व्युत्पत्ति वर्गांक से होती है। इनकी व्युत्पत्ति के लिये रंगनाथन ने एक विधि का प्रतिपादन किया है। जिसको शृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure) नाम दिया गया है'। इस सम्बन्ध में विस्तृत नियम सीसीसी के भाग K में दिये गये हैं।

शृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

रंगनाथन ने शृंखला प्रक्रिया को परिभाषित करते हुए लिखा है, 'शृंखला प्रक्रिया किसी भी वर्गांक से विषय शब्द प्रविष्टि व्युत्पन्न करने की लगभग एक यांत्रिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में वर्गांक को एक शृंखला के रूप में विश्लेषित किया जाता है।

शृंखला प्रक्रिया में निम्न कड़ी होती हैं–

1. **छद्म कड़ी** (Pseudo Link)–ऐसी कड़ी को जो ग्रन्थांक (Book Number) के किसी भाग के अंक या अंक समूह द्वारा बनती है, उसे छद्म कड़ी कहते हैं।
2. **विलुप्त कड़ी** (Missing Link)–शृंखला में विलुप्त एकल से संबंधित रिक्तता (Gap) वाली कड़ी को विलुप्त कड़ी कहा जाता है।
3. **खोज कड़ी** (Sougth Link)–उस कड़ी को कहते हैं जो न मिथ्या हो न विलयिता (Fused) और न अखोज हो अर्थात् जिस कड़ी पर पाठकों द्वारा पाठ्य–सामग्री खोजने की सम्भावना बनी रहती है।
4. **अखोज कड़ी** (Unsoght Link)–ऐसी कड़ी जिसके अन्तर्गत पाठ्य–सामग्री उत्पादित होने अथवा पाठकों द्वारा खोजने की सम्भावना होती है।
5. **मिथ्या कड़ी** (False Link)–एक ऐसी कड़ी है जिसका कोई अर्थ नहीं होता है जिसकी समाप्ति अग्र प्रकार होती है–

नोट-

1. काल एकल जो वर्गांक में काल पक्ष में स्वयं में काल पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं और अन्य किसी मूलभूत श्रेणी का प्रतिनिधित्व नहीं करते अर्थात् वे स्थान (Space), ऊर्जा (Energy), पदार्थ (Matter) अथवा व्यक्तित्व (Personality) के रूप में नहीं आते।
2. अन्तः पंक्ति दशा सम्बन्ध (Intra array relation) का प्रतिनिधित्व करने वाले अंक, जैसे; ot ou ov ow oy।
3. अन्तः पक्ष दशा सम्बन्ध (Intra facet phase relation) का प्रतिनिधत्व करने वाल अंक, जैसे; oj ok om on or।
4. दशा सम्बन्ध (Phase relation) का प्रतिनिधित्व करने वाले अंक जैसे; oa ob oc od og।
5. योजक चिन्ह जैसे , ; : .

प्रक्रिया

मुख्य प्रविष्टि का वर्गांक : S

शृंखला (Chain)

S = Psychology (Sougth Link)

टिप्पणी— उपर्युक्त वर्गांक में केवल एक ही अंक है, अतः एक ही कड़ी बनेगी।

अन्तर्विषयी प्रविष्टियों के वर्गांक: S : 43
S : 45
S : 811

शृंखलाएँ Chain

(1)	↓ S	=	Psychology (Sougth Link)
	↓ S :	=	(False Link)
	↓ S : 4	=	Cognition, Conception in psychology (Sougth Link)
	S : 43	=	Memory in psychology (Sougth Link)
(2)	↓ S	=	Psychology (Sougth Link)
	↓ S :	=	(False Link)
	↓ S : 4	=	Congnition, Conceptionin psychology (Sougth Link)
	S : 45	=	Reflection, Self Conciousness in psychology (Sougth Link)
(3)	↓ S	=	Psychology (Sougth Link)
	↓ S :	=	(False Link)
	↓ S : 8	=	(Metapsychology (Sougth Link0
	↓ S : 81	=	Sleep in Metapsychology (Sougth Link)
	↓ S : 811	=	Dream in Metapsychology (Sougth Link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों की संरचना

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि एक विषय प्रविष्टि होती है जिसमें अनुच्छेद होते हैं।

नोट-

1. **तृतीय अनुच्छेद**—इसमें अग्रानुच्छेद में दिये गये शीर्षक को दर्शाने वाला निर्देशांक (Ondex number) अंकित किया जाता है। इसको द्वितीय अनुच्छेद समाप्त होने वाली पंक्ति में जितना संभव हो उतना दाहिनी ओर पेन्सिल से लिखा जाता है। द्वितीय अनुच्छेद और निर्देशांक के मध्य कम से कम चार अक्षरों का स्थान होता है। यदि पर्याप्त स्थान न हो तो अनुवर्ती पंक्ति पर यथासंभव दाहिनी ओर लिखा जाता है।
2. **द्वितीय अनुच्छेद**—इसमें नियमांक KF2 के अनुसार निम्नलिखित निर्देशांक शब्द अंकित करते हैं।

   For documents in this Class and its Subdivisions see the classified part of the catalogue under the Class Number.

   यह अनुच्छेद द्वितीय शीर्ष से आरम्भ होता है और अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती हैं। अन्य निर्देशक शब्दों की भाँति यह निर्देशक शब्द रेखांकित नहीं किये जाते हैं एवं अन्त में पूर्ण विराम (Full stop) नहीं लगाया जाता है।
3. **अग्रानुच्छेद**—इसमें प्रत्येक मुख्य प्रविष्टि और अन्तर्विषयी प्रविष्टि के वर्गांकों से निर्मित शृंखलाओं की खोज (Sougth links) के अन्तिम अंक के प्रतिनिधित्व करने वाले शब्द को प्रथम पद बनाया जाता है। प्रत्येक खोज शीर्षक से एक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि का निर्माण होता है। अतः वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों की संख्या खोज शीर्षक पर निर्भर करती हैं। यदि शीर्षक व्यष्टिकृत (Individualising) नहीं होता तो व्यष्टिकृत करने के लिए प्रसंग के उपसूत्र की सहायता से एक या अधिक ऊपरी खोज कड़ियों के अन्तिम शब्दों से उपशीर्षकों की व्युत्पत्ति की जाती है। प्रत्येक शीर्षक या उपशीर्षक के अलावा इसके जब तक प्रशंसात्मक विशेषण (Qualifying adjective) न हों, सामान्य प्रथमा विभक्ति (Nominative case) में एकाकी संज्ञा होती है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों के नमूने

		MEMORY, PSYCHOLOGY,
		For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified part of the catal under the Class Number S:43

		COGNITION, PSYCHOLOGY,
		For documents .... Class Number S:4

नोट-

		PSYCHOLOGY,
		For documents .... Class Number S

		REFLECTION, PSYCHOLOGY,
		For documents .... Class Number S:45

		DREAM, METAPSYCHOLOGY.
		For documents .... Class Number S:811

		SLEEP, METAPSYCHOLOGY.
		For documents .... Class Number S:81

		METAPSYCHOLOGY.
		For documents .... Class Number S:8

नोट-

टिप्पणी—

1. Psychology और Cognition के अन्तर्गत एक ही बार वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों का निर्माण किया गया है। यह तथ्य विशेष रूप में ज्ञात रहते हैं, क्योंकि ग्रन्थालय में सूची में ऐसा ही करना चाहिए।
2. निर्देशक शब्द को केवल प्रथम प्रविष्टि में पूर्ण रूप से अंकित किया गया है। शेष में केवल प्रथम दो शब्द और अंतिम दो शब्द अंकित किये जाते हैं। यह समय बचाने के लिये किया जाता है। वैसे ग्रन्थालय में प्रत्येक प्रविष्टि में इनको पूर्ण रूप से अंकित करते हैं।
3. पत्रकों का आकार स्थान बनाने को छोटा कर दिया जाता है। वस्तुतः प्रत्येक पत्रक समान आकार का 12.5 सेमी. और 7.5 से मी. होता है।

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ Book Index Entries

आनुवर्गिक सूची की विशिष्ट सहायक शब्द प्रविष्टि को गन्थ निर्देशी प्रविष्टि कहते हैं। यह मुख्यतः निम्नलिखित चार प्रकार की होती हैं और तद्नुसार उपयोगकर्ताओं की अभिगमों की सम्पूर्ति करती है—

1. ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि
2. आख्या निर्देशी प्रविष्टि
3. सहकारक/सह–सहकारक निर्देशी प्रविष्टि
4. लेखक/सहलेखक निर्देशी प्रविष्टि

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि की संरचना

सीसीसी के नियमांक MKO के अनुसार एक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि में निम्नलिखित अनुच्छेद होते हैं—

1. **टिप्पणी अनुच्छेद**—यदा–कदा आवश्यकता पड़ती है।
2. **निर्देशांक** (Index number)—द्वितीय अनुच्छेद की समाप्ति पर कम–से–कम चार अक्षरों का स्थान छोड़कर उसी पंक्ति पर यथासम्भव दाहिनी ओर पेन्सिल से लिखा जाता है। समुचित स्थान न होने पर अनुवर्ती पंक्ति में यथासम्भव दाहिनी ओर अंकित किया जाता है।
3. **द्वितीय अनुच्छेद**—द्वितीय शीर्ष से आरम्भ होता है। ग्रन्थमाला प्रविष्टि में शीर्ष से आरम्भ होता है।
4. **अग्रानुच्छेद**—अग्ररेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ होता है। अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती हैं।

लेखक निर्देशी प्रविष्टि Author Index Entry

		JUNG (CG).
		Memories, dreams reflection. Ed 3. S N63

नोट-

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि Collaborator Index Entry

	JAFFE (Aneille), Ed.	
		Jung: Memories, dreams, reflections. Ed 3.
		S N63

आख्या निर्देशी प्रविष्टि Title Index Entry

	MEMORIES, DREAMS, reflections Ed 3.	
		By Jung. S N63

टिप्पणी–

1. सीसीसी के नियमों के अनुसार, आख्या प्रविष्टि निर्मित करने का प्रावधान अपवाद स्वरूप है। वस्तुतः इस ग्रन्थ की आख्या प्रविष्टि निर्मित नहीं होगी। यहाँ उसको नमूने के तौर पर समझाने के लिये बनाया गया है।
2. यह स्मरण रखा जाता है कि ग्रंथ की आख्या का शीर्षक के रूप में प्रयुक्त पर प्रथम दो शब्द बड़े अक्षरों में लिखने चाहिये।

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि Series Index Entry

	CLASSICS IN PSYCHOLOGY.	
	51	Jung: Memories, dreams, eflections. Ed 3. S N63

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ Cross Reference Index Entries

सीसीसी के अनुसार, नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि एक सामान्य सहायक प्रविष्टि है जो एक शब्द या शब्द समूह से अन्य पर्यायवाची शब्द समूह की ओर निर्दिष्ट करती है। नियमांक LA'3 के अनुसार यह निम्नांकित पाँच प्रकार की होती है–

1. **सजातीय नाम प्रविष्टि** (Generic Name Entry)–सामान्यः नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि उन शीर्षकों के अन्तर्गत निर्मित होती है जो उक्त ग्रन्थ की वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों और ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियों में समाविष्ट नहीं हो सकता है और उपयोगकर्ताओं द्वारा उनके अन्तर्गत पाठ्यसामग्री खोजने की सम्भावना बनी रहती है। वस्तुतः इनकी निष्पत्ति ग्रंथ

नोट:

निर्देशी प्रविष्टियों से मानी जाती है। इसी कारण इनको द्वितीय क्रम में व्युत्पन्नता की प्रविष्टियाँ (Entries of second order of derivation) कहते हैं।

2. ग्रन्थमाला–सम्पादक नाम प्रविष्टि (Editor of Series Entry)
3. छद्म नाम वास्तविक नाम प्रविष्टि (Pseudonym Real Name Entry)
4. शब्द परिवर्ती रूप प्रविष्टि (Variant-Form of Word Entry)
5. वैकल्पिक नाम प्रविष्टि (Alternative Name Entry)

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि की संरचना

सीसीसी नियमांक LA1 के अनुसार इस प्रविष्टि में निम्नलिखित तीन अनुच्छेद होते हैं–

1. **निर्देशित शीर्षक अनुच्छेद**–यह अनुच्छेद अनुवर्ती रेखा पर द्वितीय शीर्ष से आरम्भ होता है और अनुवर्ती पंक्ति प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती है। इस अनुच्छेद में निर्देशित शीर्षक अंकित किया जाता है।
2. **द्वितीय अनुच्छेद**–यह अनुच्छेद अनुवर्ती रेखा पर द्वितीय शीर्ष से आरम्भ होता है। इसमें आवश्यकतानुसार शब्द See अथवा 'See also' अंकित किये जाते हैं जिनको रेखांकित किया जाता है।
3. **अग्रानुच्छेद**–यह अनुच्छेद अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ होता है और अनुवर्ती पंक्ति भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती है। इसमें उस शीर्षक को अंकित किया जाता है जिससे निर्देशित किया गया है ।

टिप्पणी– यह विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि इन प्रविष्टियों में ग्रंथ की आख्या और क्रमांक अंक (Call Number) अंकित नहीं किये जाते जो ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियों में अवश्य अंकित किये जाते हैं।

नमूने की नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	PHILLIPS (Richard M), Ed.	
		See CLASSICS IN PSYCHOLOGY.

एकल व्यक्तिगत लेखकत्व
(Single Personal Authorship)

लेखक की परिभाषा Definition of Author

लेखक के बिना कोई भी ग्रन्थ अस्तित्व में नहीं आ सकता। अतः लेखक, ग्रन्थ का जन्मदाता, रचयिता या सृजनकर्ता होता है। उस पर ग्रन्थ में वर्णित विचारों और अभिव्यक्ति की शैली का उत्तरदायित्व होता है। **रंगनाथन** ने अपने सीसीसी में लेखक को अग्रलिखित दो भावों में बताया है–

नोट-

भाव 1– व्यक्ति (Person) जो किसी कृति का सृजन करता है अर्थात् उसमें सन्निहित विचार और अभिव्यक्ति का सृजन करता है।

भाव 2– समष्टि निकाय (Corporate body) जिस पर किसी कृति का उत्तरदायित्व होता है अर्थात् उसमें सन्निहित विचार और अभिव्यक्ति का उत्तरदायित्व होता है।

लेखकत्व के प्रकार Type of Authorship

लेखकत्व दो प्रकार के होते हैं–

1. समष्टिगत लेखत्व
2. व्यक्तिगत लेखकत्व

व्यक्तिगत लेखक की परिभाषा Definition of Personal Author

जब किसी कृति की रचना के लिये एक या अधिक व्यक्ति निजी क्षमता में उत्तरदायी होते हैं जो उस कृति को व्यक्तिगत लेखक की कृति कहा जाता है और उन व्यक्तियों को व्यक्तिगत लेखक कहते हैं। रंगनाथन ने व्यक्तिगत लेखक की परिभाषा इस प्रकार की है, "व्यक्ति, लेखक के रूप में अर्थात् कृति में निहित विचारों और उनकी अभिव्यक्ति का पूर्ण उत्तरदायित्व उस पर निजी क्षमता में होता है और किसी समष्टि निकाय के अन्तर्गत उस पद पर वह व्यक्ति आसीन हो नहीं होता न ही उस निकाय पर होता है

व्यक्तिगत लेखक की कृतियों को पुनः सीसीसी के अनुसार दो वर्गों में बांटा गया है–

1. एक से अधिक व्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियाँ।
2. एकल व्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियाँ।

एकल व्यक्गित लेखक : शीर्षक का वरण

Choice of Heading of Single personal Author

जब किसी कृति की रचना एवं उसमें वर्णन किए गए विचार एवं अभिव्यक्ति के लिये मात्र एक ही व्यक्ति उत्तरदायी हो तो उस कृति को एकल व्यक्तिगत लेखकत्व की कृति कहते हैं।

सीसीसी में एकल व्यक्तिगत लेखकत्व की कृतियों की मुख्य प्रविष्टियों के शीर्षक के वरण के लिये किसी विशिष्ट नियम का समावेश नहीं है। अतः इस प्रकार की कृतियों के लिये सीसीसी में नियमांक MD1 प्रयुक्त किया गया है जो इस प्रकार है–

"शीर्षक का निर्माण निम्नलिखित में से अग्रतम (Earliest) के अनुसार होगा जो ग्रन्थ स्वीकार करता हो और .....

1. ग्रन्थ की आख्या (Title);
2. सह सहकारकों का नाम;
3. एकल सहकारक (Collaborator) का नाम;
4. एक अथवा दो अथवा अधिक छद्‌यनाम (Pseudonym);
5. सह समष्टिगत लेखकों के नाम;
6. सहव्यक्तिगत लेखक और सह समष्टिगत लेखक का नाम;

नोट-

7. एक समष्टिगत लेखक का नाम;
8. सहव्यक्तिगत लेखकों के नाम; और
9. एकल व्यक्तिगत लेखक का नाम;

यह नियम सीसीसी का आधारभूत नियम है और अन्य समस्त प्रकार की कृतियों के सूचीकरण के लिए भी मार्गदर्शक का काम करते हैं। अतः इसको सदैव याद रखना चाहिए।

एकल व्यक्तिगत लेखकत्व : शीर्षक उपकल्पन

Rendering of Heading of Single Personal Author

उपकल्पना से अभिप्राय शीर्षक के स्वरूप (Form) से है। व्यक्तिगत नामों के उपकल्पना से संबंधित नियम सीसीसी के अध्याय JA में बताए गये हैं।

अधिकांश प्राचीन व्यक्तिगत नाम एक शब्द के होते हैं। अतः उनके उपकल्पन में कोई विशेष समस्या नहीं आती है; जैसे—

1. Aristotle
2. Valniki
3. Kauitlya
4. Kalidas

परन्तु आधुनिक व्यक्तिगत नाम एक से अधिक शब्दों में निर्मित होते हैं। अतः उन नामों के उपकल्पन में निम्नलिखित क्रम को बताया गया है—

1. व्यष्टिकृत पद (Individualising element),
2. द्वितीय पद (Secondary element), और
3. प्रविष्टि पद (Entry element)।

जैसे—

RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892 - 1972)

उपर्युक्त उदाहरण में जन्म और मृत्यु का वर्ष बताया गया है। स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप ग्रन्थालय इसको छोड़ सकता है। इन इकाइयों में सामान्यतः इसको छोड़ दिया गया है। कभी-कभी उपलब्ध होने पर अंकित किया गया है।

व्यक्ति का नाम उपकल्पित करने में नाम के संलग्न (Attachments) तथा सम्मानसूचक शब्द, जैसे—Dr, Prof, Pdt, Sir, Rai, Saheb, Padmashri आदि और शैक्षणिक पद्धतियाँ, जैसे—M.A, MSc. Ph.D. आदि सामान्य छोड़ दिये जाते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शीर्षक में व्यक्ति का विशुद्ध नाम अंकित किया जाता है।

आधुनिक पश्चिमी और अधिकांश भारतीय नामों से कुलनामों (Surnames) लगाने का प्रचलन है जो व्यक्ति नाम के अन्त में उपयोग किये जाते हैं। सामान्यतः उनको प्रविष्टि पद बनाया जाता है। उनको रोमन में बड़े अक्षरों में लिखा जाता है। साधारणतया यह एक शब्दीय होते हैं। कभी-कभी दो या तीन शब्द भी हो सकते हैं। शेष भाग को उनके बाद प्राकृतिक क्रम में वृत्ताकार कोष्ठक में अंकित किया जाता है। उसके बाद दूसरे वृत्ताकार कोष्ठक में व्यक्ति का जन्म और मृत व्यक्तियों के संबंध में मृत्यु वर्ष भी अंकित किया जाता है। जैसे—

नोट-

एक शब्दीय प्रविष्टि पद

Tagore (Rabindra Nath) (1861 - 1941).

Gandhi (Mohandas Karamchand) (1869 - 1948)

Dewey (Melvil) (1851 - 1931)

दो शब्दीय प्रविष्टि पद

Das Gupta (S)

Sen Gupta (B)

Krishna Menon (V.K)

तीन शब्दीय प्रविष्टि पद

Dev Rai Mahasai (Munindra).

योजकीय (Hyphenated) प्रविष्टि पद

Day - Lewis (Cecil).

बिना कुलनाम वाले नाम

Jaishankar Prasad. Rajendra Prasad. Sri Prakash.

आख्या अनुच्छेद के उपकल्पन के सम्बन्ध में मुख्य बिन्दु

आख्या अनुच्छेद में सर्वप्रथम ग्रन्थ की आख्या अंकित की जाती है। यदि आख्या के आरम्भ में कोई उपपद (Article) अर्थात् A, An और The तथा सम्मान सूचक शब्द (Honorific); जैसे Holy, Srimad आदि हो तो उसको छोड़ देते हैं। यदि आख्या बड़ी हो तो उसमें से अनावश्यक अंश मध्य और अन्त में से छोड़े देते हैं। यदि मध्य में से छोड़ देते हैं जो उसके स्थान पर तीन बिन्दु और यदि अन्त में से छोड़ा जाये तो शब्द etc जोड़ देते हैं।

उसी पैराग्राफ में पूर्ण विराम के बाद यदि कोई हो तो, संस्करण के सम्बन्ध में सूचना अंकित की जाती है। प्रथम संस्करण की सूचना अंकित नहीं की जाती। द्वितीय और आगामी संस्करणों की सूचना अग्रानुसार अंकित की जाती है। यदि संस्करण का कोई विशिष्ट नाम हो तो उसको भी अग्रानुसार अंकित किया जाता है—

Ed 2.

New ed.

Authorised Ed

Centenary Ed.

उसी पैराग्राफ में पूर्ण विराम के बाद यदि हो तो सहकारक विवरण (Collaborator statement) अंकित किया जाता है। सर्वप्रथम संक्षेप में सहकारक का काम और तत्पश्चात् उसका विशुद्ध नाम प्राकृतिक क्रम में अंकित किया जाता है।

जैसे—

Ed by Ram Nath Sharma.

Tr by S N Agrawal.

Ed by S. K Jain ; ill by J K Sharma.

नोट-

ग्रन्थमाला टिप्पणी अनुच्छेद Series Note Section

सीसीसी ए–ग्रंथमाला और छद्म ग्रन्थमाला (pseudo-series) को मान्यता देता है। ग्रन्थमाला से तात्पर्य ग्रन्थों के एक संघात (set) के सामूहिक नाम से है।

ग्रन्थमाला टिप्पणी वृत्ताकार कोष्ठक में बन्द करके अंकित की जाती है। यदि ग्रन्थमाला के आरम्भ में कोई उपपद (Article) अर्थात् A, An और The हो या कोई सम्मानसूचक शब्द हो तो उसको छोड़ देते हैं। ग्रन्थमाला के नाम के बाद पूर्ण विराम लगाकर उसी कोष्ठक में यदि कोई हो तो ग्रन्थमाला सम्पादक का विशुद्ध नाम अंकित किया जाता है। नाम से पूर्व शब्द 'Ed by' लिखा जाता है। उसके बाद पूर्ण विराम के बाद ग्रन्थमाला में ग्रन्थ की संख्या इण्डो–अरेबिक अंकों में लिखते हैं।

उदाहरण–

(Ranganathan aesies in library science 25).

(Agra University publication series. Ed by Ram Nath Shukla 23)

(Vikram University library science series. Ed by Anil kumar jain and sudhir kumar 24).

(Home University library series. Ed by john smith and others. 6).

इसी प्रकार कभी–कभी किसी ग्रन्थ में एक से अधिक ग्रन्थमाला होती हैं। यदि वे स्वतंत्र हों तो प्रत्येक को पृथक अनुच्छेद के रूप में इस प्रकार लिखते हैं।

उदाहरण–

(Ranganathan series in library science. 2.)

(Mardras Library Association, publication series. 21)

वैकल्पिक नाम (Alternative name) और आश्रित (dependent) ग्रन्थमालाओं को एक ही वृत्ताकार कोष्ठक में उसी अनुच्छेद में अंकित करते हैं।

उदाहरण–

(Kashi Sanskrit series or Haridas Sanskrit granthamala.68).

(Kashi Sanskrit series or Haridas Snskrit granthamala. 88. kavya section. 12.)

सीसीसी में तीन प्रकार की छद्म ग्रंथमालाओं (Pseudo-series) को भी मान्यता दी गई है। प्रथम प्रकार की छद्म ग्रन्थमाला में, "लेखक के नाम को संस्करण के नाम के साथ ग्रंथमाला का नाम माना जाता है।" दूसरे प्रकार की छद्म ग्रन्थमाला में, "लेखक के नाम को सजातीय आख्या (Generic title) के साथ ग्रंथमाला का नाम माना जाता है।" तृतीय प्रकार की छद्म ग्रन्थमाला में, "सजातीय आख्या को ग्रन्थमाला का नाम माना जाता है।" (सीसीसी पृ. 143)।

जैसे–

उदाहरण

(Shaw (George Bernard). New varoium ed. 17)

(Shukla (Ram Nath). Funamentals of economics. 5)

(Ramsay (William), Ed Text books of physical chemistry. 15)

नोट-

सूचीकृत मुखपृष्ठ Catalogued Titles

मुख्यपृष्ठ 1

सहकारक ग्रंथमाला टिप्पणी और निर्मित करते हुए छद्म कड़ी (pseudo link) के साथ एकल लेखक का ग्रन्थ)

CLASSIFIED CATALOGUE CODE WITH ADDITIONAL RULES FOR DICTIONARY CATALOUGE CODE

S R Rangannathan

Assisted by
A Neelameghan

Asia Publishing House

Bombay New Delhi Madras Calcutta London

1964

Other information

Half title page : Ranganathan series in library science; 2 Back of title page

Call number : 2 : 55N3 qN64

Accession Number : 27893

Edition 5, 1964

Shiyali Ramamrita Ranganathan (1892)

Arashanapalai Neelameghan (1927)

मुख्य प्रविष्टि

	2:55N3	qN64
		RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972). Classified catalogue code with additional rules for dictionary catalogue. Ed 5. Assis by Arashanapali Neelameghan. (Ranganathan series in library science. 2).
	27893	

नोट-

पत्रक का पश्च भाग–संकेत (Traching)

	Code, Classified catalogue code. Classified catalogue code. Cataloguing, Library science. Technical treatment, Library science. Library Science. Ranganathan (Shiyali Ramamrita) (1892-1972). Neelameghan (Arashnapali) (1927), Assis. Ranganathan series in library science.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ

शृंखला

2:55N3q

2	=	Library Science (Sougth link)
	↓	
2:	=	(False link)
	↓	
2:5	=	Technical Treatment in Library Science (Sougth link)
	↓	
2:55	=	Cataloguing in Library Science (Sougth link)
	↓	
2.55N3	=	Classified Catalogue Code (Sougth link)
	↓	
2:55N3	q =	code c (Sougth pseudo link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–1.

	CODE	CLASSIFIED CATALOGUE Code.
		For Code of the kind, see the classified part of the catalogue under the call Number beginning with 2:55N3q

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–2.

	CLASSIFIED CATALOUGE Code.	
		For documents in this class and its Subdivisions, see the classified part of the catalogue under the class Number 2:55N3

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–3.

	CATALOGUGIN, LIBRARY SCIENCE.	
	Class	For documents...... Number 2:55

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–4.

	TECHNICAL TREATMENT, LIBRARY SCIENCE	
	Class	For documents...... Number 2:5

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–5.

	LIBRARY SCIENCE.	
		For documents... Class Number 2

टिप्पणियाँ–

1. प्रथम वर्ग निर्देशी प्रविष्टि ग्रन्थांक (Book number) की छद्म कड़ी से निर्मित हुई है जिसको सीसीसी के संशोधित नियमाक KB93, KB94 और KF25 (Cataloguing practice by S R Ranganathan P474 - 5) के अनुसार निर्मित किया गया है।
2. द्वितीय वर्ग निर्देशी प्रविष्टि में ही केवल पूर्ण रूप से निर्देशी शब्द अंकित किये गये हैं। शेष में आरम्भ के दो शब्द और अंत के दो शब्द अंकित किये गये हैं। यह प्रणाली अभ्यास के लिए अपनायी गई है। आगे भी ऐसा ही किया जायेगा। वैसे ग्रन्थालय में समस्त वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों में यह शब्द पूर्ण से अंकित किये जाते हैं और उनको मुद्रित करवा लिया जाता है।

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

	RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972).	
		Classified catalogue code. Ed 5. 2:55N3 qN64

टिप्पणी–

1. शीर्षक अनुच्छेद में मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक को यथावत अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ करते हुए अंकित किया गया है। अनुवर्ती पंक्ति को भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ किया जाता है।
2. द्वितीय अनुच्छेद में ग्रन्थ की मुख्य आख्या द्वितीय शीर्ष से अंकित की गई है। पूर्ण विराम के पश्चात् संस्करण विवरण अंकित किया गया है। इसकी अनुवर्ती पंक्ति भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ होती है।

नोट-

3. इस पंक्ति में पर्याप्त स्थान न होने के कारण निर्देशांक अर्थात् क्रमांक अंक (Call number) को अनुवर्ती पंक्ति में यथासम्भव दाहिनी ओर अंकित किया गया है। इसको पेन्सिल से लिखना चाहिए। वर्गांक (Class number) और ग्रन्थांक (Book number) के मध्य दो अक्षरों का स्थान छोड़ा जाता है।

सहकारक प्रविष्टि

	NEELAMEGHAN (Arashanapalai) (1927), Assis,	
		Ranganathan: Classified catalogue code. Ed5.
		2:55N3 qN64

टिप्पणी–

1. सहकारक का पूरा विशुद्ध नाम अंकित किया गया है। उसको अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से आरम्भ किया गया है। अनुवर्ती पंक्ति भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ की जाती है। जन्म वर्ष जोड़ने के उपरान्त विवरणात्मक शब्द 'Assis' अंकित किया गया है जिसको संक्षेप में लिखा गया है और बड़े अक्षर से आरम्भ किया गया है। उससे पूर्व अर्द्धविराम (Comma) लगाया गया है।
2. द्वितीय अनुच्छेद को अनुवर्ती रेखा पर द्वितीय शीर्ष से आरम्भ किया गया है। इसमें सर्वप्रथम मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद का प्रविष्टि पद अंकित किया गया है। तत्पश्चात् कोलन लगाकर, ग्रन्थ की मुख्य आख्या तथा संस्करण विवरण अंकित किया गया है। अनुवर्ती पंक्ति प्रथम शीर्ष से आरम्भ करते हैं।
3. निर्देशांक (Index number) को उसी रेखा में जितना यथासम्भव दाहिनी ओर अगली रेखा में अंकित करते हैं। इसको पेन्सिल से लिखते हैं।

ग्रन्थमाला प्रविष्टि

	RANGANATHAN SRIES IN LIBRARY SCIENCE.	
		Ranganathan: Classified catalogue code. Ed5.
		2:55N3 qN64

टिप्पणी–

1. निर्देशांक को अगली रेखा में यथा सम्भव दाहिनी ओर अंकित किया जाता है। इसको पेन्सिल से लिखना चाहिए।

2. द्वितीय अनुच्छेद में प्रथम और द्वितीय शीर्ष के मध्य में ग्रन्थमाला में ग्रन्थ के क्रमांक को अंकित किया गया है। तत्पश्चात् उसी रेखा में द्वितीय शीर्ष से मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का प्रविष्टि पद अंकित किया गया है। तत्पश्चात् कोलन लगाने के पश्चात् ग्रन्थ की मुख्य आख्या और संस्करण विवरण अंकित किया गया है।
3. ग्रंथमाला के पूरे नाम को रोमन बड़े अक्षरों में अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष से अंकित किया गया है। अनुवर्ती पंक्ति को भी प्रथम शीर्ष से आरम्भ किया जाता है।

नोट-

मुख्यपृष्ठ–2

(सहकारक के साथ अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Cross reference entry) की मांग करते हुए एकल लेखक का ग्रन्थ)

W.C. Berwick Sayers

A MANUAL OF CLASSIFICATION FOR LIBRARIES

Fourth Edition

Completely Revised and Partly Rewritten by

Arthur Maltby

London

Andra Deutsch

1967

Other Information :

Call number : 2:51 N67

Accession number : 25197

नोट : Contains a bibliography on the subject form P. 333 - 351. It is to be brought into the notce of the readers. Its class number 2 : 51a

मुख्य प्रविष्टि

	2:51	N67
		SAYERS (william Charles Berwick) (1881-1960).
		Manual of classification for libraries. Ed 4. Rev by
	Arthur	Maltby
	25197	

संकेत

2:51a	P333-51	Classification, Library science. Technical treatment, Library science. Library science
		Bibilography, Classification, Library science. Sayers (William Charles Berwick) (1881-1960). Maltby (Arthur), Rev. Berwick Sayers (William Charies) (1881-1960).

टिप्पणी–

1. शीर्षक अनुच्छेद में लेखक का पूरा नाम और जन्म तथा मृत्यु वर्ष ज्ञात करके अंकित कर दिये गये हैं।
2. आख्या अनुच्छेद में से आरम्भिक उपपद 'A' छोड़ दिया गया है।

अन्तविर्षयी प्रविष्टि

	2:51a	
	P 333-51	See also 2:51 N67 Sayeres. Manual of classification forlibraries. Ed 4.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

श्रृंखलाएँ (Chains)

वर्गांक : मुख्य प्रविष्टि : 2:51

2 = Library Science (Sougth Link)

↓

2: = (False link)

↓

2:5 = Techinical Treatment in Library Science (Sougth Link)

↓

2:51 = Classification in Library Science (Sougth Link)

वर्गांक : अन्तर्विषयी प्रविष्टि : 2.51 a

2:51 a = Bibliography of Classification in Library Science (Sougth Link)

टिप्पणी– क्योंकि वर्गांक 2:51 तक की शृंखला ऊपर बन चुकी है। अतः केवल उससे आगे की ही शृंखला निर्मित की गई है।

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–1

	CLASSIFICATION, LIBRARY SCIENCE.	
		For documents in this Class and is Subdivisions, see the Classified part of the catalogue under the class Number 2:51

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–2

	TECHNICAL TREATMENT, LIBRARY SCIENCE.	
		For documents.. Class Number 2:5

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–3

	LIBRARY SCIENCE.	
		For documents.. Class Number 2

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–4

	BIBLIOGRAPHY, CLASSIFICATION, LIBRARY SCIENCE.	
	Class Number	For documents.................................... 2:51a

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

लेखक निर्देशी प्रविष्टि

	SYAERS (William Charies Berwick) (1881-1960).	
		Manual of classification for libraries. Ed 4. 2:51 N67

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि

		MAL BY (Arthur), Rev.
	Ed	Sayers : Manual of classification for libraries. 4. 2:51 N67

नोट-

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

	BERWICK SAYERS (William Charles) (1881-1960).	
		See SAYERS (William Charles Berwick) (1881-1960).

मुखपृष्ठ–3

(ग्रन्थमाला, आख्या परिवर्तन और संहिता संबंधी सम्बद्ध ग्रन्थ की टिप्पणियों के साथ एकल लेखक की कृति)

CATALOGUING PRACTICE
S R ranganathann

Assisted by
G Bhattacharyya

Documentation Research and Training Center
Indian Statistical Institute Bangalore
Asia Publishing House
London

Other Information :
Half title page Shiyali Ramamrita Ranganathan (1892 - 1972)
Ranganathan series in library science ; 25 Ganesh Battacharyya (1932)
Call Number : 2:55N3 vN74 Second Edition (1974)
Accession Number : 94781

नोट : First edition was published under the title : Library catalogue : Fundamentals and procedure'

मुख्य प्रविष्टि

	2:55N3	vN74
		RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1882-1972) Cataloguing practice. Ed 2 Assis by Ganesh Bhattacharya (Ranganathan seriece in library science. 25) "Published previously as Library catalogue: Fundamentals and procedure." "For an associated code see 2:55N3 qN64"

नोट-

टिप्पणियाँ : उपर्युक्त मुख्य प्रविष्टि में निम्नानुसार तीन टिप्पणियाँ अंकित की गई हैं—

1. सम्बद्ध ग्रन्थ (Associated book) टिप्पणी
2. आख्या परिवर्तन टिप्पणी
3. ग्रन्थमाला टिप्पणी

संकेत

Practice book, Classified catalogue code.
Classified catalogue code.

Technical treatment, Library science.
Library science.

Ranganathan (Shiyali Ramamrita)
(1892-1972).

Ranganathan (Shiyali Ramamrita)
(1892-1972).

Battacharryya (Ganesh) (1932), Assis.

Ranganathan series in library science.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि Class Index Entries

शृंखला (Chain)

2 = Library Science (Sougth Link)
↓
2 : = (False link)
43
↓
2:5 = Technical Treatment in Library Science (Sougth Link)
↓
2:55 = Cataloguing in Library Science (Sougth Link)
↓
2:55N3 = Classified Catalogue Code (Sougth Link)
↓
2:55N3v = Practical on Classified Catalogue Code (Sougth Link)
↓

टिप्पणी—अन्तिम कड़ी, छंद्म कड़ी (Pseudo link) हैं जिसकी निष्पत्ति ग्रन्थांक से हुई है।

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ–1

	PRACTICAL, CLASSIFIED CATALOGUE code.	
		For pratical book of this kind, see the classified part of the catalogue under the call Number beginning with 2:55N3 v

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ–2

	CLASSIFIED CATALOGUE code.	
		For documents in this class and its Subdivisions, see the classified part of the catalogue under the class number 2:55N3

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ–3

	CATALOGUING, LIBRARY SCIENCE.	
		For documents.. Class Number 2:55

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ–4

	TECHNICAL TREATMENT, LIBRARY SCIENCE.	
		For documents.. Class Number 2:5

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ–5

	LIBRARY SCIENCE:	
	Class Number	For documents.. 2

टिप्पणी–

1. अन्य वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ पूर्ववत् सामान्य हैं। इनको किसी ग्रन्थालय में निर्मित करने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि यह मुख्य पृष्ठ 1 में बनाई गई है।
2. प्रथम वर्ग निर्देशी प्रविष्टि ग्रन्थांक की छद्म कड़ी से निर्मित की गई है। अत: निर्देशात्मक शब्दों को आवश्यकतानुसार परिवर्तित करते हैं।

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

लेखक निर्देशी प्रविष्टियाँ

	RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972).	
	Fundamentals and procedure." 2:55N3 vN74	Cataloguing practice. Ed 2. "Published previously as Liabrary catalogue. :

	RANGANATHAN (Shiyali Ramamrita) (1892-1972).	
		Library catalogue : Fundamentals and procedure "Published later as Cataloguing practice. Ed2" 2:55N3 vN74

टिप्पणी–

1. यदि ग्रन्थालय में पूर्ववर्ती आख्या उपलब्ध है तो उसकी मुख्य प्रविष्टि और लेखक प्रविष्टियाँ सूची में निकालकर उन पर उपरोक्तानुसार टिप्पणी अंकित कर दी जायेगी और नवीन लेखक प्रविष्टि बनाने की आवश्यकता नहीं है।

नोट-

2. आख्या परिवर्तन हो जाने पर पूर्ववर्ती आख्या को अंकित करते हुए इतर प्रविष्टि लेखक के अन्तर्गत निर्मित होगी जिसका नमूना ऊपर बताया गया है।

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि

	BHATTACHARYYA (Ganesh) (1932). Assis	
		Ranganathan: Catalogung Practice. Ed 2 2:55N3 vN74

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि

	RANGANATHAN SERIES IN LIBRARY SCIENCE.	
	25	Ranganathan: Cataloguing Practice. Ed 2 2:55N3 vN74

सह व्यक्तिगत लेखकत्व के ग्रंथों का सूचीकरण
(Cataloguing of Books of Joint Personal Authorship)

सहलेखक Shared Authorship

जब दो या दो से अधिक लेखक संयुक्त रूप से किसी ग्रन्थ की रचना करते हैं तो उन्हें सहलेखक कहते हैं। जहाँ शब्द 'संयुक्त रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है अर्थात् समस्त लेखक आपस में मिल–जुल कर समस्त ग्रन्थ की रचना करते हैं और समस्त ग्रन्थ में वर्णित विचारों और अभिव्यक्त के लिये संयुक्त रूप से उत्तरदायी होते हैं। किसी भी लेखक का उत्तरदायित्व ग्रन्थ के किसी अंश की रचना पर नहीं होता है। यदि विभिन्न लेखकों का उत्तरदायित्व ग्रन्थ के विभिन्न अंशों की रचना पर है तो उसको सहलेखकों की रचना नहीं कहते हैं बल्कि समिश्र ग्रन्थ (Composite book) कहते हैं। इस प्रकार के ग्रन्थों के सूचीकरण के लिए अलग से नियम बताये गये हैं।

रंगनाथन ने अपने सीसीसी में सहलेखक की परिभाषा इस प्रकार दी है, 'दो या दो से अधिक लेखक, व्यक्तिगत या समष्टिगत, जो कृति में सन्निहित विचार और अभिव्यक्ति के लिये उत्तरदायी हैं, वह अंश जिसके लिये उनमें से प्रत्येक अलग रूप से उत्तरदायी है न तो निर्दिष्ट किया गया है और न ही पृथक्करणीय है। "(सीसीसी पृ. 127). इस परिभाषा से स्पष्ट है कि व्यक्ति भी सहलेखक और समष्टि भी हो सकते हैं।

नोट-

सहव्यक्तिगत लेखकों की कृतियों के प्रकार

Types of Books of Shared Authorship

सीसीसी के अनुसार सहव्याकृतगत लेखकों की कृतियाँ की सूचीकरण की दृष्टि से दो वर्गों में बाँटा गया है—

1. दो सहव्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ
2. तीन या अधिक सहव्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ

दो सहव्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ

दो सहलेखकों की कृतियों के लिए मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक के वरण के लिये सीसीसी नियमांक MD32 प्रयुक्त होता है जो इस प्रकार है, "यदि मुखपृष्ठ पर दो और केवल दो सहलेखकों के नाम अंकित हैं तो दोनों नामों को शीर्षक के रूप में योजक शब्द से जोड़ते हुए प्रयुक्त किया जायेगा।"

मुख्यपृष्ठ–1

(दो सहव्यक्तिगत लेखक तथा एक सहकारक)

TRADING IN LPG

BY

Shankar Dayal Sharma

and

Prof. Om Prakash

Revised by

S.P. mittal

Metropolitan Book Co.

Delhi 1979

Other Information

Call number : X8(F558) : 5 N79 Accession Number : 55213

Fourth Edition : 1979

मुख्य प्रविष्टि

	X8:(F558):5	N79
		SHARAMA (Shankar Dayal) and OM PRAKASH. Trading in LPG. Ed 4. Rev by S P Mittal.
	55213	

नोट-

टिप्पणी– 1. दोनों लेखकों के नामों को जिस क्रम से वह नाम मुखपृष्ठ पर अंकित हैं, योजक शब्द and से जोड़ते हुए शीर्षक में अंकित किया गया है।

2. दूसरे नाम में कुल नाम न होने के कारण सम्पूर्ण नाम को यथाक्रम में रोमन बड़े अक्षरों में अंकित किया गया है।

संकेत

Trade, Fuel gas. Fuel gas. Industry, Economics. Industry, Economics Economics. Sharma (Shankar Dayal) and Om Prakash Om Prakash and Sharma (Shankar Dayal). Mittal (S P). Rev.

शृंखला (Chain)

X = Economics (Sougth link)
↓
X8 = Industry in Economics (Sougth link)
↓
X8 (F5558) = Fuel gas Industry in Economics (Sougth link)
↓
X8 (F5558) = (False link)
↓
X8 (F5558)5 = Trade in fuel gas (Sougth link)
55

टिप्पणी– उपरोक्त शृंखला में सीसीसी के नियमों के अनुसार विषय विधि से प्राप्त वर्गांक के भाग (F558) को एक अंक मानकर एक कड़ी का निर्माण किया गया है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ–1

	TRADE, FUEL GAS.
	For documents in this class and its Subdivisions, see the classified part of the catalogue under the Class Number X8(F558):5

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ–2

	FUEL	GAS INDUSTRY, ECONOMICS.
		For documents..
	Class	Number
		X8(F558)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ–3

	INDUS	TRY, ECONOMICS.
		For documents..
	Class	Number
		X8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ–4

	ECON	OMICS.
		For documents..
	Class	Number
		X

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	SHAR	MA (Shankar Dayal) and OM PRAKASH
		Trading in LPG. ED 4. X8(F558):5 N79

नोट-

लेखक निर्देशी प्रविष्टि

	OM PRAKASH and SHARMA (Shankar dayal)	
		Trading in LPG. ED 4. X8(F558):5 N79

टिप्पणी– दो सहलेखक होने पर प्रथम लेखक प्रविष्टि में दोनों नाम उसी क्रम में अंकित किये जाते हैं, जैसे मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में अंकित हैं। एक अन्य प्रविष्टि का निर्माण लेखकों के अन्तर्गत किया जाता है जिसमें उपरोक्तानुसार लेखकों के नामों का क्रम पलट दिया जाता है।

सहकारक प्रविष्टि

	MITTAL (S P), Rev.	
		Sharma and Om Prakash: Trading in LPG. ED 4. X8(F558):5 N79

टिप्पणी– दो लेखक होने पर दोनों के प्रथम पद योजक चिन्ह लगाकर द्वितीय अनुच्छेद में अंकित किये जाते हैं।

मुखपृष्ठ 2

(दो सहव्यक्तिगत ग्रन्थकार के साथ सहकारक, ग्रंथमाला और ग्रन्थ गला सम्पादक)

THE UNIVERSITY LIBRARY

The Organization, Administration and Functions of Academic Libraries

By
Louis Round Wilson
&
Morries F. Tauber

Edited by
Richard S. Angell

नोट-

Second Edition
Columbia University Press
N.Y 1956

Other Information
Half title page : Columbia Studies in Library Science, Edited by Robert D. Leigh : no. 8

Call Number : 234 N56 Accession Number : 32157

मुख्य प्रविष्टि

	234	N56
		WILSON (Louis Round) and TAUBER (Morries F) University library: The organization, administration and functions of academic libraries. Ed 2. Ed by Richard S Angeli (Columbia studies in library science. Ed by Robert D Leigh. 8)
	32157	

संकेत

UNIVERSITY LIBRARY.

Academical library.

Library Science.

Wilson (Louis Round) and Tauber (Morries F)

Tauber (Morries F) and Wilson (Louies Round).

Angell (Richard S), Ed.

Columbia studies in library science.

Leigh (Robert D), Ed.

नोट-

शृंखला (Chain)

2 = Library scinece. (sougth link)
↓
23 = Acedmical Library (Sougth link)
↓
234 = University library (sougth link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–1

	UNIVERSITY LIBRARY.	
		For documents in this class and its Subdivisions, see the classified part of the catalogue under the Class Number 234

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–2

	ACADEMICAL LIBRARY.	
		For documents .... Class Number 23

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–3

	LIBRARY SCIENCE.	
		For documents .... Class Number 2

नोट-

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

	WILSON (Louis Round) and TAUBER (Morries F)	
		University library. Ed 2. 234 N56

लेखकों निर्देशी प्रविष्टियाँ

	TAUBER (Morries F) and WILSON (Louis Round)	
		University library. Ed 2. 234 N56

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि

	ANGELL (Richard S), Ed.	
		Wilson and Tauber : University library. Ed 2. 234 N56

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि (Series Index Entry)

	COLUMBIA STUDIES IN LIBRARY SCIENCE.	
	8	Wilson and Tauber : University library. Ed 2. 234 N56

टिप्पणियाँ—

1. ग्रन्थमाला सम्पादक होने का ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. दो सहलेखक होने पर दोनों के नाम प्रथम पद संयोजक 'and' द्वारा जोड़कर सहकारक और ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टियों में द्वितीय अनुच्छेद में अंकित करते हैं।

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference index Entry)

ग्रन्थमाला–सम्पादक प्रविष्टि (Editor-of-series CRIE)

	LEIGH (Robert D), Ed.	
		See COLUMBIA STUDIES IN LIBRARY SCIENCE.

टिप्पणी—ग्रन्थमाला–सम्पादक के अन्तर्गत नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि निर्मित होती है।

तीन या अधिक सहव्यक्तिगत ग्रन्थकारिता की कृतियाँ

Works of three or More joint Personal Authors

तीन या अधिक सहलेखकों की कृतियों के लिये मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक के वरण के लिये सीसीसी नियमांक MD33 प्रयुक्त होता है जो इस प्रकार है, "यदि मुखपृष्ठ पर तीन या अधिक सहलेखकों के नाम अंकित हैं तो अकेले प्रथमांकित नाम को शीर्षक के रूप में प्रयुक्त किया जायेगा और उसके पश्चात् शब्द 'and other' जोड़ दिये जायेंगे।"

मुखपृष्ठ-3

(तीन सहव्यक्तिगत लेखकों के साथ एक ही श्रेणी के दो सहकारक ग्रन्थमाला और दो ग्रन्थमाला सम्पादक)

ORGANIZATION BEHAVIOUR AND ADMINISTRATION
Cases, Concepts and Research Findings
By
Paul R. Lawrence
Jhon A. Seller
Editors
Amy Wonslow
And
Carlton B. Joeckel
1961
Homewood
Lllinois

Other Information
Half title page: The Irwin-Dorsey Series in Behavioural Science in Business; no 74
Edited by Lowell Martin and N.D Needham

Call Number: X;8 N61 Accession Number.: 89612

नोट-

नोट-

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	X:8	N61
		LAWRENCE (Paul R) and other. Organization, behaviour and administration: Cases, concepts and reserch findings. Ed by Amy Windows and Corton B Joeckel Irwin-Dorsey Seriesin behavioural science in business. Ed by Lowell Martin and Needham. 74
	89612	

टिप्पणी—

1. केवल प्रथमांकित लेखक का नाम शीर्षक में अंकित करते हैं।
2. आख्या अनुच्छेद में कृति के दोनों सम्पादकों के नाम आख्या के पश्चात् यथाक्रम में अंकित करते हैं।
3. इसी प्रकार टिप्पणी अनुच्छेद में ग्रन्थमाला के पश्चात् यथाक्रम में दोनों ग्रन्थमाला सम्पादकों के नाम अंकित करते हैं।

संकेत (Tracing)

Management, Economics
Economics.

Lawrence (Paul R) and others.
Windows (Amy) and jocekel (Carlton B). Ed.

Joeckel (Carlton B) and Winsliw (Amy), Ed
Lrwin-Dorsey series in behavioural
Science in business.

Martin (Lowell) and Needham (N D),
Ed.
Needham (N D) and Martain (Lowell), Ed.

शृंखला (Chain)

X	=	Economics (sougth link)
	↓	
X :	=	(False link)
	↓	
X : 8	=	Management in Economics (sougth link)

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entries)

	MANAGEMENT, ECONOMICS.	
		For document in this class and its subdivisions,
	see the classified part of the catalogue under the	
	Class Number	X:8

	ECONOMICS.	
		For document ....
	Class Number	X

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entries)

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entries)

	LAWRENCE (Paul R) and others.	
		Organization, behaviour and administration.
		X:8 61

टिप्पणी— 1. केवल एक लेखक निर्देशी प्रविष्टि ही उपरोक्तानुसार निर्मित होती है। दूसरे और तीसरे लेखकों से लेखक निर्देशी प्रविष्टियाँ निर्मित नहीं होती हैं।

2. आख्या अनुच्छेद में केवल मुख्य आख्या को अंकित करते हैं।

सहकारक : सम्पादक निर्देशक प्रविष्टियाँ

Collaborator : Editors Index Entries

	WINSLOW (Amy) and JOECKEL (Carlton B), Ed.	
		Lawrence and other: Organization, behaviour and
	administration.	
		X:8 N61

नोट-

	JOECKEL (Corryton B) and WINSLOW (Amy), Ed.	
		Lawrence and other: Organization, behaviour and administration. X:8 N61

टिप्पणी—

1. यदि एक ही श्रेणी के दो सहकारक हैं तो दो सहकारक प्रविष्टियाँ निर्मित होती हैं अर्थात् प्रथम में नाम उस क्रम में अंकित करते हैं, जैसे—मुख्य प्रविष्टि के आख्या अनुच्छेद में अंकित होते हैं और दूसरी में बदल दिये जाते हैं।
2. द्वितीय अनुच्छेद में सर्वप्रथम मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का प्रथम पद देते हैं। शब्द 'and other' जोड़ देते हैं। उसके पश्चात् मुख्य आख्या को देते हैं। अन्य ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में भी ऐसा ही होगा।

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि (Series Index Entry)

	IRWIN-DORSEY SERIES IN BEHAVIOURAL SCIENCE IN BUSINESSS.	
	74	Lawrence and other: Organization behaviour and administration. X:8 N61

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Series Index Entry)

	MARTIN (Lowell) and NEEDHAM (N D), Ed	
	74	**See** IRWIN - DORSEY SERIES IN BEHAVIOURAL SCIENCE IN BUSINESS.

	NEEDHAM (N D) and MARTIN (Lowell), Ed	
		See IRWIN - DORSEY SERIES IN BEHAVIOURAL SCIENCE IN BUSINESS.

नोट-

टिप्पणी— दो ग्रन्थमाला सम्पादक होने पर दो नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियों का निर्माण होता है। प्रथम में सम्पादकों के नाम उसी क्रम में अंकित किये जाते हैं; जैसे मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में अंकित हैं। द्वितीय में नामों का क्रम बदल जाता है।

मुखपृष्ठ–4

(चार सहव्यक्ति लेखक उपसर्ग (Prefix) के साथ फ्रैंच नाम, भाषा सहित अनुवादक का नाम)

American series on physics : no. 3 Editor : Alfred Muskett

TEACHING OF PHYSICS

By
Jean de la Fontaine
O. Stephens Spinks
Emily S. Doxter
Hanry j. Dibble

Tranclated from French by
knud jeppesen

Edition 1

American Book Company
New york Chicago Boston
1963

Other Information

Call Number : T : 3 (c) N63 Accession Number : 19728

नोट-

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	T:3 (c)	N63
	19728	LA FONTAINE (jean de) and others. Teaching of physics. Tr from Freach by knud jeppessen. (American series on physics. Ed by Alfred Muskett. 3)

टिप्पणियाँ—

1. व्यक्तिगत नाम में उपसर्ग होने के कारण प्रथम पद चुना जाता है।
2. यदि कृति अनुवाद हो और मूल भाषा का नाम मुख पृष्ठ पर अंकित हो तो उसको अनुवादक के नाम के साथ अंकित करते हैं।
3. प्रथम संस्करण की सूचना अंकित नहीं की जाती। अतः संस्करण विवरण न होने पर कृति का प्रथम संस्करण ही माना जाता है।

संकेत (Tracing)

	Physics: Teaching technique. Teaching techniques, Education. Education. La Fontaine (jean de) and other jappesen (kund), Tr. American series on physics. Musket (Alfred), Ed.

शृंखला (Chain)

T = Education (sougth link)
↓
T : = (False link)
↓
T : 3 = Teaning Teacher (sougth link)
↓
T : 3 (c) = Teaching Technique of physics (sougth link)

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	PHYSICSM TEACHING TECHNIQUE.	
	For document in this class and its subdivisions, see the classified part of the catalogue under the Class Number	
		T:3 (c)

	TEACHING TECHNIQUE, EDUCATION.	
	For document .... Class Number	
		T:3

	EDUCATION.	
	For document .... Class Number	
		T

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	LAFONTAINE (jean de) and other.	
		Teaching of Physics.
		T:3(c) N63

नोट-

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि (Collaborator Index Entry)

	JAPPESEN (kund), Tr.	
		La Fontaine and other: Teaching of physics. T:3(c) N63

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि (Serial Index Entry)

	AMERICAN SERIES OF PHYSICS.	
	3	La Fontaine and other: Teaching of physics. T:3(c) N63

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ (Cross Reference Index Entries)

वैकल्पिक नाम नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ (Alternative Name CRIE)

	FONTAINE (jean de).	
		See LA FONTAINE (jean de).

ग्रन्थमाला–सम्पादक नामान्तर प्रविष्टि (Editor-of-series CRIE)

	MUSKETT (Alfred), Ed.	
		See AMERICAN SERIES OF PHYSICS.

नोट-

मुखपृष्ठ–5

(चार लेखकों के साथ मिश्रित वर्ग (Complex Class) वाला वर्गांक अन्तर्विषयी प्रविष्टियों की आवश्यकता)

MACHANICS FOR ENGINEERS

Statics and Dynamics

By

Edward R. Maurer

Charles Carr

Roe L. John

(Second Edition.)

1986

Grove press inc.

New York

Other information

Call Number : B70Bd N86 Accession Number: 17892

अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ (Cros Reference Entries) हेतु वर्गांक:

1 B7 : 20bD Pages: 7 - 117

2. B7 : 30bD : Pages : 119 - 225

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	B70bD	N86
		MAURER (Edward R) and other. Machanics for engineers: statics and dynamics.
	Ed2. 17892	

नोट-

संकेत (Tracing)

Engineering, biasing Mechanics
Mechanics
Mathematics.
Engineering, biasing statics.
statics.
Engineering, biasing Dynamics.
Dynamics.
Maurer (Edward R) and other.

अन्तर्विषय प्रविष्टि (Cross Reference Entries)

	B7:20b	D
		See also B70bD N86 Maurer and other. Machanics for engineers. Ed 2. P7-117.

	B7:30b	D
		See also B70bD N86 Maurer and other. Machanics for engineers. Ed 2. P119-25.

शृंखलाएँ (Chain)

मुख्य प्रविष्टि का वर्गांक : B70bD

B = Mathematics (Sougth link)
↓
B7 = Mechanics (Sougth link)
↓
B70 = Indirector Digit
↓
B70b = inter-class phase relation (Bias) to be denoted by the term 'biasing'
B70bD = Mathematics for Engineers (Sougth link)

नोट-

1. अन्तर्विषयी प्रविष्टि का वर्गांक : B7 : 20bD

B7 : 2 = statics (Sougth link)
↓
B7 : 20 = indicator digit (False link)
↓
B7 : 20b = inter class phase relation (Bias) to be denoted by the term 'biasing'
↓
B7 : 20bd = statics for Engineers (Sougth link)

2. अन्तर्विषयी प्रविष्टि का वर्गांक : B7 : 30bD

B7 : 3 = statics (Sougth link)
↓
B7 : 30 = indicator digit (False Link)
↓
B7 : 30b = inter-class phase relation (Bias) to be denoted by the term 'biasing' (False link)
↓
B7 : 30bd = Dynamics for Engineers (Sougth link)

टिप्पणी– अन्तविर्षयी प्रविष्टियों के केवल उन अंशों से शृंखलाएँ निर्मित की गयी है जो मुख्य प्रविष्टि के वर्गांक के आगे की है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	ENGINEERING, biasing MECHANICS.	
	Class	For document in this class and its subdivisions, see the classified part of the catalogue under the Number B70bd

	MECHANICS.	
	Class	For document .... Number B7

नोट-

	MATHEMATICS.
	For document ....
	Class Number
	B

	ENGINEERING, biasing STATICS.
	For document ....
	Class Number
	B7:20Bd

	STATICS.
	For document ....
	Class Number
	B7:2

	ENGINEERING, biasing DYNAMICS
	For document ....
	Class Number
	B7:30bD

	DYNAMICS
	For document ....
	Class Number
	B7:3

नोट-

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	MAURER (Edward R) and other.	
		Mchanics for engineers. Ed 2. B70bd N86

छद्मनाम
(Pseudonym)

अनेक लेखक विशेष रूप से साहित्य के क्षेत्र में, साहित्य रचना के लिये छद्मनाम रखते हैं। यह प्रवृत्ति संसार के अनेक देशों और विभिन्न भाषाओं के साहित्यों में दिखाई देती है। उदाहरणार्थ, प्राचीन भारत में 'विष्णुगुप्त' ने कौटिल्य नाम से अपने ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' की रचना की। आधुनिक भारत में इसका सर्वाधिक प्रसिद्ध उदाहरण 'प्रेमचन्द' है जिनका वास्तविक नाम 'धनपतराय' था। आपने उर्दू में 'नवाबराय' के नाम से लेखन कार्य किया। हिन्दी साहित्य में छद्मनामों के अन्य उदाहरण हैं–'नीरज', 'बच्चन', 'नागार्जुन', 'शिवानी', 'एक भारतीय आत्मा' आदि। कवियों द्वारा अंगीकृत उपनाम 'सुमन', 'दिनकर', 'निराला' आदि भी इसी श्रेणी में आते हैं जिनको नाम के साथ प्रयुक्त किया जाता है। सामान्यतः इसके कई कारण हैं। अपने वास्तविक परिचय को छिपाना, शर्मीलापन, भीरूता, हंसी–मजाक, धोखा देना, घबराहट आदि। हमारी राय में इसका वास्तविक कारण है–कुछ लेखक यह समझते हैं कि हमें हमारे वास्तविक नाम से कोई विशेष सफलता नहीं मिली अर्थात् यह नाम रास नहीं आया, अतः यदि किसी अन्य नाम से लेखन कार्य करें तो सफलता प्राप्त हो सकती है अथवा हो सकता है कि वास्तविक नाम लम्बा और कठिन हो और वह कोई ऐसा नाम अंगीकृत करना चाहते हों जो सरलता से जनसाधारण की जुबान पर चढ़ जाये और वह लोकप्रिय हो जायें।

रंगनाथन ने अपने सीसीसी में छद्मनाम रखने वाले लेखक की परिभाषा इस प्रकार की है; "एक लेखक जो वास्तविक नाम से भिन्न कोई मिथ्या अथवा काल्पनिक नाम अथवा अन्य कोई विशिष्टता अपनाता है। छद्मनाम किसी लेखक को उसके जीवनकाल में अथवा जीवनोपरान्त अन्य व्यक्तियों द्वारा भी प्रदान किया जा सकता है अथवा वह स्वतः ही सहज भाव से आरम्भ हो जाता है।" (सीसीसी, पृष्ठ 127 - 8)। उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि,

1. वह लेखक के जीवनोपरान्त भी प्रचलित हो सकता है।
2. वह लेखक द्वारा अपनाया जा सकता है अथवा अन्य व्यक्तियों द्वारा भी उसको दिया जा सकता है अथवा स्वतः सूचीकरण ही सहज भाव से प्रचलित हो सकता है।
3. वह वास्तविक नाम से भिन्न कोई नाम; जैसे–'प्रेमचन्द' अथवा विशिष्टता जैसे 'एक भारतीय आत्मा' होता है।
4. छद्मनाम लेखन कार्य के लिए अपनाया जाता है।

नोट-

शीर्षक का वरण Choice of Heading

छद्मनामान्तर्गत प्रकाशित कृतियों में शीर्षक के वरण की दृष्टि से प्रमुख समस्या यह आती है कि कौन–से नाम को शीर्षक में अंकित करना चाहिए। वास्तविक नाम को अथवा छद्मनाम को? कुछ लेखकों ने एक से अधिक छद्मनाम के अन्तर्गत भी लेखन कार्य किया है। अतः समस्या यह आती है कि कौन–से छद्मनाम को वरीयता प्रदान की जाये? रंगनाथन ने अपने सीसीसी में शीर्षक के वरण के लिये निर्धार्यता के उपसूत्र (Cannon of Ascertainability) को आधार बनाया है। इस उपसूत्र के अनुसार ग्रन्थ के मुखपृष्ठ (Title Page) और उसके आसपास के पृष्ठों पर अंकित सूचना के आधार पर शीर्षक का वरण करना चाहिए।

सीसीसी के नियमों को इस प्रकार लिख सकते हैं–

नियमांक MD41 : यदि मुखपृष्ठ पर लेखक के नाम के स्थान पर केवल छद्मनाम ही अंकित हो तो उस छद्मनाम को ही शीर्षक के रूप में प्रयुक्त करना चाहिए और उसके बाद विवरणात्मक पर Pseud जोड़ना चाहिए। **उदाहरण**–

COLT (Clem), pseudo
PREMCHAND, pseudo
TWAIN (Marks), pseudo

नियमांक MD421 : यदि मुखपृष्ठ पर लेखक के छद्मनाम के साथ–साथ लेखक का वास्तविक नाम भी अधीनस्थ रूप में अंकित हो तो उसको विवरणात्मक पद pseud' के बाद वृत्ताकार कोष्ठक में बन्द करके अंकित करते हैं। लेखक के वास्तविक नाम से पूर्व 'ie' चिह्न अंकित करते हैं। कोष्ठक से पूर्व अर्धविराम लगाते हैं। वास्तविक नाम के शब्दों को प्राकृतिक क्रम में अंकित करते हैं। **उदाहरण**–

Colt (Clem), Pseud, (ie Nelson Coral Nye)
PREMCHAND, Pseud. (ie Dhanpat. Rai).
TWAIN (Marks), Pseud, (ie Samuel Langhrone Clemens).

नियमांक MD422 : यदि मुखपृष्ठों पर लेखक का वास्तविक नाम अंकित हो और छद्मनाम अधीनस्थ रूप में अंकित हो, तो पूर्ववर्ती को शीर्षक के रूप में प्रयुक्त करना चाहिए। पश्चवर्ती को उसके बाद वृत्ताकार कोष्ठक में जोड़ा जाना चाहिए और उसके पूर्व 'ie' चिन्ह् और बाद में विवरणात्मक पद 'Pseud' जोड़ा जाना चाहिए। कोष्ठक से पहले अर्द्धविराम लगाया जाना चाहिए।

CLACY (Halen), (ie cycle, Pseud)

TRIPATHY (SURYA Kant), (ie Nirala Pseud.) "

नियमांक MD423 : यदि लेखक का वास्तविक नाम ग्रन्थ में अंकित न हो तथा बाह्य स्रोत से ज्ञात किया जाए तो वास्तविक नाम को Pseud लिखने के बाद वर्गाकार कोष्ठक में लिखते हैं। वास्तविक नाम से पूर्व ie शब्द लिखते हैं। कोष्ठक से पूर्व (,) का प्रयोग करते हैं। वास्तविक नाम सामान्य क्रम में लिखते हैं।

उदाहरणार्थ–

SHIVANI, Pseud [ie Gaura Pant].

NEERAJ, Pseud, [ie Gopal Das]

नोट-

नियमांक MD424 : यदि दो सहलेखकों द्वारा एक छद्मनाम का उपयोग संयुक्त रूप से करते हैं तो उनके वास्तविक नाम भी कृति में उपलब्ध हो तो 'ie' चिन्ह् के बाद दोनों सहलेखकों के वास्तविक नाम सामान्यक्रम में वृत्ताकार कोष्ठक में अंकित करते हैं और उन्हें योजक चिन्ह् and' से जोड़ देते हैं।

TWO BROTHERS, Pseud, (ie Alfred Tennyson and Charles Tennyson).

टिप्पणी—इस उदाहरण में यह माना गया है कि वास्तविक नाम कृति में ही कहीं अंकित है।

नियमांक MD425 : यदि एक छद्मनाम का उपयोग तीन या अधिक सहलेखकों ने संयुक्त रूप से किया है तो वृत्ताकार कोष्ठक में प्रथमांकित लेखक का वास्तविक नाम सामान्यक्रम में अंकित करके शब्द 'सतत ०। तब D' जोड़ देते हैं।

उदाहरणार्थ—

THREE BROTHER, Pseud, [ie Alfred Tennyson and Other].

टिप्पणी— इस उदाहरण में यह माना गया है कि लेखकों के वास्तविक नाम कृति के बाहर से लाये गये हैं। नियमांक MD43 यदि लेखकों के वास्तविक नामों के स्थान पर दो या अधिक छद्मनाम का उपयोग हुआ हो तो उन्हें योजक शब्द and से जोड़ते हैं। लेखकों के नाम कृति के बाहर से लाये जाते हैं।

JKFRS and SASC, Pseud, [ie James keir]

छद्मनामकारी लेखक का उपकल्पन

Rendering of Heading of Pseudonym

इस प्रकार कई उदाहरणों से स्पष्ट है कुछ छद्मनाम व्यक्तिगत नाम जैसे दिखाई देते हैं, जैसे 'Premchand', 'George eliot', 'Mark Twain' आदि और कुछ छद्मनाम व्यक्तिगत नाम दृष्टिगोचर नहीं होते हैं; जैसे—'Ek Bhartiya Atma', 'Two Brothers', 'Kerals putra' आदि।

जो नाम व्यक्तिगत नाम जैसे दृष्टिगोचर होते हैं उनका उपकल्पन अन्य व्यक्तिगत नामों जैसा ही होता है, जैसे—

ELIOT (GEORGE), Pseud
PREMCHAND, Pseud.
TWAIN (Mark), Pseud

जो नाम व्यक्तिगत नाम जैसे दिखाई नहीं देते हैं, उनके उपकल्पन के लिये सीसीसी में निम्नांकित नियमांक का प्रावधान नियमांक है।

नियमांक MD22 एक छद्मनाम, जिनकी संरचना किसी व्यक्ति के नाम जैसी नहीं है, उसको उसके पदों में बिना कोई उलट–पलट किये वैसे ही लिखा जायेगा वह ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर अंकित है। जैसे—

EK BHARTIYA ATMA, Pseud
KERALA PUTRA, Pseud.
TWO BROTHERS, Pseud

नोट-

छद्मनामान्तर्गत प्रकाशित कृतियों की प्रविष्टियाँ

मुखपृष्ठ–1

(लेखक का वास्तविक नाम कहीं से भी ज्ञातव्य नहीं लेखक का नाम आख्या में समाविष्ट और दो सहकारक)

UPHARA
A Collection of 10 stories
Of
O Henry

Edited by
Mahendra Misra
Surendra Misra

Cuttack
Sisir Ranjan Panigrahi
1963

Other Information
Call Number : 0111, 3M62X N63
Accession Number : 19783

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	0111,	3m62x N63
		HENRY (0'), Pseud
		Uphara: A collection of 10 stories. Ed by Mahendra
	Misra	and Surendra Misra
	19783	

टिप्पणी: लेखक का वास्तविक नाम ज्ञात न होने के कारण नियमांक MD41 प्रायोज्य है।

नोट-

संकेत (Tracing)

HENRY (0') Pseud, fiction
Fiction, English
English, Literature
Literature.

HENRY (0') Pseud.
Misra (Mahendra) and Misra (Surendra).
Ed.

Misra (Surendra) and Misra (Mahendra)
Ed.

शृंखला (Chain)

0	=	literature (Sough link)
	↓	
01	=	Indo European Literature (un Sough link)
	↓	
011	=	Teutonic Literature (Sough link)
	↓	
0111	=	English literature (Sough link)
	↓	
0111,	=	(false link)
	↓	
0111,3	=	Fiction in English literature (Sough link)
	↓	
0111,3m62	=	Fiction of 0' Henry (Sough link)
	↓	
0111,3M62x	=	Collection of 0' Henry (unsough link).

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

HENRY (0') Pseud, fiction.

For document in this class and its subdivisions, see the classified part of the catalogue under the Class Number

0111, 3M62

FICTION; ENGLISH

For document ....

Class Number

0111,3

ENGLISH, LITERATURE.

For document ....

Class Number

0111

LITERATURE

For document ....

Class Number

0

नोट-

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	HENRY (0') Pseud	
		Upharal. 0111,3 m 62 x N63

टिप्पणी— यद्यपि लेखक अभिगम उपर्युक्त वर्ग प्रविष्टियों में से एक के अन्तर्गत संतुष्ट की जाती है। अतः इसको निर्मित करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु रंगनाथन ने 'Cataloguing practice' में ऐसे प्रकरणों में लेखक निर्देशी प्रविष्टि निर्मित की है।

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	MISRA (Mahendra) and MISRA (Surendra), Ed.	
		Henry (0), pseud: Uphara 0111,3m 62x N63

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि (Collaborator Index Entry)

	MISRA (Surendra) and MISRA (Mahendra), Ed.	
		Henry (0), pseud: Uphara. 0111,3m 62x N63

आख्या निर्देशी प्रविष्टि (Title Index Entry)

	UPHARA	
		By Henry (0), pseud: 0111,3m 62x N63

नोट-

टिप्पणी—

1. उपर्युक्त ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों के द्वितीय अनुच्छेद में नियमांक MK21 के नीचे दी गई व्याख्या के अनुसरण में छद्मनामधारी लेखक का पूरा नाम लिखा गया है (सीसीसी, पृ. 402)
2. ग्रन्थ की आख्या के अन्तर्गत प्रविष्टि निर्मित की गई है, क्योंकि इसको विशिष्ट आख्या माना गया है जिसको पाठकों को याद रखने की सम्भावना है।

मुखपृष्ठ—2

(छद्यनामधारी लेखक वास्तविक नाम ग्रंथ में उपलब्ध)

LIFE ON THE MISSISIPI

BY
MARK TWAIN

AUTHORISED EDITION
Harper & Bros, Publishers
New York London
1987

Other Information :

Call Number : 0111, 3M35, 23 N87 Accession Number : 82317

नोट—The real name of the author is Samuel Langhorne Clemens born in 1835 and diet in 1910 the information is given on the back of the title page.

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	0111,	3m35, 23 N87
	82317	TAWIN (mark) pseudo (ie samuel Langhorne Clemens) Life on the Missisipi. Authorised ed.

टिप्पणी—

1. संस्करण का नाम होने पर उसे ऊपर बनाई गई table के अनुसार अंकित किया जाता है।

2. लेखक के जन्म और मृत्यु वर्ष ज्ञात होने पर भी शीर्षक में अंकित करने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि व्यक्तिसाध्यकरण वास्तविक नाम से पता चल जाता है।
3. लेखक का वास्तविक नाम ग्रन्थ में ही अंकित होने के कारण नियमांक MD421 प्रायोज्य है।

नोट-

संकेत (Tracing)

Life on the missispi, Twain (mark), pseud (ie Samuel Langhorne Clemens).

Twain (Mark), pseudo, (ie Samuel) Langhorne Clemens), fiction.

Fiction, English

English, Literature. Literature

Twain (Mark), pseudo, (ie Samuel Langhorne Clemens).

Clemens (Samuel Langhorne) (1835-1910)

शृंखला (Chain)

0	=	literature (Sough link)
	↓	
01	=	Indo European Literature (unSough link)
	↓	
011	=	Teutonic Literature (Sough link)
	↓	
0111	=	English literature (Sough link)
	↓	
0111,	=	(false link)
	↓	
0111,3	=	Fiction in English literature (Sough link)
	↓	
011,3m35	=	Fiction of mark Twain (Sough link)
	↓	
0111,3M35	=	(false link)
	↓	
0111,3M35,2	=	(false link)
	↓	
0111,3M35,23	=	Life on the missisipi (Sough link)

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	Life on the missisipi, TAWIN (Mark), pseudo, (ie Samuel Langhome Clemens).	
		For the document in this class and catalogue under the
	Class Number	
		0111, 3M35, 23

	Twain (Mark), pseudo, (ie Samuel Langhome Clemens).	
		For document ....
	Class Number	
		0111,3M35

	FICTION, ENGLISH	
		For document ....
	Class Number	
		0111,3

	ENGLISH LITERATURE	
		For document ....
	Class Number	
		0111

	LITERATURE	
		For document ....
	Class Number	
		0

नोट-

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

ग्रन्थकार निर्देशी प्रविष्टि (Author Index Entry)

	Twain	(Mark), pseudo, (ie Samuel Langhome Clemens).
		Life on the missisipi, Authorised ed. 0111, 3M35, 23 N87

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)

छद्मनाम–वास्तविक नाम प्रविष्टि (Pseudonym-real Name Entry)

	CLEMENTS (Samuel language) (1835-1950)	
		See TWAIN (Mark), Pesud.

मुखपुष्ठ–3

(छद्मनाम व्यक्तिगत नाम जैसा नहीं)

ESSAYS OF TODAY

BY

A.G. Gardiner

(Alpha of the Plough)

First Edition

LONDON

Macmilian & co. Ltd.

1985

Other Information :

Half title page

University of Manchester, publication series; no. 5.

Edited by Cathelean Freemen.

Call Number : 0111, 6M65X N85 Accession Number : 17283

नोट-

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	0111,	6M65X, N85
		GARDINER (AG), (ie Alpha of the plough, pseud). Essays of today. (University of Manchester, publication series. Ed by Cathelean Freemen. 5).
	17283	

टिप्पणी—

1. प्रथम संस्करण होने के कारण संस्करण विवरण अंकित नहीं किया गया है।
2. छद्मनाम अधीनस्थ रूप में अंकित होने के कारण नियमांक MD422 प्रायोज्य होगा।

संकेत (Tracing)

Gardiner (AG), (ie Alpha of The Plough, Pseud), Essays.
Essays, English.
English, Literature.
Literature.

Gardiner (AG), (ie Alpha of The Plough, Pseud), Essays.
University of Manchester, Publication Series.

Alpha of The Plough, Pseud.
Freeman (Cathelean), Ed.

शृंखला (Chain)

0 = literature (Sougth link)
↓
01 = Indo European Literature (unsougth link)
↓
011 = Teutonic Literature (unsougth link)
↓

नोट-

0111	=	English literature (Sougth link)
	↓	
0111,	=	(false link)
	↓	
0111,6	=	Essays in English literature (Sougth link)
	↓	
0111,6m65	=	Eassay of A.G. Gardiner (Sougth link)
	↓	
0111,3M65x	=	Collection of Essay of A.G. Gardiner (unsougth link).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	Gardiner (AG), (ie Alpha of The Plough, Pseud),	
	For document in this class and its subdivisions, see the classified part of the catalogue under the Class Number 0111, 6M65	

	ESSAYS ENGLISH	
	For document .... Class Number 0111,6	

	ENGLISH LITERATURE	
	For document .... Class Number 0111	

नोट-

	LITERATURE	
	Class Number	For document .... O.

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

	GRAINDER (AG), (ie Alpha of The Plough, Pseud),	
	Essays of today.	0111, 6M65x N85

	UNIVERSITY OF MANACHESTER, PUBLICATION SERIES	
	5	Gardiner (AG), (ie Alpha of The Plough, Pseud): Essays of today. 0111, 6M65x N85

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)

छद्मनाम–वास्तविक नाम प्रविष्टि (Pseudonym-real Name Entry)

	ALPHA OF THE PLOUGH, pseudo	
		See Gardiner (AG) (1865).

नोट-

टिप्पणी— छद्मनाम, व्यक्तिगत नाम जैसा नहीं लगता है। अत: इसको छद्मनाम के सामान्यक्रम में बिना उलट-पलट के अंकित किया गया है।

ग्रन्थमाला–सम्पादक प्रविष्टि (Editor of series Entry)

	FREEMAN (cathelean), Ed.	
		See UNIVERSITY OF MANACHESTERS, PUBLICATION SERIES.

मुखपृष्ठ–4

(छद्‌मनामधारी लेखक, वास्तविक नाम बाह्य स्रोतों से ज्ञात)

THE WORKING OF DIARCHY IN INDIA

1919 - 1928

BY

Kerala Putra

Bombay

D.b. Taraporewala sons & co.

1928

Other Information :

Call Number : V44:2'N3 N28 Accession Number : 48724

नोट—The real name of the author is Prof. K.M. Panikar as know from reference books. He has written most of his book under his real name.

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	v44:2	'N3 N28
		KERALA PUTRA, psued [ie K M Panikar]. Wroking of diarchy in India, 1919-1928.
	48724	

टिप्पणी—

1. शीर्षक के वरण के लिए नियमांक MD423 प्रायोज्य है क्योंकि वास्तविक नाम कृति के बाहर से लाया गया है।
2. ग्रन्थकार का छद्मनाम, व्यक्तिगतनाम जैसा दृष्टिगोचर नहीं होता। अतः उसको उसके प्राकृतिक क्रम में उपकल्पित किया गया है।

संकेत (Tracing)

Contitution, India, History India, History History Kerala Puitra, Pseud [ie KM Panikar] Dyarchy in India (Working of-). Panikar (K M)

शृंखला (Chain)

V = History (Sougth link)
↓
V4 = History of Asia (Unsougth link)
↓
V44 = History of India (Sougth link)
↓
V44: = (False link)
↓
V44:2 = Constitutional History of India (Sougth link)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries)

	CONSTITUTION, INDIA, HISTORY	
	For document in this class and its subdivisions, see the classified part of the catalogue under the Class Number	
		V44.2

नोट-

	INDIA, HISTORY.	
		For documents ....
	Class Number	
		V 44

	HISTORY.	
		For document ....
	Class Number	
		V

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries)

लेखक निर्देशी प्रविष्टियाँ (Author Index Entry)

	KERALA PUTRA, Psued [ie K M Panikar].	
		Working of diarchy in India. 7V44:2 N28

आख्या निर्देशी प्रविष्टि (Title Index Entry)

	DYARCHY IN INDIA (Working of-).	
		By Kerala Putra, Psued [ie K M Panikar].
		V44:2 V28

नोट

टिप्पणी— 1. क्योंकि आख्या में व्यक्तिवाचक संज्ञा, 'India' एवं एक अनोखा शब्द 'Dyarchy' है अतः आख्या प्रविष्टि निर्मित की गई है।

2. आख्या में 'Dyarchy in India' शब्दों में प्रत्यास्मरण–मन (Recall value) माना गया है। अतः उन शब्दों को प्रविष्टि पद बनाया गया है।

निष्कर्ष
(Conclusion)

इस अध्याय में हमने कार्यात्मक सूचीकरण का अध्ययन किया और यह भी जाना कि यह क्या होती है और यह किस तरह से सहायक है। इसके साथ ही हमने एकल व्यक्तित्व लेखकत्व का भी अध्ययन किया। इसके अलावा हमने सह व्यक्तिगत लेखकत्व का भी अध्ययन किया। इसके साथ ही हमने छद्मनाम का भी अध्ययन किया।

महत्त्वपूर्ण तथ्य
(Important terms)

1. क्रियात्मक सूचीकरण से अभिप्राय सूची की विभिन्न प्रविष्टियों के निर्माण से है।
2. जब किसी साहित्य की रचना के लिए एक या अधिक व्यक्ति निजी क्षमता में उत्तरदायी होते हैं तो उस साहित्य को व्यक्तिगत लेखक के साहित्य की कृति कहा जाता है।
3. जब दो या दो से अधिक लेखक संयुक्त रूप से किसी ग्रन्थ की रचना करते हैं तो उन्हें सहलेखक कहते हैं।
4. एक लेखक जो वास्तविक नाम से भिन्न कोई मिथ्या अथवा काल्पनिक नाम अथवा कोई विशिष्टता अपनाता है उसक छद्मनाम कहते हैं।

अभ्यास प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न Very Short Answer Type Questions

1. कार्यात्मक सूचीकरण से क्या तात्पर्य है?
2. वर्गीकृत सूची से क्या तात्पर्य है?

लघु उत्तरीय प्रश्न Short Answer Type Questions

1. सूचीकरण से सूचना स्रोत पर संक्षिप्त लेख लिखिए।
2. ग्रंथालय हस्तलिपि पर संक्षिप्त नोट लिखिए?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न Long Answer Type Questions

1. एकल व्यक्तिगत लेखकत्व को परिभाषित करते हुए उसके प्रकारों का सविस्तार वर्णन कीजिए।
2. सहलेखक को परिभाषित कीजिए और उसके प्रकारों का सविस्तार वर्णन कीजिए।
3. छद्मदान पर सविस्तार नोट लिखिए।

नोट-

UNIT 02

विभिन्न क्षेत्रों में सूचीकरण के कार्य
Work of Cataloguing in Different Areas

प्रस्तावना
(Introduction)

इस अध्याय में हम सम्मिश्र ग्रन्थ के बारे में अध्ययन करेंगे एवं साथ में बहुखण्डीय ग्रन्थ के बारे में भी जानेंगे और सम्पादकीय ग्रन्थ का भी अध्ययन करेंगे। इसके अलावा हम सम्पादकीय ग्रन्थ एवं बहुखण्डीय ग्रन्थ कितने प्रकार के होते हैं इसका भी अध्ययन करेंगे।

सम्मिश्र ग्रन्थ
(Composite Books)

अर्थ एवं परिभाषा Meaning and Definition

ऐसा ग्रन्थ, जिसके विभिन्न अंशों या लेखों को अलग–अलग लेखकों के द्वारा लिखा जाता है परन्तु उसको एक ही ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित किया जाता है उसे सम्मिश्र ग्रन्थ कहते हैं।

ए ए सी आर–1 सम्मिश्र कार्य (Composite Work) की परिभाषा इस प्रकार दी गई है–

"ऐसी मौलिक रचना, जिसका सृजन विभिन्न लेखकों के पृथक एवं विशिष्ट योगदानों से मिलकर किसी सम्पूर्ण रचना के रूप में हुआ हो।"

ए ए सी आर–2 की पारिभाषिक शब्दावली (Glossary) में सम्मिश्र ग्रन्थ की कोई परिभाषा नहीं दी गई है। फिर भी संकलन (Collection) की परिभाषा में कुछ सीमा तक सम्मिश्र ग्रन्थ को सम्मिलित किया गया है।

सी सी सी में सम्मिश्र ग्रन्थ नियमांक FF4 के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया गया है–"ऐसा ग्रन्थ जिसमें दो या अधिक लेख दिये गये हों तथा प्रत्येक लेख की स्वयं की आख्या हो, वैचारिक तारतम्यता न हो, तथा सामान्यतया (आवश्यक रूप से नहीं) विभिन्न लेखकों द्वारा रचित हो, को सम्मिश्र ग्रन्थ कहते हैं।"

सम्मिश्र ग्रन्थ के प्रकार Type of Composite Book

सी सी सी में लिखे गये नियमों के आधार पर सम्मिश्र ग्रन्थ को अग्र दो प्रकारों में बाँटा गया है–

नोट-

1. कृत्रिम सम्मिश्र ग्रन्थ (Artificial Composite Book)
2. सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ (Ordinary Composite Book) I

सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थों के सूचीकरण के नियम
(Cataloguing Rules of Ordinary Composite Books)

सी सी सी में सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–

"ऐसा ग्रन्थ जिसके सभी लेखों को सामूहिक रूप से प्रदर्शित करने के लिए एक सामान्य आख्या (Generic Title) प्रदान की जाती है, को सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ कहते हैं।"

सी सी सी में सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ की विभिन्न प्रविष्टियों के निर्माण के लिए निम्नलिखित नियम बनाये गये हैं–

मुख्य प्रविष्टि की संरचना

Structure of Main Entry

सी सी सी में सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ की मुख्य प्रविष्टि के लिए निम्नलिखित नियम बताए गए हैं–

नियमांक NAI : सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ को उसमें प्रदत्त लेखों के लेखकों की उपेक्षा करते हुए सामान्य ग्रन्थ के समान ही सूचीकृत किया गया है अर्थात् मुख्य प्रविष्टि सम्पादक या संग्रहकर्ता के नाम से बनाई जायेगी और उसमें लेखों के लेखकों के नाम देने की आवश्यकता नहीं होती।

इतर प्रविष्टियों के प्रकार एवं उनकी संरचना

Types of Added Entries and their Structure

सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ के लिये निम्नलिखित प्रकार की इतर प्रविष्टियाँ आवश्यकतानुसार बनाई जाती हैं–

1. अंशदान निर्देशी प्रविष्टि (Contribution Index Entry)
   (i) अंशदाता निर्देशी प्रविष्टि (Contributor Index Entry)
   (ii) अंशदाता सहकारक निर्देशी प्रविष्टि (Contributor to Contributor Index Entry) I
2. अभिनन्दन ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Festscrift Index Entry) I
   (i) अभिनन्दित ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Dedicatee Index Entry)
3. ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)
4. शृंखला अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Chain Cross Reference Entry)
5. वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entry)
6. विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Special Cross Reference Entry)
7. नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)

उपर्युक्त क्रम 1 से 2.1 तक वर्णित प्रविष्टियाँ भी ग्रान्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ ही हैं, परन्तु उनकी संरचना सामान्य ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों से थोड़ी भिन्न होती है।

विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि Special Cross Reference Entry

सम्मिश्र ग्रन्थ बहुविषयी ग्रन्थ (Multifocal book) होने के कारण एक से अधिक विषयों से सम्बन्धित होते हैं। लेखों के विषयों को पाठकों की दृष्टि में लाने के लिए विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ बनाई गई हैं। इन प्रविष्टियों की संरचना नियमांक NA21 के अनुसार निम्नलिखित प्रकार की होती है–

1. निर्देशित किये जाने वाले लेख का शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण पद व व्यष्टिकृत पद को हटाकर),
2. निर्देशित ग्रन्थ का मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त क्रामक अंक,
3. निर्देशक पद <u>See</u>
4. निर्देश्ति किये जाने वाले लेख की संक्षिप्त आख्या,
5. निर्देशित किये जाने वाले लेख का शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण पद व व्यष्टिकृत पद को हटाकर),
6. निर्देशित किये जाने वाले लेख का वर्गांक (अग्र अनुच्छेद)।
7. निर्देशित ग्रन्थ की संक्षिप्त आख्या,
8. पूर्ण विराम (.),
9. मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त संस्करण विवरण, तथा
10. निर्देशित ग्रन्थ में निर्देशित किये जाने वाले लेख का प्राप्ति स्थान; जैसे—P, Sec Chap, Part या अन्य कोई समकक्ष पद।

शृंखला अन्तर्विषयी प्रविष्टि Chain Cross Reference Entry

यदि निर्देशित किये जाने वाले लेख के किसी अंश विशेष को पाठकों की दृष्टि में लाना हो तो इसके लिये शृंखला अन्तर्विषयी प्रविष्टि का प्रावधान है। इसकी संरचना नियमांक NA22 के अनुसार इस प्रकार है–

1. मेजबान ग्रन्थ का मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण पद व व्यष्टिकृत पद हटाकर),
   (i) मेजबान ग्रन्थ की संक्षिप्त आख्या,
   (ii) पूर्ण विराम (.),
   (iii) मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त संस्करण विवरण (यदि दिया गया हो)
2. मेजबान ग्रन्थ मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त क्रमांक अंक,
3. वर्णनात्मक पद Forming,
   (i) प्रथम श्रेणी के लेख का मेजबान ग्रन्थ में प्राप्ति स्थान; जैसे P, Sec, Chap, Part या अन्य कोई समकक्ष पद।
   (ii) पद of तथा इसके बाद पूर्ण विराम नहीं लगेगा (.),
4. प्रथम श्रेणी के निर्देशित किये जाने वाले लेख की आख्या,
   (i) पूर्ण विराम (.)

नोट-

(ii) द्वितीय श्रेणी के निर्देशित किये जाने वाले लेख के भाग का लेख में प्राप्ति स्थान; जैसे—P, See, Chap, Part या अन्य कोई समकक्ष पद,

5. प्रथम श्रेणी के निर्देशित किये जाने वाले लेख का शीर्षक,
6. निर्देशक पद See also;
7. द्वितीय श्रेणी के निर्देशित किये जाने वाले लेख के भाग का वर्गांक।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि Class Index Entry

सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ की वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ सामान्य ग्रन्थ के समान ही बनाई गई हैं। सर्वप्रथम मेजबान ग्रन्थ के वर्गांक की वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ बनाई जाती हैं तथा उसके बाद प्रथम श्रेणी के निर्देशित किये जाने वाले लेख तथा द्वितीय श्रेणी वाले निर्देशित किये जाने वाले लेख के भाग के वर्गांक से वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ बनाई जाती हैं।

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि Book Index Entry

सामान्य ग्रन्थ में बनने वाली सभी ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ सामान्य सम्मिश्र ग्रन्थ के लिये भी बनाई जाती हैं।

अंशदाता निर्देशी प्रविष्टि Contributor Index Entry

मेजबान ग्रन्थ में सभी लेखों के लेखकों के लिए अंशदाता निर्देशी प्रविष्टि बनाई जाती है। इस प्रविष्टि की संरचना नियमांक NA62* के अनुसार इस प्रकार है—

1. मेजबान ग्रन्थ का क्रमांक अंक, जो कि निर्देशांक के रूप में लिखा जायेगा।
2. संक्षिप्त आख्या,
   (i) पूर्ण विराम,
   (ii) मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त संस्करण विवरण, यदि कोई हो,
3. मेजबान ग्रन्थ का शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण, पद व पद हटाकर),
4. विवरणात्मक पद <u>Forming</u> तथा इसके बाद P, Sec, Chap, Part या अन्य पद,
5. लेख के लेखक का प्रविष्टि पद,
   (i) कोलन (:) चिन्ह
   (ii) लेख की संक्षिप्त आख्या,
6. लेख के सहकारक का नाम,

अभिनन्दन ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि Restschrift Index Entry

किसी व्यक्ति अथवा संस्था के सम्मान के लिए प्रकाशित ग्रन्थों की सूची में एक स्थान पर एकत्रित करने के लिये अभिनन्दन ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि बनाये जाने का प्रावधान है। नियमांक NA7 के अनुसार इसकी संरचना इस प्रकार है–

1. निर्देशांक,
2. द्वितीय अनुच्छेद में अभिनन्दित व्यक्ति या संस्था का नाम (सूचीकरण नियमानुसार),
3. अग्र अनुच्छेद में FESTSCHRIFT पद।

नोट-

अभिनन्दित निर्देशी प्रविष्टि Dedicatee Index Entry

नियमांक NA71 के अनुसार इस प्रविष्टि की संरचना इस प्रकार है–

1. निर्देशांक,
2. पद FESTSCHRIFT,
3. अभिनन्दित व्यक्ति या संस्था का नाम (सूचीकरण के नियमानुसार)।

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि Cross Reference Index Entry

पूर्व वर्णित सभी नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ इस प्रकार बनाई जाती हैं इनके अतिरिक्त Festschrift पद के वैकल्पिक नामों यथा Commemoration Volume, Memorial Volume आदि से भी नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियाँ आवश्यकतानुसार बनाई गई हैं।

संकेत Tracing

संकेत में विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि व शृंखला अन्तर्विषयी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद की सूचना तथा प्राप्ति स्थान को बायीं ओर अंकित करते हैं तथा दाहिनी ओर की सूचनाएँ सामान्य ग्रन्थों की समान ही अंकित करते हैं।

कृत्रिम सम्मिश्र ग्रन्थों के सूचीकरण के नियम
(Cataloguing of Artificial Composite Books)

कृत्रिम सम्मिश्र ग्रन्थों का सृजन कभी–कभी तो प्रकाशकों द्वारा दो या अधिक ग्रन्थों को एक साथ प्रकाशित करके किया जाता है तथा कभी–कभी ग्रन्थालयों द्वारा जानबूझकर अथवा अनजाने में करते हैं।

पहली अवस्था में कृत्रिम सम्मिश्र ग्रन्थ का सामूहिक मुखपृष्ठ (Common title page) भी होता है, जबकि दूसरी अवस्था में इसकी कोई सम्भावना नहीं होती है। कृत्रिम सम्मिश्र ग्रन्थ के सभी ग्रन्थों या भागों के अपने अलग–अलग मुखपृष्ठ दिये रहते हैं। सी सी सी में कृत्रिम सम्मिश्र ग्रन्थ को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–"ग्रन्थ में दिये गये सभी लेखों की यदि सामूहिक रूप से एक सामान्य आख्या न हो तो उसे कृत्रिम सम्मिश्र ग्रन्थ कहते हैं।"

सी सी सी में कृत्रिम सम्मिश्र ग्रन्थ की विभिन्न प्रविष्टियों के निर्माण के लिए निम्नलिखित नियम हैं–

मुख्य प्रविष्टि की संरचना Structure of Main Entry

नियमांक NB1 के अनुसार कृत्रिम सम्मिश्र ग्रन्थ की मुख्य प्रविष्टि प्रथम संघटक ग्रन्थ (First constituent work) की मुख्य प्रविष्टि के समान बनाई जाती है। केवल अन्य संघटक ग्रन्थों के लिए, प्रत्येक के लिये एक अनुच्छेद जोड़ा जाता है। इसी प्रकार अग्र अनुच्छेद में क्रमिक अंक के बाद दाहिनी ओर पद Composite book जोड़ा जाता है, जिसे प्रविष्टि हाथ से बनाते समय या टंकण करते समय रेखांकित करते हैं तथा मुद्रण में टेढ़े अक्षरों (Italic) को मुद्रित करते हैं।

संघटक ग्रन्थों के लिए जोड़े जाने वाले अतिरिक्त अनुच्छेद में निम्नलिखित सूचनाएँ दी जाती हैं–

1. इसका क्रामक अंक (यथासंभव दाहिनी ओर)
2. टिप्पणी अनुच्छेद (यदि आवश्यक हो),

नोट-

3. पूर्ण विराम (.),
4. आख्या, जिसका प्रथम अक्षर बड़ा होगा,
5. चिन्ह कोलन (:),
6. इससे सम्बन्धित शीर्षक,
7. क्रमांक 2.।

इसी प्रकार किसी अन्य संघटक ग्रन्थ के लिये भी उपर्युक्त प्रकार से ही अनुच्छेद जोड़ा जाता है। मात्र उसका क्रमांक बदल जाता है। यदि सभी संघटक ग्रन्थों की एक ही ग्रन्थमाला हो तो उसे प्रत्येक संघटक ग्रन्थ के बाद से लिखने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। उसे अन्तिम ग्रन्थ के क्रमांक अंक के बाद वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा जाता है। यदि अलग–अलग ग्रन्थों की अलग–अलग ग्रन्थमालाएँ हों तो प्रथम संघटक ग्रन्थ की ग्रन्थमाला प्रथम ग्रन्थ की आख्या के बाद एवं अन्य संघटक ग्रन्थों की ग्रन्थमालाएँ उनके निर्देशकों के पहले लिख ली जाती हैं।

इतर प्रविष्टियों की संरचना Structure of Added Entries

कृत्रिम सम्मिश्र ग्रन्थ में निम्नलिखित प्रकार की सहायक प्रविष्टियों का निर्माण किया जाता है–

1. नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)
2. ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)
3. वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entry)
4. अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Cross Reference Entry)। ये दो प्रकार की होती है–
   (i) विशिष्ट
   (ii) सामान्य।

विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि की संरचना

Structure of Special Cross Reference Entry

सी सी सी नियमांक NB21. के अनुसार विशिष्ट अन्तर्विषयी प्रविष्टि के निम्नलिखित अनुच्छेद होते हैं–

1. प्रथम संघटक ग्रन्थ की आख्या, पूर्ण विराम (.) तथा मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त संस्करण विवरण, यदि कोई हो,
2. प्रथम संघटक ग्रन्थ का शीर्षक (व्यक्तिगत लेखक की अवस्था में गौण पद व व्यष्टिकृत पद हटाकर),
3. प्रथम संघटक ग्रन्थ का मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में प्रदत्त क्रमिक अंक,
4. आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक पद <u>Bound</u> as Part 2 <u>with</u> या <u>Printed as</u> Part 2 <u>with</u>
5. निर्देशित किये जाने वाले ग्रन्थ की आख्या, पूर्ण विराम (.) तथा मुख्य प्रविष्टि में प्रदत्त संस्करण विवरण, यदि कोई हो,
6. निर्देशित किये जाने वाले ग्रन्थ का शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण पद व व्यष्टिकृत पद हटाकर),
7. निर्देशित किये जाने वाले ग्रन्थ का क्रमांक अंक (अग्र अनुच्छेद)।

नोट-

सामान्य अन्तर्विषयी प्रविष्टि Ordinary Cross Reference Entry

प्रत्येक संघटक ग्रन्थ के लिये नियमांक NB22 के अनुसार आवश्यकतानुसार सामान्य अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ बनती हैं।

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि की संरचना Structure of Book Index Entry

प्रथम संघटक ग्रन्थ की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियाँ सामान्य ग्रन्थ के समान ही बनती हैं। नियमांक NB5 के अनुसार द्वितीय या अन्य संघटक ग्रन्थ की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में द्वितीय अनुच्छेद के बाद निम्नलिखित अनुच्छेद जोड़ते हैं--

1. प्रथम संघटक ग्रन्थ का क्रामक अंक निर्देशांक के रूप में,
2. प्रथम संघटक ग्रन्थ की संक्षिप्त आख्या संस्करण सहित, यदि कोई हो,
3. प्रथम संघटक ग्रन्थ का शीर्षक (व्यक्तिगत नाम की अवस्था में गौण पद व्यष्टिकृत पद हटाकर);
4. आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक पद <u>Bound</u> as Part 2 <u>with</u> या <u>Printed as</u> Part 2 <u>with</u>।

संकेत Traching

संकेत में विशिष्ट व सामान्य अन्तर्विषयी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद भाग आदि की ओर अंकित करते हैं तथा दाहिनी ओर की सूचनाएँ सामान्य ग्रन्थों के समान ही अंकित करते हैं।

सूचीकृत मुखपृष्ठ Catalogued Title Pages

मुखपृष्ठ 1

(एकल मुस्लिम नाम का लेखक, बिना क्रमांक की ग्रन्थमाला)

BASIC CONCEPTS OF THE QURAN

By

Abdul Raheem Qureshi

Aligarh,

Modern Publisher

1996

Other Information :

Call No.	Q7:2	N96
Acc. No.	33341	
Pages	iv, 345	
Size	22.9 cm.	
H.T.P.	Modern Islamic Studies.	

नोट-

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	Q7.2	N96
	33341	QURESHI (Abdul Raheem). Basic Concepts of the quran. (Modern Islamic Studies. 1996).

संकेत (Tracing)

Scripture, Muhammadanism Muhammadanism, Religion. Religion Qureshi (Adbul Raheem). (Modern Islamic Studies). Islam

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि – 1

		SCRIPTURE, MUHAMMADANISM.
		For document in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number Q7:2

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–2

	MUHAMMADANISM, RELGION.	
	Class Number	For document ....
		Q7

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–3

	RELGION	
	Class Number	For document ....
		Q

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि – लेखक

	QURESHI (Abdul Raheem).	
		Basic concepts of the quran.
		Q7:2 N96

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि ग्रन्थमाला

	MODERN ISALMIC STUDIES.	
	1996	Qureshi: Basic concepts of the quran
		Q7:2 N96

नोट-

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि—वैकल्पिक नाम

	ISLAM.	
		See MUHAMMADANISM.

टिप्पणी—

1. मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में लेखक के प्रविष्टि पद एवं गौण पद नियमानुसार अंकित करते हैं। टिप्पणी अनुच्छेद में ग्रन्थमाला के नाम को नियमानुसार वृत्ताकार कोष्ठक में अंकित करते हैं। ग्रन्थमाला क्रमांक के अभाव में नियमांक MK 131 के अनुसार प्रकाशन वर्ष का प्रयोग करते हैं।
2. नियमांक MK 131 एवं MK 231 के अनुसार ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि का निर्माण करते हैं। शीर्षक अनुच्छेद में नियमानुसार ग्रन्थमाला के नाम को बड़े अक्षरों में अंकित करते हैं।
3. अन्य इतर प्रविष्टियाँ पूर्व वर्णित नियमानुसार बनती हैं।

मुख्यपृष्ठ 2

(ग्रन्थमाला क्रमांक सहित ग्रन्थमाला एवं एकल ग्रन्थमाला सम्पादक एवं ग्रन्थमाला क्रमांक सहित)

DIMENSIONS OF NUCLEAR PHYSICS
A Study of Neutron

By
William Andrew Kramer

LONDON
Edward Standford Ltd.
1979

Other Information

Call No.	C9B31	N79
Acc. No.	71199	

नोट-

बहुखण्डीय ग्रन्थ की परिभाषा
(Definition of Multi-Volumed Book)

सी सी सी में बहुखण्डीय ग्रन्थ को नियमांक FF33 के अन्तर्गत इस प्रकार परिभाषित किया गया है–

"दो या अधिक खण्डों में प्रकाशित तथा वैचारिक नैरंतर्य वाला ग्रन्थ और इस अथवा अन्य कारणवश खण्डों में प्रदत्त विचार सामग्री का विभाजन समस्त खण्डों में इस प्रकार का हो, कि सभी खण्ड एक संघात (Set) के समान हो अर्थात् वे सब मिलकर एकल खण्ड का निर्माण करते हो।

ए.ए.सी.आर.-2 के परिशिष्ट–डी में दी गई पारिभाषिक शब्दावली में बहुखण्डीय ग्रन्थ निम्नांकित रूप से परिभाषित है–

"ऐसा ग्रन्थ जो निश्चित अलग–अलग भागों में या तो सम्पूर्ण हुआ हो अथवा सम्पूर्ण होने वाला हो।"

बहुखण्डीय ग्रन्थ के प्रकार Type of Multi-volumed Books

सूचीकरण की दृष्टि से बहुखण्डीय ग्रन्थों को निम्न दो प्रकारों में बाँटा गया है–

1. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1
2. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2।

बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–1 के सूचीकरण के नियम

Cataloguing Rules of Multi-volumed Type-1

वह बहुखण्डीय ग्रन्थ जिसके सभी संघटक खण्डों की सामान्य आख्या के अपनी विशिष्ट आख्या न हो तथा सभी खण्डों में अन्य किसी प्रकार का अन्तर न हो, को बहुखण्डीय ग्रन्थ-1 कहते हैं।

सूचीकरण के दृष्टिकोण से इन्हें पुनः निम्नलिखित चार प्रकारों में बाँटा गया है–

1. पूर्ण संघात (Complete Set)
2. अपूर्ण संघात (Uncomplete Set)
3. अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplete Set)
4. अपूर्ण तथा सूचना उपलब्ध संघात (Uncomplete and Information Set)।

पूर्ण संघात (Complete Set)—यदि ग्रन्थ के सभी खण्ड प्रकाशित हो चुके हों तथा ग्रन्थमाला में उपलब्ध हों ऐसे बहुखण्डीय ग्रन्थ को **पूर्ण संघात** कहते हैं। ऐसे पूर्ण संघात को सूचीकृत करने के लिये मुख्य प्रविष्टि के आख्या अनुच्छेद में एक अतिरिक्त वाक्य जोड़ते हैं। इस वाक्य में निम्नलिखित सूचनाएँ इस प्रकार दी गई हैं–

1. पद V या इसके समकक्ष अन्य कोई पद,
2. ग्रन्थ के खण्डों की संख्या।

नोट-

उदाहरणार्थ–

		History of India. 3 V.
	1123-1125	

अपूर्ण संघात (Uncomplete set)–यदि ग्रन्थ के सभी खण्ड अभी प्रकाशित न हुए हों अर्थात् कुछ खण्ड प्रकाशित हो चुके हों तथा शेष प्रकाशनाधीन हों तो उसे **अपूर्ण संघात** कहते हैं। ऐसे अपूर्ण संघात को सूचीकृत करने के लिए अतिरिक्त वाक्य में निम्नलिखित सूचनाएँ इस प्रकार दी गई हैं–

1. अभी तक प्रकाशित खण्ड तथा छोटी आड़ी रेखा,
2. पद V।

यदि अतिरिक्त वाक्य पेंसिल से लिखा जाये तो इस अवस्था में प्रविष्टि को खुला (Open) माना जाता है।

उदाहरणार्थ–

		Introduction of physical chemistry V1-3- ↑ (in pencil)
		1516-1518

अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplte set)–यदि ग्रन्थ के सारे खण्ड प्रकाशित हो चुके हों, परन्तु ग्रन्थालय में उपलब्ध न हों तो उसे **अपूर्ण उपलब्ध संघात** कहते हैं। ऐसे अपूर्ण उपलब्ध संघात को सूचीकृत करने के लिए नियमांक NC13 के अनुसार दिये गये अतिरिक्त वाक्य के आगे नियमांक NC132 के अनुसार एक वाक्य लिखा जाता है। इस वाक्य में निम्नलिखित सूचनाएँ दी जाती हैं–

1. पद not in library
2. ग्रन्थालय में अनुपलब्ध खण्डों की संख्या,
3. पद V

नोट-

उदाहरणार्थ–

		Introduction to British empire 5 V
		[V 4 not in library]
		↑
		(in pencil)
	5115	5118

बहुखण्डीय ग्रंथों की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों के आख्या अनुच्छेद में संक्षिप्त आख्या के बाद अतिरिक्त वाक्य को हमेशा जोड़ देते हैं।

बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–2 के सूचीकरण नियम

Cataloguing Rules of Multi-volumed Type-2

वह बहुखण्डीय ग्रन्थ जो प्रकार–1 के अन्तर्गत नहीं आता उसे बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार 2 कहते हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसे बहुखण्डीय ग्रन्थ जिनकी सामान्य आख्या के अतिरिक्त प्रत्येक खण्ड की अपनी विशेष आख्या भी होती है, इस श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं।

बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–2 को सूचीकृत करने के लिए नियमांक NC2 के अनुसार उन्हें बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–1 के नियमांकों के अनुसार ही सूचीकृत किया गया है तथा नियमांक NC21 के अनुसार मुख्य प्रविष्टि के आख्या अनुच्छेद में प्रत्येक खण्ड के लिये एक–एक अनुच्छेद (Paragraph) जोड़ा गया है। इसमें निम्नलिखित सूचनाएँ दी जाती हैं–

1. यदि आवश्यक हो तो वृत्ताकार कोष्ठक में विशेष सूचना,
2. पूर्ण विराम (.), तथा
3. यदि उस खण्ड का कोई सहकारक हो तो उसका नाम,
4. पूर्ण विराम (.),
5. पद by तथा इसके बाद उस खण्ड के लेखक/लेखकों के नाम (यदि दिये गये हों),
6. खण्ड की विशेष आख्या,
7. पूर्ण विराम (.),
8. खण्ड की संख्या,
9. 1 : पद V

नोट-

उदाहरणार्थ—

		History of India. 3 V. V 1. Ancient period. V 2. Medieval period. V 3. Modern period.
	2119-	2121

बहुखण्डीय ग्रन्थ द्वितीय प्रकार की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में खण्डों की सूचना दी जाती है पर उपर्युक्त अनुच्छेद (Paragraph) में प्रदत्त सूचनाओं को नहीं लिखा जाता है।

बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–2 को भी बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–1 के समान पुनः निम्नलिखित चार प्रकारों में बाँटा जाता है—

1. अपूर्ण तथा अपूर्ण उपलब्ध संघात (Uncomplete and incomplete set)
2. अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplete set)
3. अपूर्ण संघात (Uncomplete set)
4. पूर्ण संघात (Complete set)

इन चारों प्रकारों की खण्डों की सूचना को बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–1 के समान ही आख्या अनुच्छेद में अंकित किया जाता है।

बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–1 एवं बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–2 संबंधी कुछ अन्य नियम निम्नांकित हैं।

नियमांक NC3* के अनुसार बहुखण्डीय भव्यों की मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में प्रदत्त क्रामक अंक में वर्गांक के बाद समावेशित अंकन (Inclusive notation) का प्रयोग करते हुए पहले प्रथम खण्ड का ग्रन्थांक व जब पद लिखने के बाद अन्तिम खण्ड का ग्रन्थांक लिखा जाता है। अपूर्ण संघात (Uncomplete set) की अवस्था में अंतिम ग्रन्थांक के बाद छोटी आड़ी रेखा खींची जाती है।

उदाहरणार्थ—

1. पूर्ण संघात	V56	N94, 1 to N94.4
2. अपूर्ण संघात	Y31	N99.q N99.3–
3. अपूर्ण उपलब्ध संघात	T3	N85.1 to N85.4
4. अपूर्ण तथा अपूर्ण उपलब्ध संघात	L:421	L2.1 to L2.3;L2.5–

नियमांक ED910 के अनुसार बहुखण्डीय ग्रन्थों की परिग्रहण संख्या को परिग्रहण अनुच्छेद में अग्रलिखित प्रकार से लिखा जाता है—

1. संघात की प्रथम संख्या
2. छोटी आड़ी रेखा, तथा
3. संघात की अन्तिम संख्या

उदाहरणार्थ—

15991 - 18999

नियमांक ED913 के अनुसार बहुखण्डीय ग्रन्थों की अक्रमिक परिग्रहण संख्याओं को निम्नलिखित प्रकार से लिखा जाता है—

उदाहरणार्थ—

18894 - 19597, 18999

सूचीकृत मुखपृष्ठ
(Catalogued Title Pages)

मुखपृष्ठ–1

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–1: पूर्ण संघात)

NEW VISTAS IN RURAL ECONOMY)

(in 5 volumes)

By

S.S. Yadav

and B. K.Gurjar

Pointer Publishers

Jaipur

1992

Other Information

Call No. X(Y31) N2.1 - N2.5

	Pages	Acc. No.	Size
Vol.I	1 - 201	15116	22cm.
Vol II	202 - 511	15117	23 cm.
Vol. III	512 - 725	15118	24.3cm.
Vol.IV	726 - 999	15551	25 cm.
Vol. V	1000 - 1423	15552	26 cm.

(It is a five volume set and all the volumes are available in the library)

नोट-

नोट-

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	X(Y31)	.44 N2.1 to N 2.5
		YADAV (SS) and GURJAR (BK). New vistas in rural economy. 5 V. 15516-15118, 15551-15552

संकेत (Tracing)

Indian Rural sociology, Economics.
Rural Sociology, Economics.
Economics...
Yadav (SS) and Gurjar (BK).
Gurjar (BK) and Yadav (SS)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–1

	INDIAN, RURAL SOCIOLOGY, ECONOMICS.	
	For document in this class and its subdivisions, see the classified part of the catalogue under the Class Number X(Y31).44	

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–2

	RURAL SOCIOLOGY, ECONOMICS.	
		For document ....
	Class Number	
		X(Y31)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–3

	ECONOMICS.	
		For document ....
	Class Number	
		X

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि–1

	YADAV (SS) and GURJAR (BK).	
		New vistas in rural economy. 5 V.
		X(Y31).44 N2.1 to N2.

लेखक वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–2

	GURJAR (BK) and YADAV (SS).	
		New vistas in rural economy. 5 V.
		X(Y31).44 N2.1 to N2.5

नोट-

टिप्पणी– 1. मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में क्रामक अंक नियमांक NC3 के अनुसार अंकित किया गया है। उपर्युक्त ग्रन्थ दो लेखकों द्वारा लिखित बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–1 का है। दोनों लेखकों के नाम को शीर्षक अनुच्छेद में नियमानुसार लिखा गया है एवं उन्हें and द्वारा जोड़ा गया है। आख्या अनुच्छेद में खण्डों की सूचना नियमांक NC13 के अनुसार तथा परिग्रहण संख्या नियमांक ED913 के अनुसार अंकित की गई है।

2. लेखक निर्देशी प्रविष्टियों के द्वितीय अनुच्छेद में आख्या के बाद खण्डों की सूचना नियमांक NC15 के अनुसार दी गई है। अन्य सभी प्रविष्टियाँ नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ–2

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार–1 : अपूर्ण उपलब्ध संघात)

NATIONAL LIBRARY
BIBLIOGRAPHICAL DIVISION
A Bibliography of Documents Relating to India in 3 volumes)

Calcutta,
National Library,
1991

Other Information

Call No.	z44aN9	N9.1 - N9.2
Acc. No	17456 - 7	
Pages	ix, 216, 217 - 530	
Size	22.8 cm.	

Note : Out of the 3 volumes, library has not acquired volume 3 as yet.

मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

	Z44aN9 N9.1 to N 9.2-	
		LIBRARY (National-) (India), BIBLIOGRAPHY (-cal Division).
		Bibliography of documents relating to India 3V [V 3 not in library]
	17456-17457	

नोट-

संकेत (Tracing)

Bibliography, Indology. Indology, Generalia. Generalia Library (National-) (India), Bibilography (-cal Division).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–1

	BIBLIOGRAPHY, INDOLOGY.	
		For document in this Class and its Subdivisions, see the Classified part of the catalogue under the
	Class Number	
		z44a

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–2

	INDOLOGY, GENERALIA.	
		For document ....
	Class Number	z44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–3

	GENERALIA.	
		For document ....
	Class Number	z

नोट-

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि— लेखक

	LIBRARY (National-) (India), BIBLIOGRAPHY (-cal Division).	
		Bibliography of documents relating of India 3V [V 3 not in library]. Z44aN9 N9.1 to N9.2

टिप्पणी— 1. यह ग्रन्थ संस्था व उसके अंग द्वारा लिखित बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार—1 अपूर्ण उपलब्ध संघात है। मुख प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद के क्रामक अंक के बाद लगाई गई आड़ी रेखा इस बात की ओर इंगित करती है कि ग्रन्थ के शेष खण्ड बनाने बाकी हैं। आख्या अनुच्छेद में खण्ड संख्या के बाद वर्गाकार कोष्ठक में पेन्सिल से V 3 not in library यह इंगित करता है कि खण्ड 3 ग्रन्थालय में उपलब्ध नहीं है। जब यह खण्ड आ जायेगा तो पेन्सिल से अंकित ग्रन्थ संख्या तथा इस सूचना को मिटा दिया जायेगा।

2. इन सूचनाओं को लेखक निर्देशी प्रविष्टि में भी इसी प्रकार लिखा जाता है।

निष्कर्ष
(Conclusion)

इस अध्याय में हमने समिश्र ग्रन्थ का अध्ययन किया और साथ में बहुखण्डीय ग्रन्थ का भी अध्ययन किया। इनके प्रकार तथा विशेषताओं का भी अध्ययन किया।

महत्त्वपूर्ण तथ्य
(Important Terms)

1. वह ग्रन्थ जिसके विभिन्न अंशों या लेखों को अलग—अलग लेखकों के द्वारा लिखा जाता है पर उसको एक ही ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित किया जाता है उसे समिश्र ग्रन्थ कहते हैं।
2. ऐसा ग्रन्थ जो निश्चित अलग—अलग भागों में या तो सम्पूर्ण हुआ हो अथवा सम्पूर्ण होने वाला हो उसे बहुखण्डीय ग्रन्थ कहते हैं।
3. बहुखण्डीय ग्रन्थ निम्न चार प्रकार के होते हैं—
    1. पूर्ण संघात
    2. अपूर्ण संघात
    3. अपूर्ण उपलब्ध संघात
    4. अपूर्ण तथा सूचना उपलब्ध संघात

अभ्यास प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न Very Short Answer Type Questions

1. समिश्र ग्रन्थ किसे कहते हैं ?
2. बहुखण्डीय ग्रन्थ से आप क्या समझते हो ?

लघु उत्तरीय प्रश्न Short Answer Type Questions

1. सामान्य समिश्र ग्रन्थों के सूचीकरण के नियम का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
2. शृंखला अन्तर्विषयी प्रविष्टि से आप क्या समझते हैं। संक्षेप में वर्णन कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न Long Answer Type Questions

1. कृत्रिम समिश्र ग्रन्थों के सूचीकरण के नियमों का सविस्तार वर्णन कीजिए।
2. बहुखण्डीय ग्रन्थ से आप क्या समझते हो तथा इनके प्रकारों का सविस्तार वर्णन कीजिए।

नोट-

नोट-

UNIT 03

सूचीकरण के नियम
Rules of Cataloguing

प्रस्तावना
(Introduction)

इस अध्याय में हम ग्रन्थमाला के बारे में अध्ययन करेंगे साथ में ग्रन्थमाला के प्रकार एवं सूचीकरण के नियम का भी गहराई से अध्ययन करेंगे। इसके अतिरिक्त सहकारी सूचीकरण नियम का भी अध्ययन करेंगे।

ग्रन्थमाला प्रकाशनों की सूची
(Cataloguing of Series Publication)

ग्रन्थमाला की परिभाषा Definition of Series

सी सी सी नियमांक FH के अन्तर्गत ग्रन्थमाला को इस प्रकार परिभाषित करते हैं—

ग्रन्थों का ऐसा समूह जो किसी ग्रन्थ का मूलभाग नहीं होता और जिसमें निम्न विशेषताएँ होती हैं—

1. प्रत्येक ग्रन्थ का एक अलग क्रमांक दिया जाता है।
2. सम्पूर्ण समूह का बोध कराने के लिए एक सामूहिक आख्या होती है, जिसे ग्रन्थमाला का नाम दिया गया है। इस नाम का प्रयोग सभी ग्रन्थों, जो उस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित होते हैं, में मुद्रित रहता है।
3. प्रत्येक ग्रन्थ का प्रायः अलग लेखक होता है।
4. प्रत्येक ग्रन्थ की अपनी स्वतन्त्र एवं अलग आख्याएँ होती हैं एवं उनकी अपनी अन्य विशेषताएँ होती हैं।
5. सामान्यतः ग्रन्थों का प्रकाशन क्रमिक रूप से एक ही प्रकाशक अथवा निकाय या व्यक्ति के द्वारा करते हैं।

ग्रन्थमाला के प्रकार एवं सूचीकरण के नियम
Types of Series and their Cataloguing Rules

ग्रन्थमाला को अग्रलिखित श्रेणियों में बाँटा जाता है—

नोट-

1. कृत्रिम ग्रन्थमाला (Pseudo Series)
2. ग्रन्थमाला की विविधिता (Multiplicity of Series)
3. सामान्य ग्रन्थमाला (Simple Series)

सामान्य ग्रन्थमाला Simple Series

यदि ग्रन्थ में मात्र एक ही ग्रन्थमाला मुद्रित हो तो उसे सामान्य ग्रन्थमाला कहते हैं। ग्रन्थमाला टिप्पणी के निम्नलिखित तीन उपविभाग होते हैं–

1. ग्रन्थमाला का क्रमांक या उसका स्थानापन्न
2. ग्रन्थमाला के सम्पादक का नाम
3. ग्रन्थमाला का नाम

ग्रन्थमाला के नाम को ग्रन्थमाला टिप्पणी में लिखते समय उसके पूर्व लगे प्रारम्भिक उपपद (Initial articles) व आदर सूचक शब्दों को नियमांक JG4 के अनुसार हटाकर लिखते हैं। इस टिप्पणी को वृत्ताकार कोष्ठक में द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ करते हुए लिखते है और प्रत्येक उपविभाग के अन्त में पूर्ण विराम (.) का प्रयोग करते हैं।

सामान्य ग्रन्थमाला बिना सम्पादक, एकल सम्पादक, दो सम्पादक एवं दो से अधिक सम्पादकों सहित होती है।

बिना क्रमांक वाली ग्रन्थमाला को मुख्य प्रविष्टि में अंकित करते समय नियमांक MF 131 के अनुसार स्थानापन्न स्वरूप प्रकाशन वर्ष एवं प्रकाशन वर्ष भी अनुपलब्ध होने पर ग्रन्थालय में ग्रन्थों की अवाप्ति के क्रम में 1, 2, 3 आदि क्रमांक प्रदान करते हैं।

एकल ग्रन्थमाला पुनः निम्नलिखित प्रकारों में बाँटा जाता है–

1. शोध प्रबन्ध ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ University of Rajasthan, thesis, 1991, 12
University of Delhi, dissertation, 1995, 9

2. भाषा ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Ranganathan lectures, 1955
The Hilbert lectures, 1957

3. नाम ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Ranganathan series in library science

4. अलंकारिक ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Advances in library series Thinkers library

5. विषय ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Advances in chemistry series Physical chemistry monograph series

6. रूप ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Everyman's reference library Children reference library

नोट-

7. प्रकाशक ग्रन्थमाला

उदाहरणार्थ Wiley Farm series McGraw-Hill series in science

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि की संरचना

Structure of series Index Entry

ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि की संरचना निम्न प्रकार है—

1. **अग्र अनुच्छेद**—अग्र अनच्छेद में प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ करते हुए ग्रन्थमाला का नाम बड़े अक्षरों (Block Letters) में लिखते हैं। ग्रन्थमाला के नाम के पूर्व लगे प्रारम्भिक उपपदों व आदर सूचक शब्दों को लिखने से पहले हटा देते हैं।
2. **द्वितीय अनुच्छेद**—द्वितीय अनुच्छेद में निम्नांकित सूचनाएँ अंकित की जाती हैं—
   (i) प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ करते हुए ग्रन्थमाला क्रमांक।
   (ii) द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ करते हुए मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक में प्रयुक्त व्यक्तिगत लेखक या लेखकों के मात्र प्रविष्टि पद तथा कृत्रिमनामधारी लेखक व समष्टि लेखक का पूरा नाम, कोलन चिन्ह (:) संक्षिप्त आख्या एवं संस्करण विवरण।
   (iii) **निर्देशांक**—द्वितीय अनुच्छेद वाली पंक्ति पर ही उचित स्थान होने पर अन्यथा अगली पंक्ति पर दाहिनी ओर पेन्सिल से अंकित किया जाता है।

ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि Editor of Series CRIE

इस प्रविष्टि के तीन अनुच्छेद इस प्रकार होते हैं—

1. **निर्देशित शीर्षक**—इस अनुच्छेद में ग्रन्थमाला का नाम बड़े अक्षरों में अंकित किया जाता है।
2. **द्वितीय अनुच्छेद**—इसमें See पद रेखांकित करते हुए अंकित किया जाता है।
3. **अग्र अनुच्छेद**—इसमें ग्रन्थमाला सम्पादक के नाम को नियमानुसार अर्थात् प्रविष्टि तत्व बड़े अक्षरों में, गौण पद वृत्ताकार कोष्ठक में सामान्य अक्षरों में तथा विवरणात्मक पर, Ed. लिखा जाता है।

ग्रन्थमाला की विविधिता Multiplicity of Series

ग्रन्थमालाओं की विविधिता के आधार पर निम्नलिखित प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है—

1. **स्वतन्त्र ग्रन्थमाला**—यदि किसी ग्रन्थ में एक से अधिक ग्रन्थमालाएँ मुद्रित हैं, एवं वे आपस में सम्बन्धित नहीं हैं तो उन्हें स्वतन्त्र ग्रन्थमाला कहते हैं। इस प्रकार की ग्रन्थमालाओं को मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में अलग वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा जाता है।
2. **आश्रित ग्रन्थमाला**—यदि किसी ग्रन्थ में एक से अधिक ग्रन्थमालाओं का उल्लेख हो, जिनमें से एक उप-ग्रन्थमाला हो जो अपनी मुख्य ग्रन्थमाला पर निर्भर करती हो, तो उसे आश्रित ग्रन्थमाला कहते हैं।

   ऐसी ग्रन्थमालाओं को टिप्पणी अनुच्छेद में एक ही वृत्ताकार कोष्ठक में लिखते एवं मुख्य ग्रन्थमाला को उप-ग्रन्थमाला से सेमीकॉलम चिन्ह (;) द्वारा अलग-अलग करते हैं।

3. **वैकल्पिक ग्रन्थमाला**—यदि किसी ग्रन्थमाला में अंकित ग्रन्थमालाओं में मध्य 'या' अथवा (or) हो तो मूल ग्रन्थमाला के बाद पर or लिखकर वैकल्पिक ग्रन्थमाला का नाम लिखते हैं।

नोट-

कृत्रिम ग्रन्थमाला प्रकार–1

ग्रन्थों का वह समूह जो सम्पुटीय ग्रन्थ नहीं होते एवं जिनमें निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं—

1. प्रत्येक ग्रन्थ का एक क्रमांक होता है।
2. मूल संस्करण के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रन्थ की पृथक एवं विशिष्ट आख्या होती है।
3. सभी ग्रन्थों का लेखक तथा संस्करण एक ही होता है।

उदाहरणार्थ—

	0142, 3M28x	N62
	3 99321	TOLSTOY (Leo). Works: Childhood, boyhood and youth. Centenary Ed: ed Tolstoy (Leo). Centenary eddied by Esther Piercy. 5).

कृत्रिम ग्रन्थमाला प्रकार–2

ग्रन्थों का ऐसा समूह जो सम्पुटीय ग्रन्थ नहीं होते हैं तथा जिनमे निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं—

1. सामान्य आख्या के साथ लेखक के नाम का प्रयोग करने से ऐसा प्रतीत होता है कि वह एक ग्रन्थमाला है।
2. प्रत्येक ग्रन्थ को क्रमांक प्रदान किया जा सकता है, अथवा उसका अपना क्रमांक होता है।
3. सामान्य भाग के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रन्थ की अपनी एक पृथक एवं विशिष्ट आख्या होती है।
4. सभी ग्रन्थों की आख्याओं का एक ऐसा भाग जिसे सामान्य आख्या के रूप में प्रयोग करते हैं।
5. सभी ग्रन्थों का एक ही लेखक होता है।

नोट-

उदाहरणार्थ—

	C5 N93	
	99322	GRIMSHELL (E) Optics. Tr by L A Woodward. (GHrimshell (E) : Text books of physics. Ed by R Tomaschek. 4).

कृत्रिम ग्रन्थमाला प्रकार–3

निम्नलिखित विशेषताओं वाले ग्रन्थों का वह समूह जिसके कई सम्पुट ग्रन्थ नहीं होते उन्हें कृत्रिम ग्रन्थमाला प्रकार–3 कहा जाता है।

(i) सभी ग्रन्थों का लेखक एक ही होता है।

(ii) सभी ग्रन्थों की एक सामान्य आख्या होती है।

(iii) सामान्य आख्या के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रन्थ की अपनी पृथक आख्या भी होती है।

(iv) प्रत्येक ग्रन्थ का एक क्रमांक भी होता है ।

(v) सामान्य आख्या का प्रयोग ग्रन्थमाला के रूप में किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ—

	V56'19	N20
	99323	OMAN (Charles) History of England from the accession of Richard II to death of Richard III (1377-01485). (Hunt (William) and Pool (Regnald), Ed: Political History of England. 4).

सहकारी सूचीकरण नियम
(Cataloguing of Uniform Titles)

मशीन के पठनीय ग्रंथ सूची पर एक जैसे शीर्षक वाले पूर्व शीर्षक AACR2 रूपों के तहत दर्ज किए गए यूनिफॉर्म टाइटल को अपडेट करने से डेटाबेस के ग्रंथसूची 'फ्लिप' में उनके AACR2 फार्म में अपडेट किए गए जब भी पूर्व–AACR2 वर्दी शीर्षक एक मान्य लिंकिंग संदर्भ के रूप में प्रकट हुआ, वर्दी शीर्षक के लिए नाम प्राधिकरण रिकॉर्ड। व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक पूर्व AACR2 वर्दी शीर्षक को अद्यतन करें जो एक संदर्भ ग्रंथ रिकॉर्ड पर दिखाई देता है और एक लिंकिंग संदर्भ द्वारा नोट कर लिया जाता है।

नोट-

जब एक नए केटलॉग किए गए आइटम को एक समान शीर्षक प्रदान करते हैं तो डेटाबेस को यह सत्यापित करने के लिए खोजें कि यह विशेष समान शीर्षक मौजूदा MARC ग्रंथ सूची के रिकॉर्ड पर वर्तमान नीति के अनुसार तैयार किया गया है। यदि रिकॉर्ड नीचे दी गई श्रेणियों में से किसी एक श्रेणी में आता है तो प्रत्येक ग्रंथ सूची रिकॉर्ड को समान शीर्षक पर वर्तमान नीति को प्रतिबिंबित नहीं करने वाले अपडेट करते हैं।

1. यदि सूचीबद्ध किए जाने वाले आइटम से संबंधित समान शीर्षक एक ही काम के लिए है तो मौजूदा ग्रंथ सूची के रिकॉर्ड को बदल दें जो 'मूल' वर्दी शीर्षक से संबंधित हैं अर्थात् भाषा भाग या अन्य उपविभागों के बिना। यदि सूचीबद्ध किए जाने वाले आइटम से संबंधित समान शीर्षक में मूल वर्दी शीर्षक का उपखंड शामिल है, तो उसी उपखंड से संबंधित ग्रंथ सूची को बदल दें।
2. यदि आइटम के केटलॉग से संबंधित समान शीर्षक सामूहिक वर्दी शीर्षक 'वर्क्स' या 'सिलेक्शन' के लिए है या इसके किसी भी उपखंड के लिए है।
3. यदि आइटम को सूचीबद्ध किया जाता है, तो एक विशेष रूप में तीन या अधिक कार्यों के संग्रह से संबंधित है, एक ही रूप में काम पर वर्तमान नीति को प्रतिबिंबित करने के लिए इस विशेष रूप से संग्रह से संबंधित सभी मौजूदा ग्रंथ सूची के रिकॉड को बदल दें।
4. शृंखला अर्थात् मुख्य प्रविष्टियों, अतिरिक्त प्रविष्टियों एवं विषय प्रविष्टियों को छोड़कर सभी एक्सेस बिन्दुओं में दिखाई देने वाले समान शीर्षकों में परिवर्तन करें।
5. वर्तमान अभ्यास के साथ समझौते में समान शीर्षक लाने के लिए 'छोटे' सुधार भी करें। उदाहरण के लिए, प्रारंभिक लेख हटायें और 'से' और' से कई भाषाओं के बीच संयोजी को बदलें।
6. मौजूदा ग्रंथ सूची रिकॉर्ड में एक समान शीर्षक को बदलते या जोड़ते समय नाम के शीर्ष भाग को उसके सही AACR रूप में दें, भले ही पूर्व AACR2 प्रपत्र से एक लिंकिंग संदर्भ नाम शीर्षक के लिए नाम प्राधिकरण रिकॉर्ड पर पता लगाया गया हो। किसी भी ग्रंथ सूची के अभिलेखों के अन्य नाम शीर्षकों को अद्यतन न करें।
7. संशोधित ग्रंथ सूची के रिकॉर्ड को प्रतिबिंबित करने के लिए मौजूदा वर्दी शीर्षक नाम प्राधिकरण रिकॉर्ड बदलें। अमान्य संदर्भों को समयोजित या हटाएँ, लेकिन केवल उन संदर्भों को जोड़े जो आइटम के लिए एक समान शीर्षक के लिए एक नाम प्राधिकरण रिकॉर्ड बनाएँ और केवल अगर मौजूदा अभ्यास के अनुसार आवश्यक हो। वैकल्पिक रूप

नोट-

से इन नाम प्राधिकरण अभिलेखों पर एक लिंकिंग संदर्भ का पता लगाते हैं यदि कोई LCRI 26 के अनुसार उचित है।

एकल कार्य या संग्रह

सार्वजनिक प्रकाशनों से संग्रह को अलग करना आवश्यक है। कम कार्यों के साथ एक ही मुख्य कार्य करें। आमतौर पर इस अंतर को बनाने के लिए मुख्य स्रोत के शब्दांकन पर भरोसा करना चाहिए जैसा कि निम्नलिखित उदाहरणों में बताया गया है–

क्रिसमस केरोल पुरानी जिज्ञासा की
दुकान और पिकविक पेपर्स
(एक संग्रह)

एडविन ड्राइ का रहस्य,
विभिन्न हाथों से कहानी के पूर्ण होने के सासथ
(डिफेंस के एक संस्करण पूरक ग्रंथों के साथ)

प्रयोज्यता

एक समान शीर्षक का उपयाग करें जब तक कि पूर्ण वर्दी शीर्षक जो असाइन नहीं किया जाएगा वह बिल्कुल आइटम के शीर्षक के समान है।

अपवाद

1. एक समान शीर्षक का उपयोग न करें जब एक मात्र अंतर ग्रंथ सूची शीर्षक में प्रारंभिक लेख की उपस्थिति उचित हो।
2. कुछ विशिष्ट अनाम क्लासिक्स के लिए जो एक जैसे शीर्षक के साथ दर्ज किए गए हैं, मुख्य प्रविष्टि शीर्षक और जो कई संस्करणों में विभिन्न भाषाओं और विभिन्न शीर्षकों के तहत प्रकाशित हुए हैं, सभी संस्करणों के लिए एक समान शीर्षक का उपयोग करें। इसमें मूल भाषा में संस्करण शामिल होते हैं जब शीर्षक उचित समान होता है जो निर्दिष्ट शीर्षक होता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

इस अध्याय में हमने ग्रन्थमाला के बारे में अध्ययन किया साथ में इसके प्रकार एवं सूचीकरण के नियम का भी गहराई से अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त सहकारी सूचीकरण नियम का भी अध्ययन किया।

महत्त्वपूर्ण तथ्य
(Important terms)

ग्रन्थों का ऐसा समूह जो किसी ग्रंथ का मूलभाग नहीं होता वरन् उसके अलग–अलग भाग होते हैं, ग्रन्थमाला कहते हैं।

ग्रन्थमाला को तीन भागों में बाँट सकते हैं—

1. सामान्य ग्रन्थमाला
2. ग्रन्थमाला की विविधिता
3. कृत्रिम ग्रन्थमाला

मशीन के पठनीय ग्रंथ सूची पर एक जैसे शीर्षक वाले पूर्व शीर्षक रूपों के तहत दर्ज किए गए यूनिफॉर्म टाइटल को अपडेट करा जाता है।

नोट-

अभ्यास प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न Very Short Answer Type Questions

1. ग्रंथमाला किसे कहते हैं?
2. ग्रथमाला कितने प्रकार की होती है?

लघु उत्तरीय प्रश्न Short Type Answer Questions

1. स्वतंत्र ग्रंथमाला पर संक्षिप्त नोट लिखिए?
2. सामान्य ग्रंथमाला पर संक्षिप्त नोट लिखिए?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न Long Answer Type Questions

1. विविधता के आधार पर ग्रंथमाला के प्रकारों का सविस्तार वर्णन कीजिए।
2. सहकारी सूचीकरण नियम का सविस्तार वर्णन कीजिए।

नोट-

UNIT 04

कॉरपोरेट लेखत्व के निर्माण की कैटलॉगिंग

Cataloguing of Works of Corporate Authorship

प्रस्तावना
(Introduction)

इस अध्याय में हम समष्टि निकाय के विषय में गहराई से अध्ययन करेंगे साथ में समष्टि लेखक के प्रकारों का भी गहराई से अध्ययन करेंगे। इसके अलावा हम सूचीकृत मुखपृष्ठ का भी अध्ययन करेंगे।

समष्टि निकाय व समष्टि लेखकत्व की परिभाषा
(Definition of Corporate Body and Corporate Author)

ए.ए.सी.आर.–2 में समष्टि निकाय को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया गया है–

एक संगठन या व्यक्तियों का वह समूह, जो एक विशेष नाम से जाना जाता है तथा एक सत्ता (Entity) के रूप में कार्य करता है अथवा कार्य कर सकता है। समष्टि निकायों की श्रेणियों के उदाहरण हैं–संघ, संस्था, व्यापारिक फर्म लाभ निरपेक्ष उद्यम, शासन शासकीय संस्थाएँ, धार्मिक संस्थाएँ, स्थानीय चर्च एवं सम्मेलन आदि।

ए.ए.सी.आर.–1 के अनुसार, जब किसी ग्रन्थ के बौद्धिक या कलात्मक अन्तर्वस्तु की सृष्टि के लिए समष्टि निकाय पूर्णरूपेण उत्तरदायी होती है तो उसे समष्टि लेखक कहते हैं।

रंगनाथन ने सी सी सी नियमांक के FC2 अन्तर्गत समष्टि निकाय को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है–

अर्थ 1 : सामूहिक रूप से प्रायः संयुक्त अथवा संगठित अथवा अनौपचारिक रूप से किसी सामान्य उद्देश्य अथवा किसी सामान्य कार्य के लिए यथा शासकीय, व्यावसायिक, औद्योगिक या सेवा या राजनीतिक कार्य अथवा कोई अन्य कार्य या विचार विनिमय के लिये अथवा सामूहिक विचार अभिव्यक्ति या कथन के लिए मिलने वाले व्यक्ति।

नोट-

उदाहरणार्थ राजस्थान सरकार, चेम्बर ऑफ कामर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय भारतीय ग्रन्थालय सम्मेलन आदि।

अर्थ 2 : सामूहिक रूप से—प्रायः संयुक्त अथवा संगठित अथवा अनौपचारिक रूप से किसी सामान्य उद्देश्य अथवा किसी सामान्य कार्य के लिए यथा शासकीय व्यावसायिक औद्योगिक या सेवा या राजनैतिक कार्य अथवा कोई अन्य कार्य या विचार विनिमय के लिए अथवा, सामूहिक विचार अभिव्यक्ति या कथन के लिए आपस में मिलने वाले समष्टि निकाय। **उदाहरणार्थ** इफ्ला (IFLA) संयुक्त राष्ट्र संघ; भारतीय विश्वविद्यालय संघ आदि।

रंगनाथन ने उपर्युक्त परिभाषा में समष्टि निकाय को उसके कार्यों के आधार पर परिभाषित किया है। अर्थ 1 में वर्णित कार्यों को करने वाले व्यक्तियों के समूह को था अर्थ 2 में कार्यों को करने वाले समष्टि निकायों के संघों को भी समष्टि निकाय बताया गया है।

रंगनाथन ने समष्टि लेखक को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है—

जब ग्रन्थ में निहित विचारों तथा अभिव्यक्ति का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व किसी निष्प्रय अथवा उसके किसी अंग पर हो और किसी व्यक्ति या व्यक्तियों पर निजी रूप से नहीं हो, जो उसके अंग हैं अथवा इसमें पदासीन हैं अथवा अन्य किसी प्रकार से उससे सम्बन्धित हैं, उसे समष्टि लेखक कहते हैं।

समष्टि लेखक के प्रकार (Types of Corporate)

रंगनाथन ने समष्टि लेखक को तीन प्रकार से बाँटा है—

1. शासन (Governmnet)
2. संस्था (Institution)
3. सम्मेलन (Conference)

शासन Government

शासन की परिभाषा (Definition of Government)—ऐसे ग्रंथ, जिनमें अभिव्यक्ति विचारों के लिए अथवा उसका कोई अंग उत्तरदायी हो, को शासकीय प्रकाशन कहा जाता है। शासकीय प्रकाशन कभी–कभी तो विक्रय के लिए उपलब्ध होते हैं तथा कभी–कभी सीमित वितरण (Limited circulation) के लिए निःशुल्क भी उपलब्ध होते हैं। शासकीय प्रकाशनों के मुख्य लक्ष्य निम्नलिखित हैं—

1. शासकीय एजेन्सियों द्वारा भौतिक रूप से अभिप्रेत कोई भी प्रकाशन जिसको शासकीय प्राधिकार द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो तथा उसके प्रकाशन विवरण से अंकित होकर निर्गमित हो।
2. ऐसे सभी प्रकाशन जिनमें निहित विचार शासकीय एजेन्सियों के प्रयासों का होता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि उनका भौतिक प्रस्तुतीकरण शासकीय एजेन्सियों द्वारा ही किया जाये।

ए.ए.सी.आर.–2 के अनुसार, शासन शब्द से समष्टि निकायों–कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका, एक निश्चित भू–भाग पर आधिपत्य होता है अर्थात् सम्पूर्णता का बोध होता है।

रंगनाथन ने सी सी सी नियमांक FC22 के अन्तर्गत शासन को अग्र प्रकार परिभाषित किया है—

नोट-

अर्थ 1 : शासन द्वारा प्रदत्त अधिकारों के अन्तर्गत एक निश्चित भूभाग पर एवं निश्चित सीमा पर स्वायत्तता प्राप्त स्थानीय सार्वजनिक प्राधिकारी, जो किसी निश्चित स्थानीय सार्वजनिक क्षेत्र में सेवाओं का नियमन, उन्नयन तथा/अन्य सेवाओं का प्रावधान करता है।

अर्थ 2 : एक निश्चित भूभाग पर समष्टि निकाय का पूर्ण या सीमित संप्रभुता का होना। साधारणतया इसके कार्यकारी विधायी, न्यायिक तथा प्रशासनिक कार्य होते हैं इसके अन्य कार्यों में सुरक्षा, कराधान, वाणिज्य, जन–यातायात, संचार आदि हैं, जो संप्रभुता के आधार पर सीमित होते रहते हैं।

शासन के अंग Organs of Government

सीसीसी में शासन के अंगों को निम्न दो प्रकारों में बाँटा जा सकता है–1. अस्थाई अंग, 2. स्थाई अंग।

स्थाई अंग को पुनः तीन प्रकारों से बाँटा जा सकता है–1. शासकीय अंग, 2. शासन प्रमुख, 3. वैधानिक अंग।

वैधानिक अंग को पुनः तीन भागों में बाँटा गया है–1. न्यायपालिका, 2. विधायिका, 3. कार्यपालिका।

शासन व उसके अंगों का उपकल्पन

Rendering of Government and its Organs

पहले शासन के नाम को बड़े अक्षरों (Capital Letters) में लिखा जाता है, फिर कोमा लगाकर शासन के अंगों को पुनः स्मरणमान के उपसूत्र (Canon of Recall Value) के अनुसार लिखा जाता है।

वैधानिक अंग

शासन के वैधानिक अंगों के उपकल्पन में द्वितीय शीर्षक के रूप में अंग का वह नाम जो ग्रन्थालय की भाषा में प्रचलित हो लिखा जाता है। **उदाहरणार्थ–**

1. INDIA, COUNCIL OF MINISTERS
2. RAJASTHAN, VIDHAN SABHA
3. INDIA, LOK SABHA
4. UTTER PRADESH, HIGH COURT

शासन प्रमुख

शासन प्रमुख के नाम के उपकल्पन में उस पद पर आसीन व्यक्ति का नाम द्वितीय शीर्षक के रूप में व्यष्टिकृत पद के रूप में दिया जाता है। **उदाहरणार्थ–**

1. RAJASTHAN GOVERNOR (Chenna Reddy)
2. INDIA, PRESIDENT (Rajendra Prasad)
3. INDIA, PRIME MINISTER (Rajeev Gandhi)

प्रशासकीय अंग

प्रशासकीय अंग के नाम को द्वितीय शीर्षक के रूप में पुनः स्मरण मान के उपसूत्र के अनुसार लिखा जाता है।

नोट-

उदाहरणार्थ—

1. GUJRAT, EDUCATION (Ministry of -)
2. INDIAN, AGRICULTURE (Ministry of -)

उपशीर्षक का अन्तर्वेशन Interpolation of Sub Headings

नियमांक JC66 यदि प्रशासनिक विभाग शासन का द्वितीय या अन्य अंग हो तथा उसका नाम व्यष्टिकारक न हो और शीर्षक निर्माण में किसी प्रकार की समरूपता पूर्व श्रेणी (Earlier remove) के अंग जोड़े बिना समाप्त न होती हो, तो पूर्ण शासन के नाम व प्रशासनिक विभाग के मध्य ऐसे नाम उपशीर्षक के रूप में अन्तर्वेशित करने चाहिये।

इस प्रकार के कम–से–कम उपशीर्षक अन्तर्वेशित करने चाहिए। यदि उनकी संख्या दो या अधिक हो तो उन्हें अवरोही क्रमानुसार (Decending hierarchical sequence) अन्तर्वेशित करना चाहिए, जैसे—Department of Education, Ministry of Education, Government of Maharashtra का उपकल्पन निम्नलिखित प्रकार से होगा—

MAHARASHTRA, EDUCATION (Department -).

उपर्युक्त उदाहरण में Ministry of Education को अन्तर्वेशित करने की आवश्यकता नहीं है।

इसी प्रकार Director of Statistics, Ministry of Agriculture, Governmnet of Rajasthan को निम्नलिखित प्रकार से उपकल्पित किया जायेगा—

RAJASTHAN, AGRICULTURE (Minstry of -), STATISTICS (Director of -)

उपर्युक्त उदाहरण में Ministry of Agriculture अन्तर्वेशित करना अनिवार्य है।

अस्थाई अंग Temporary Organ

शासन द्वारा समय–समय पर विशेष कार्य व निश्चित अवधि हेतु आयोग (Commission), समिति (Committee), आदि स्थापित किए जाते हैं। समय एवं कार्य की समाप्ति पर यह आयोग, समिति आदि अपना प्रतिवेदन शासन को प्रस्तुत कर भंग हो जाते हैं। ऐसे आयोग व समिति के प्रतिवेदनों को सूचीकृत करने के लिए नियमांक JC7 व उसके उपखण्डों का प्रावधान है।

नियमांक JC7 : शासन के अस्थाई अंग के नाम के प्रविष्टि पद का उपकल्पन नियमांक व उसके उपखण्डों के अनुसार होगा।

नियमांक JC71 : शासन के अस्थाई अंग की अवस्था में उसे स्थापना वर्ष का प्रयोग व्यष्टिकृत पद के रूप में किया जायेगा।

नियमांक JC72 : तदर्थ आयोग, समिति आदि की अवस्था में उसके अध्यक्ष का नाम वृत्ताकार कोष्ठक में व्यष्टिकृत पद के बाद निम्नलिखित प्रकार से जोड़ा जायेगा—

1. Chairman पद
2. कोलन (:)
3. सामान्यक्रम में अध्यक्ष के नाम के शब्द

उदाहरणार्थ—

1. INDIA, LIBRARY (Advisory Committee for - ies) (1956) (Chairman : K P Sinha)
2. RAJASTHAN, Pay (Commission) (1968) (Chairman : J S Ranwat).

खण्ड-8
कॉरपोरेट लेखत्व के निर्माण की कैटलॉगिंग

नोट-

सूचीकृत मुखपृष्ठ (Catalogued Titles)

मुखपृष्ठ–1

(शासन का वैधानिक अंग)

NATIONAL HEALTH POLICY

LOK SABHA
GOVERNMENT OF INDIA
LOKSABHA SECRETARIAT
NEW DELHI
1985

Other Information

Call No. L:54.44 N 85
Acc. No. 32251
Pages in, 321 P.
Size 22 × 14 cm.

मुख्य प्रविष्टि

	L: 54.44	N 85
		INDIAN LOK SABHA. National Health Policy.
	32251	

संकेत (Traching)

	India, Prevention of diseases in gernal, Medicine. Prevention of diseases in general, Medicine. Public Health and Hygiene, Medicine. Medicine India, Lok Sabha.

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–1.

INDIA, PREVENTION OF DESEASES IN GENERAL, MEDICINE.

For documents in this class and its Subdivisions, see the classified part of the catalogue under the class Number

L:54.44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–2.

PREVENTION OF DESEASES IN GENERAL, MEDICINE.

For documents...

Class Number L:54

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–3.

PUBLIC HEALTH AND HYGINE, MEDICINE.

For documents...

Class Number L:5

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–4.

MEDICINE.

For documents...

Class Number

L

नोट-

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि–लेखक

	INDIA, LOK SABHA.			
		National Health Policy.	L54:44	N85

टिप्पणी– 1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का उपकल्पन वैधानिक अंग के उपकल्पन के नियम के अनुसार किया गया है।

2. इतर प्रविष्टियाँ–वर्ग निर्देशों एवं लेखक निर्देशी प्रविष्टियाँ नियमानुसार बनाई गई है।

मुखपृष्ठ–2

(शासन का वैधानिक अंग एवं दो उपअंग)

UNITED STATES, CONGRESS,
JOINT ECONOMIC COMMITTEE
SUBCOMMITTEE ON FISCAL POLICY

The Federal Budget, Inflation and
Full Emplomemt
WASHINGTON,
U.S. Government Printing Office
1970

Other Information
Call No. X71:9915.73 N70
Acc. No. 15973

Size 21.5 cm.

मुख्य प्रविष्टि

	X71:9915.73 N70	
		UNITED STATES, CONGRESS, FISCAL POLICY
	(Subcommittee on -)	
	15973	

संकेत (Traching)

United states, full employment, Labour market. Full employment, Labour market. Labour market, personnel management, personal management, Budget. Budget, public finance, Public finance, Economics. Economics. United States, Congress, Fiscal Policy (Subocomittee on -). Labour problems.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–1.

	UNITED STATES, FULL EMPLOYMENT, LABOUR MARKET.	
	For documents in this class and its Subdivisions, see the classified part of the catalogue under the class Number x71.9915.73	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–2.

	FULL	EMPLOYMENT, LABOUR MARKET.
	Class	For documents... Number x71.991

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–3.

	LABOUR MARKET, PRESONNEL MANAGEMENT	
	Class	For documents... Number x71.9

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–4.

	PERSONNEL MANAGEMENT, BUDGET.	
	Class	For documents... Number x71:9

नोट:

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–5

	BUDGET, PUBLIC FINANCE.	
		For documents..
	Class Number	x71

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–6

	PUBLIC FINANCE, ECONOMICS.	
		For documents..
	Class Number	x7

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–7

	ECONOMICS.	
		For documents..
	Class Number	
		x

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि–लेखक

	UNITED STATES, CONGRESS, FISCAL POLICY	
	subcommittee on-)	
		Federal budget, inflation and full employment.
		X71:9915.73 N70

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि–वैकल्पिक नाम

	LABOUR PROBLEMS.	
		See PERSONNEL MANAGEMENT

नोट-

टिप्पणियाँ–1. मुखपृष्ठ पर वैधानिक अंग के साथ–साथ उसके दो उपअंग भी दिये गये हैं। मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में वैधानिक अंग के बाद दूसरे उपअंग दी नियमांक JC66 के अनुसार अंकित किया गया है।

2. अन्य सभी इतर प्रविष्टियाँ नियमानुसार बनाई गई हैं।

3. एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि विषय के वैकल्पिक नाम के अन्तर्गत बनाई गई है।

मुखपृष्ठ–3

(शासन प्रमुख)

WE ACCEPT CHINA'S CHALLENGE
Speech in the Lok Sabha on
India's Resolve to drive out Aggressor
By
Pandit Jawaharlal Nehru
Prime Minister of India

Publications Division
Ministry of Information and Broadcasting
New Delhi
1961

Other Information

Call No. V44:1941,(zG)N7' K1
Acc. No. 55554
Pages xi, 244
Size 22.8 cm.

नोट-

मुख्य प्रविष्टि

	V44:1941, (zG)'N7 K1	
		INDIA, PRIME MINISTER (Jawaharlal Nehru). We accept China's challenge: Sabha on India's resolve to drive out the aggressor.
	55554	

संकेत (Traching)

Aggression, China, Foreign policy, India.
China, Foreign policy, India.
Foreign policy, India. India, History.
India, prime Minister (Jawaharlal Nehru)
Nehru (Jawaharlal).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–1

AGGRESSION, CHINA, FOREIGN POLICY, INDIA

For documents in this class and its Subdivisions, see the classified part of the catalogue under the Class Number

V44:1941,(zG)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–2

CHINA FOREIGN POLICY, INDIA

For documents..

Class Number V44:1941

नोट-

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–3

	FOREIGN POLICY, INDIA	
	Class	For documents.. Number V44:19

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–4

	INDIA, HISTORY.	
	Class	For documents.. Number V44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि–5

	HISTORY.	
	Class	For documents.. Number V

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि–लेखक

	INDIA, PRIME MINISTER (Jawaharlal Nehru).	
		We accept China's Challenge. V44:1941, (zG)'N7 K1

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि–वैकल्पिक नाम

	NEHRU (Jawaharlal).	
		<u>See</u> INDIA, PRIME MINISTER (Jawaharlal Nehru).

टिप्पणियाँ—1. ग्रन्थ का लेखक शासन प्रमुख होने के कारण मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में शासन प्रमुख के नाम का उपकल्पन नियमानुसार किया गया।

2. अन्य सभी इतर प्रविष्टियाँ नियमानुसार बनाई गई हैं।

3. ग्रन्थ में लेखक के नाम के स्थान पर Pandit Lal Nehru लिखा होने के कारण पाठकों की अभिगम पूर्ति हेतु एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।

निष्कर्ष
(Conclusion)

इस अध्ययन में हमने समष्टि निकाय का गहराई से अध्ययन किया साथ में समष्टि लेखक के प्रकारों का भी गहराई से अध्ययन किया।

महत्त्वपूर्ण तथ्य
(Important Terms)

1. समष्टि निकाय एक संगठन या व्यक्तियों का वह समूह है जो विशेष नाम से जाना जाता है तथा एक सत्ता के रूप में कार्य करता है।
2. समष्टि लेखक तीन प्रकार के होते हैं—(i) शासन, (ii) संस्था, (iii) सम्मेलन
3. ऐसा ग्रंथ जिनमें अभिव्यक्ति विचारों के लिए अथवा उसका कोई अंग उत्तरदायी हो, उसको शासकीय प्रकाशन कहते हैं।
4. शासन के वैधानिक अंग को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं—(i) कार्यपालिका, (ii) विधायिका, (iii) न्यायपालिका

अभ्यास प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न Very Short Answer Type Questions

1. समष्टि निकाय को परिभाषित कीजिए।
2. शासन को परिभाषित कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न Short Answer Type Questions

1. समष्टि लेखक कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
2. शासन व उसके अंगों के उपकल्पन का संक्षेप में वर्णन कीजिए?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न Long Answer Type Questions

1. समष्टि लेखकत्व को परिभाषित करते हुए उसके प्रकारों का सविस्तार वर्णन कीजिए।